लेखक श्री केदार नाथ चौधरीक दूटा पुस्तक *अबारा नहितन* तथा *चमेलीरानी* पढ़लौं। एक अद्‌भुत अनुभव आ आनन्द प्राप्त भेल। हास्य सँ भरपूर, हृदयस्पर्शी आ स्निग्ध भावनाक एकटा निश्छल एवं अक्षुण्ण स्रोत हिनकर लेखनी सँ बहैत छन्हि, जे हमरा सन 'नन-लिटरेरी' व्यक्तियो कें कनेक समयक वास्ते आह्लादित कऽ दैत छैक। केदार बाबू एकटा विशिष्ट व्यक्तित्वक परिचारक छथि। बिना कोनो लाम-झामक साहित्यक रचना अपन आन्तरिक प्रसन्नता एवं परिपूर्णताक अन्वेषण हेतु करैत छथि। आओर जखन हुनक रचनात्मक भावना प्रवाहित होएत छन्हि तऽ पाठक ओकर पूर्ण आनन्द लैत छथि। हमर शुभकामना जे ईश्वर हिनका स्वस्थ आओर प्रसन्न राखथु!

मानस बिहारी वर्मा
जुलाई 28, 2018

पद्‌मश्री डॉ. मानस बिहारी वर्मा
पूर्व प्रोग्राम डायरेक्टर, एल.सी.ए. 'तेजस'

साहित्यकार केदार नाथ चौधरी ने मैथिली साहित्यिक क्षितिज को एक नया आयाम दिया है। इनकी पुरस्कृत पुस्तकें *अबारा नहितन, चमेलीरानी, करार* आदि अपने मर्मस्पर्शी लेखन एवं सरस व हृदयग्राही भाषा-शैली के कारण मैथिली भाषा समाज में पर्याप्त प्रशंसित और चर्चित रही हैं।

अरविन्द मोहन
वरिष्ठ पत्रकार-सह-लेखक

अबारा नहितन से मैथिली साहित्य-जगत में हलचल पैदा करने वाले शलाका पुरुष केदार नाथ चौधरी ने गैर-मैथिलीभाषियों को भी मैथिली पढ़ने हेतु विवश कर दिया। ताम-झाम, आडंबर आदि से दूर इनकी भाषा आम जनों के भीतर तक उतर जाती है।

सुजीत कुमार झा
डिप्टी एडिटर, आजतक



इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली



ISBN 9788189450540
मूल्य : 150/-

अयना
केदार नाथ चौधरी



अयना

केदार नाथ चौधरी

अयना

अयना

(मैथिली उपन्यास)

केदार नाथ चौधरी



इंडिका इन्फोमीडिया

जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

ISBN : 978-81-89450-54-0

अयना

रचनाकार : केदार नाथ चौधरी

संपर्क : हिडेन कॉटेज
मोहल्ला—बंगाली टोला, पत्रालय : लहेरियासराय
दरभंगा—846 001
मोबा. : 93349 30715



प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
डब्ल्यू.जेड. 322, जेल रोड, नांगल राया, नई दिल्ली—110046
मोबा. : 93509 51555; ई-मेल : indicainfo@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : **₹150**

आवरण चित्र
केदार नाथ चौधरी

मुद्रक
आर. प्रिंट हाउस, हरिनगर, नई दिल्ली—110064

Aina: A Book of Maithili Fiction by Kedar Nath Choudhary Price: ₹ 150/-

समर्पण

मैथिली भाषाक अनेको पाठक जनिका मैथिली भाषा सँ सिनेह छन्हि, मैथिली भाषा मे रचित पुस्तक कें पढ़' चाहैत छथि मुदा मैथिली भाषाक पुस्तक उपलब्ध नहि रहलाक कारणे तकलीफ मे छथि, तनिका सब कें समर्पित

हमर कहब अछि

समय परिवर्त्तनशील छैक। समयक संग स्वाभाविक छैक जे लोकक व्यथा-कथा सेहो बढ़लैक। लेखक एहि विषय कें आधार बना उपन्यास लिखलनिहें। कथा, कविता, आलोचना, निबंध... हिनका कोनो विधा मे मन नहि रमैत छनि, जँ लिखता त' मात्र उपन्यासे। आइ धरि ई छओ गोट उपन्यास लिखने छथि आ सब उपरा-उपरी अछि। हमरा आश्चर्य होइछ हिनक क्षमता-बुद्धिमत्ता देखि। वास्तव मे जँ ई विदेश नहि गेल रहितथि, स्वदेश मे रहितथि त' पता नहि हिनक तुलना कोनो महान साहित्यकारक संग होइत। 2004 ई. मे हिनक पहिल उपन्यास *चमेलीरानी* आयल आ तकर बादे सँ *करार, माहुर, हीना* आ *अबारा नतिन*। एहि उपन्यास सभक बिक्री देखि ई लिखलनि *अयना*। अयना एक एहन माध्यम अछि जाहि मे लोक अपन मुह देखैछ आ स्वाभाविक छैक जे कात-करोट सँ देखनिहारोक छवि ओहि मे आबि जाइक। एहने दू गोट पात्र थिक—मोहना आ ओकर प्राणों सँ प्रिय बहीन मालती—जकर गंतव्य टीसन दरिभंगा मे कोनो पता नहि छैक। मोहना मुइल पड़ल अछि, लोक सब ओकरा घेरने छैक। ककरो पता नहि छैक जे मोहनाक मृत्यु केना भेलैक, मात्र लेखक कें एहि बातक आभास छनि।

मुदा खीसा एतहि शेष नहि होइछ। एहि कथाक बीच मे मारिते-रास कथा आयल गेल। यायावरी करैत अपाहिज क्लब सँ घुरैतकाल देखल गेल ओस्ताद कें ढोल-झालिक संग एकटा जुलूस केर नेतृत्व क' रहल छल। घर गेला पर ओहि मोहना कें देखल जे पत्नी बेस यत्न सँ भोजन करा रहल छथिन आ ओ अपन बीतल दस वर्षक कथा सुना रहल छनि। चरणीक नाम सुनितहि देवचन्द्र बताह जकाँ भनभनाइत चल गेलाह।

मोहना कहलक जे अहाँ चिन्ता जुनि करी हम दिल्लीक आरक्षित टीकस आनि देब। चलू एखन डेरा पहुँचा दैत छी।... लेखक कें आब दिल्ली सँ घुरती यात्रा छन्हि। ओ सातुवला सँ गप करिते छलाह तावत केम्हरो सँ मोहना अपन बहीन मालतीक संग आबि ओकरा सँ गप करय लागल। मोहना कें देखि लगैत छल जे ओ बड़ चिन्तित अछि। जाइ काज लेल ओ गेल छलाह से सफल रहलनि। संयोग सँ ओत' एकटा मैथिलीभाषी भेटि गेलनि जे हिनका प्रचूर मदति केलकनि आ ई अपन गामक रास्ता मे छलाह।... मोहना अपन बहीन के हिनके डिब्बा मे रखने छल, मुदा से बात हिनका सँ अज्ञात छल। दरिभंगा उतरि ई देखलनि जे बहुत रास लोक एक ठाम जमा भेल अछि एकटा अर्द्धमृत लहास कें घेरने। ई लग जा देखैत छथि, मोहना कें चीन्है मे हिनका धोखा नहि भेलनि। ई सोचैत छथि वस्तुतः मनुष्यक बस मे किछु नहि छैक, ओ त' एक तृण जकाँ धार मे बहबाक लेल विवश अछि, अभिशप्त अछि। किन्तु मालती कतय गेल, ओकरा की भेलैक, ओकर पता-ठेकान के कहत?

इएह छथि केदार नाथ चौधरी। मैथिलीक दुर्भाग्य जे एहन-एहन लेखक ओकरा नहि भेटलैक। भेटितैक त' आर कते विलक्षण ग्रंथ ओकर भंडार मे भरल रहितैक।

–रामलोचन ठाकुर
2 एम., चिराग अपार्टमेंट
4, इटालगाछा रोड, कोलकाता–700 028

एक

मूर्खक गोत्र-मूल बहुत किस्मक भ' सकैए। मुदा सभसँ चिन्हार मूर्ख ओ होइए जे अपना कें सभसँ अधिक काबिल मानैए। नेनाबला अवस्था मे प्रचुर सिनेह भेटल। पैघ भेलहुँ त' सही शिक्षा ग्रहण करक उचित अवसर प्राप्त भेल। जिनगीक गाड़ी घिचैक लेल चाकरी सेहो मनलग्गुए छल। कोनो तरहक शिकायत नहि, हँसी-खुशी सँ जीवन आगू बढ़ैत रहल। तखन आयल रिटायरमेन्टक दिन। तों आब जीवनक अन्तिम पयदान पर पहुँच गेलँए। तोहर आब कोन काज। काल्हि सँ ऑफिस नहि अबिहें। पेंशन, ग्रेचूटी आ आर तरहक सभटा कागत तोरा डाक सँ पठा देल जेतौ।

अवकाश प्राप्त करक माने अपन हिस्साक जीवन जीबि चुकलहुँ। आबक जीवन मानि लिअ एक्सटेंशन अर्थात् फाउ-दाउबला भेल। किछु चाही तकर प्रलोभन नहि। अभिलाषा विरामक स्थिति मे। निवास अपन निजक मकान मे। खेबा-पिबा लेल समुचित आमदनीक जोगार। धिया-पूता आन-आन शहर मे अपन-अपन काज मे फिट। आब जीबैक कोनो उद्देश्य नहि, जीबाक मात्र एक तरहक बहाना रहि गेल छल। मुदा से बात हमरा पचि नहि रहल छल। उद्देश्य कोना नहि? जाबे तक धरती सँ प्रस्थान नहि क' चुकलहुँहें एक तरहक पिआस त' कायम अछिए। जीबै लेल कोनो बहाना त' ताकहि पड़त ने। हम अपन मोन कें सकारात्मक लयमे आनि काबिलियतक तराजू पर तौलब आरम्भ केलहुँ।

एहने मनोदशा मे जखन हम अपन बुद्धि कें खखोरि रहल छलहुँ तखन हमर ध्यान अपन मातृभाषा मैथिली दिस गेल रहए। मैथिली भाषा मे एक तरहक करिश्माक जरूरत छैक। जाहि सुन्दरता मे मादकता नहि होअय, जाहि फूल मे सुगंधि नहि होअय, जाहि वियोग मे हृदय-विदारक चीत्कार नहि होअय एवं जाहि कथा मे आगू की भेलै तकर प्रबल

जिज्ञासा नहि होअय, तकर प्रशंसा किएक कियो करत? कियो नहि करत। चीर-हरण एखनो होइत छैक, मुदा कृष्ण निपत्ता छथि। आब त' आजुक युगक आ एकर बात-व्यवहारक कथा लिखल जेबाक चाही ने। लीख सँ हटि क' मैथिली भाषा मे कथा लिखल जाए, गरदनि मे फँसल फँसरी कें हटा एकरा स्वच्छन्द विचरण करक लेल मार्ग प्रस्तुत कएल जाए तकर प्रयोजन बुझना गेल रहए। कुरथी दालिक स्थान पर चिकेन-सूपक अनिवार्यता कें स्वीकार करैत हम अपना मातृभाषा मे एकटा उपन्यासक रचना केलहुँ। उपन्यासक रचना की केलहुँ, मूर्खक पाँति मे ठाढ़ भ' गेलहुँ।

उपन्यास कें जे पढ़लनि एवं जे नहिओं पढ़लनि अपन-अपन मंतव्य देलनि—आह! अपनेक उपन्यास कमाल अछि। भाषाक शैली त' मनमोहक अछिए, बूझि लिअ अपनेक लेखनी मैथिली भाषाक संजीवनी बनि एकरा मे प्राण-वायुक संचार करत। अपनेक सदृश कालजयी लेखक कहिओ काल धरती पर अवतरित होइत छथि।

मोन नहिए, मुदा आरो बहुत तरहक प्रशंसा। हमर दिमागक टेमी लेसा गेल। ओकर ज्योति एतेक ने प्रखर भेल जे दिमागक असलीका सोचैक यंत्र फ्यूज क' गेल। हमर पयर धरती सँ उपर उठि गेल। हम उधिआय लगलहुँ। अपना कें उच्च कोटिक लेखक मानैत-मानैत कखनहुँ काल कीनल तरकारीक झोड़ा दोकाने पर बिसरि डेरा चलि अबैत छलहुँ। एकबेर त' मधुबनी जयबा काल सकरीए मे ट्रेन सँ उतरि गेल रही। असगर मे बड़बड़ैनीबला रोग सेहो गसिया लेने रहे। अनकर मोजर नहि, मुदा पत्नी हमर दशा के तजबीज करैत चेतौलनि-एहने लोक कें लोकसभ सनकल कहैत छैक।

हम साकांक्ष भ' गेल रही। पत्नीक चेताबनी बुझि लिअ कनपट्टी पर थापड़ बनि बजरल रहए। बाउ रे बाउ! सम्हरि जो, बतहपनी कें छोड़! मोन कें परतारैत-चुचकारैत बड़ कठिने अहंकारक बत्ती कें मिझौने रही। पछिला जीवन मे कइएकटा मोड़ आयल रहए। जे मार्ग भेटल छल ओहि पर चलैत रहलहुँ। कहिओ कोनो बातक अफसोच नहि भेल रहए। प्रेम आ घृणा, तीत आ मीठ, सभ तरहक भावक बीच जिनगी कें इच्छा भरि जीबैत रहलहुँ। मुदा उपन्यास लिखि चक्रव्यूह में फँसि गेलहुँ। नव तरहक काज, पहिलुका कोनो अनुभवे नहि, मैथिली भाषाक अलग तरहक

संसार। हम नीक जकाँ अपन कएल कृत्य मे ओझरा गेलहुँ।

मैथिली भाषा मे लिखल गेल पुस्तकक समस्या। कविता होअय अथवा कथा मे रचल पोथी होअय, एकर ने पाठक छैक आ ने ग्राहक। तकला पर कखनहुँकाल पाठक भेटताह। जेना कि हुनकर लिखल पोथी अहाँ प्रशंसा क' दिऔन त' ओहो अहाँक पोथीक प्रशंसा क' देताह। तोहर बेटा पढ़ै मे बड़ तेज, त' तोहर बेटी देखै मे बड़ सुन्नरि। मुदा से त' पाठकक समस्याक समाधान नहि भेलैक। मिथिलाक विशाल जनसंख्या जखन पोथी किनता, पढ़ता, तखन ने पाठकक समस्याक निदान हेतैक। सम्प्रति नव छपल पोथीक की दशा होइत छैक तकरा पर विहंगम दृष्टि देब आवश्यक भ' गेल रहए।

पुस्तक छपि क' आयल। एकर विमोचन हैब जरूरी। कतेक टाका लगतै यौ? एखन एक हजार द' दिऔ। खर्चाक पुर्जा बाद मे अहाँ कें भेटि जायत। अपना कैंचा सँ कीनल पाग, दोपटा आ माला पहिर अहाँ कुर्सी पर बैसि जाउ। अहाँ खेमाक विद्वान आयल छथि। पहिने सभ कें जलखै, चाह-पान ग्रहण कर' दिऔन। सभ काज सँ फुर्सति भ' गेल ने। आब लॉउड-स्पीकर कें कनैठी द' कनफोड़ा ध्वनि बनाउ। आगत विद्वान बेराबेरी अहाँक विद्वत्ताक, अहाँक पोथीक प्रशंसा मे भाषण शुरू करताह, चन्द्रोदय नामक व्याकरणक किताब मे जतेक विशेषण छैक अहाँक नाम मे, अहाँक अनुपम कृत्ति मे जोड़ा जायत। प्रेसबला सेहो निमंत्रित छथि। सभटा दैनिक समाचार पत्रमे अहाँक पुस्तकक लोकार्पणक फोटो संग समाचार छपि गेल। अहाँ तरंगित छी। अहाँ अखबारक कटिंग जमा क' रहलहुँए। अहाँ कें तृप्ति भेटि गेलए। केहन तृप्ति यौ? जेना कोनो महिला प्रचुर शृंगार क' दर्पण मे अपन रूप कें निहारि क' स्वयं कें तृप्त करैत छथि। मुदा एहन तृप्ति त' अहाँ कें असगरे मे भेल ने! एहन तृप्ति त' मात्र अहाँक लोलुपताक प्रतीक कहल जायत ने! तृप्ति त' मिथिलाक विशाल जनसंख्या कें हेबाक चाही जे अहाँक पोथी कें कीनता, पढ़ता आ आनन्दित हेताह।

आब अहाँ फिकिर मे छी, पोथी कें की कयल जाय। फिकिर कें एक कात ठेलि पोथी कें बिलहब शुरू करू। मिथिला भेल विद्वानक खान। तमाम कवि, कथाकार, आलोचक कें पोथी भेटि जयबाक चाही। मैथिली भाषामे प्रकाशित सभटा पत्रिका कें दू-दूटा पोथी कुरियर सँ

पठेबाक नियम छैक, ताहु पर विचार रखिऔ। सभटा काज सम्पन्न करबै तखन ने अहाँक नाम, यश, प्रतिष्ठा ध्वजा बनि मैथिली संसारक आकाश मे फहरैत।

मानि लिअ बिलहैत-बिलहैत पोथीक आधा ढेरी निंघटि गेल। आब बाँचल आधा ढेरी। लेखक महोदय कें औनैनी लागि गेलनि। बँचलाहा आधा ढेरी कें ओ की करताह? कोठलीक आलमारी, चक्का हुनकर पहिलुका यशकृति सँ त' भरले छनि। मरुओभरि कतौ रिक्त स्थान नहि छैक। नवका बँचलाहा पोथी कें लेखक महोदय कत' सैंतताह? भेल ने समस्या?

लेखक महोदयक पत्नी आबि गेलथिन। अर्द्धांगिनी अपन पतिक अनेरुआ समस्या सँ कुपित भ' गेलथिन। लोहछि क' कहलथिन—अहाँक पछिला कृति कें घून चाटि गेल। कइएक बेर बुझेलहुँ जे एकरा तीन टके किलोक भाव सँ बेचि लिअ। किछुओ ढौआ त' आबि जायत। मुदा से अहाँ मानी तखन ने।

लेखक महोदय कें प्राणान्तक दुख। हुनकर आँखि सँ हुनक हृदयक पीड़ा नोर बनि ठोपे-ठोपे चुब' लगलनि। दुख-सुखक सहभागिनी पत्नी अपन प्राणनाथक दारुण दशा देखि द्रवित भ' गेलथिन। ओ पति कें धैर्य देलथिन। आवेश करैत कहलथिन—क्लेश भ' रहलए ने? दुखक मोटरी कें समेटू। पाथीक ढेरी कें सैंतक ब्योंत हम बतबैत छी से करू। सभटा बचलाहा पोथी कें बोरा मे भरि दिऔ। बोराक मुँह गतानि क' धरनि पर लटका दिऔ। मूस आ झिंगूर एकर नोकशान नहि क' पाओत। सभटा समस्याक निदान छैक। कनिकबे बुद्धि खर्च करक जरूरत। आब निरर्थक अश्रुपात नहि करू।

सभटा परिस्थितिक आकलन केलाक बाद प्रश्न समक्ष होइए जे एहन अपमानबला स्थिति मे पोथी किएक लिखल जाइए? प्रश्नक उत्तर ताकल जेबाक चाही। हिन्दी भाषा मे एकटा कविता पढ़ने रही—''वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। निकल कर आँखों से आँसू, बनी होगी कविता अनजान।'' वियोगी होयब एक तरहक पहिचान भेल। वियोगीक हृदय मे विभिन्न तरहक भावक हिलोर उठैत रहैत छैक से सत्य। वियोगीक आँखि सँ नोर कविता बनि टपकैत रहैत छैक तकरो स्वीकार करैए पड़त। तखन वियोगीक परिभाषा सँ परिपूर्ण मनुक्ख कें

ताकब भेल एकटा काज। आब लिअ ने, मिथिला मे त' वियोगी भरल छथि। विवाहक चारि-पाँच बर्खक बाद अधिकांश मैथिल वियोगीए बनि जाइत छथि। ई भेल प्रकृतिक असीम कृपा। एकरा खारिज नहि कएल जा सकैए।

भावना मोनक खजाना थिक। जनिका मोन मे भावक ज्वार नहि उठैत छनि से कंगाल छथि। अपन मैथिल भाइ कहिओ कंगाल नहि रहलाहए। ओ त' भावक तरंग मे सदिकाल छटपटाइते रहैत छथि। कोमल माटि, कोमल स्वभाव, कोमल काया आ कोमल बोल। सभ तरहक झहरैत रस मे मैथिल भाइ डुबकी लगबैत रहैत छथि। छिलकैत भाव-माधुर्य मे कविता, कथाक रचना अपने-आप भऽ जाइत छैक। तें ने उदयचन्द्र झा 'विनोद' कहलनिए–''हम लिखैत छी कविता, सूर्य कें अर्घ्य दैत छी। ककरो किछु फर्क भने नहि पड़ौक, हमरा पड़ैत अछि। अहाँ पढ़ू वा नहि, हमरा लिखय पड़ैत अछि। हमरा लेल कविता लिखब, आइयो अछि आवश्यक, परमावश्यक अछि जीबाक लेल।''

सभटा तर्क शून्य मे पहुँच गेल। पुस्तकक ग्राहक, पाठक भेटौ वा नहि, मुदा जीवा लेल, मोनक भाव कें पिबाक लेल कविकें कथाकार कें रचना रचैए पड़तनि। वियोगी बनल मैथिल भाइक अन्तःमन सँ कलपैत-तड़पैत-छड़पैत भाव शब्द बनि पुस्तकक आकार लैते रहतै। तकर सुच्चा अर्थ भेल जे किताब लिखाइते रहतै, छपाइते रहतै, बिलहाइते रहतै आ कट्ठा-दू-कट्ठा खेत बिकाइते रहतै। एकरा रोकल नहि जा सकैए। जँ रोकबै तऽ अनर्थ भऽ कऽ रहतै। बहुतो मैथिल नामक प्राणीक धड़कन अल्पायु मे निःशब्द भऽ जेतनि।

हमर सोचक मूल उद्देश्य छल मैथिली भाषा मे लिखल पुस्तकक पाठक, ग्राहक ताकब। बहुतो विचारल मुदा विचार ठेकान पर नहि पहुँचल। कहल जाइत छैक जे जखन बुद्धि अबिचंकक अवस्था मे पहुँचि बिलौकी माँगब शुरू कऽ दिए तखन सावधान भऽ जाइ। अपन अपसियाँत भेल बुद्धि कें विराम दऽ कोनो बुद्धिमान लोक सँ परामर्श कएल जाए।

मोन बुद्धिमान लोकक खोज कैए रहल छल तखने पचकौड़ी झा 'दिवाकर' नामक कवि हमरा लग पहुँच गेलाह। हमरा सँ अपरिचित मुदा पुरान एवं प्रसिद्ध कवि दिवाकरजीक नव पोथीक पछिला सप्ताह मे विमोचन भेल रहनि। ओ अपन परिचय देलनि आ संगहि अपन नवका

कविताक पोथी हमर करकमल मे समर्पित करैत निवेदन केलनि–हमर कविता हमर व्यथाक परिचायक थिक। एकरा पढ़ि कऽ अहाँक हृदय-कूप मे अवस्से करुण भावक जागरण हैत। विशेष आग्रह करक तात्पर्य जे जँ अहाँ हमर कविता कें पढ़ि देब तऽ हमहूँ अहाँक उपन्यास कें पढ़ि देब। अहाँक उपन्यासक समालोचना कोनो प्रसिद्ध पत्रिका मे सेहो छपबा देब।

हमरा पूछना गेल–अहाँक कविता मे कोन प्रकारक व्यथाक चित्रण अछि?

पचकौड़ी झा 'दिवाकर' जवाब देलनि–व्यथा कोना उत्पन्न भेल तकर सांगोपांग वर्णिका सुनि लिअ। हमरे गामक जटाधर मिश्र धनिक लोक तऽ छथिहे संगहि छथि कलाक पुजेगरी। हुनकर पौत्रक उपनयन मे हमहूँ निमंत्रित छलहुँ। मुजफ्फरपुर सँ दूटा बाइजी आयल छलीह। दुनू बाइजी मानि लिअ इन्द्रक दरबारक परी-मेनका आ तिलोत्तमा। हम सौन्दर्यक उपासक छी से बजबा मे हमरा लाज नहि होइए। दुनू बाइजीक नृत्य मे जे छटा छल ताहि सँ रसक बरखा भ' रहल छल। दुनूक कंठ सँ निकलल मधुर गीत स्वतः संगीत बनि हमर मोन कें आप्लावित कऽ देने छल। हम दुनू बाइजीक अद्‌भुत नृत्य एवं कर्णप्रिय संगीत मे एतेक ने रमि गेलहुँ जे हमरा समयक ठेकान नहि रहि सकल। लगभग अर्धरात्रिक वेला मे आपस अपन आँगन पहुँचलहुँ। आषाढ़क महिना, तितल अन्हरिया राति, किछुए काल पहिने एक जबर्दस्त अछार भेल रहै, आँगन पिच्छड़, टॉर्चक बैटरी कमजोर, भगजोगनीक इजोत, पयरक चट्टी मे थाल-कादो लेभरल। कहुना दुआरि पर चढ़लहुँ। मुदा पिछरि गेलहुँ। कतबो अपना कें सम्हारलहुँ तइयो दुआरि पर सूतलि फुलकाहीबाली टहलनीक छोटकी बेटी कुसमियाक देहे पर ओंघरा गेलहुँ। कुसमिया चिचिया उठलि–माइगे माइ। अनघोल जकाँ भ' गेलै! कोठली सँ पत्नी बाहर एलीह। हुनकर हाथक टॉर्च मे पेट्रोमैक्सक प्रकाश। उपस्थित दृश्य कें अवलोकन करैत ओ बजलीह–लुच्चा। मनसाक लुचपना हमरा सँ अधिक के बुझत।

–कतबो करबद्ध प्रार्थना केलियनि, पत्नीब्रता होइक प्रमाण देलियनि मुदा हमर निहोरा हमर पत्नी कें संयत नहि कऽ सकल। ओ कठोर बनले रहलीह। तामसक जहर पीबि हमर पत्नी हमरा कुसमिया लग असहाया छोड़ि प्राते नैहर गमन कऽ गेलीह। पत्नीक तामस कें समन होइ मे लगभग चारि मासक समय लागि गेल। चारि मास तक पत्नीक वियोग मे हृदय

दग्ध होइत रहल आ कविता अपनहिआप बहराइत रहल।

पचकौड़ी कें बीचहि मे टोकैत हम पूछि देलियनि–कविताक पोथीक नाम की अछि?

हमर टोकब हुनका नीक नहि लगलनि। एखन पचकौड़ी झा 'दिवाकर' भावक संग्राम मे वीरयोद्धा बनि लड़ि रहल छलाह। तथापि ओ सबुर केलनि, तखन कहलनि–पोथीक नाम अछि 'कखन हरब दुख मोर।' महादेव कें एखन बिसरि जाउ। हमरा हमर पत्नीएटा पर ध्यान लागल छल। ओ हमर दुख कहिया हरतीह, कहिया नैहर सँ आपस औतीह बस तकरे करुण पुकार। खैर अहि गप्प कें एतहि छोड़ि दिऔ। जखन अहाँ हमर कविता पढ़बै तखन सभटा भाव अहाँक मोन मे अंकित भ' जायत। आब असलीका विषय पर दृष्टिपात करू। कविताक पोथी छपबौलहुँ, अहिठामक चुनल-चुनल विद्वान सँ एकर विमोचन सेहो करबौलहुँ। खर्चा-बर्चाक चर्चा नहि करू। टाका-पैसा हाथक मइल थिक। सभटा विधि-विधान समाप्त केलाक बाद हमरा फेर सँ पश्चात्ताप घेरि लेलक। अपन प्रकाशित पुस्तकक ढेरी कें देखि हम सोचबा लेल मजबूर भ' गेलहुँ जे सम्प्रति हमरा सँ पैघ बूड़िराज अहि जिला मे कियो नै हैत।

पचकौड़ी जवाब देबा सँ पूर्व मुँह कें कोचिऔलनि, सेप घोंटलनि, खखसिकें कंठक खोंच पर नियंत्रण केलनि तखन कहलनि–बजबा मे कोन तरहक लाज। अहूँ त' श्रीमान अही पथक पथिक छी। हँ यौ, बारम्बार हम पोथी छपबैत छी आ मूर्ख बनल बौआइत छी। हमर कविता आ कि कथा कें पढ़ऽबला कियो नहि। तें हम ठेकना-ठेकना क' ओहने लोक लग जाइत छी जे स्वयं लेखक छथि। जो गति मोरी सो गति तोरी। ओ हमर कविता कें पढ़ि देताह, तऽ हमहूँ हुनक पोथीक पन्ना उलटि देबनि। श्रीमानजी, अही उद्देश्य सँ हम एखन अहाँ लग पदार्पण केलहुँए। अहाँ सँ हमर विनम्र प्रार्थना जे अहाँ हमर कविताक रसास्वादन करी। बदला मे हमहूँ अहाँक उपन्यास कें पढ़ि सुख पबैक अथक प्रयास करब।

पचकौड़ी झा 'दिवाकर' सँ गप्प-गप्प होइते रहए ताही काल कतहुँ सँ जीवनदानी पहुँच गेलाह। जीवनदानीक ललाट पर भस्म, गरदनि मे माला एवं मुद्रा आक्रामक रहनि। ओ मिथिलाक प्रसिद्ध लोक रहथि। मिथिला एवं मैथिलीक रुग्न अवस्था देखि नेनहि मे ओ बिचलित भऽ गेल छलाह। कने पैघ भेला तऽ अपन सम्पूर्ण जीवन मिथिला कें अलग

राज्य बनबैक संग्राम मे उत्सर्ग कऽ देलनि। ओ जे भीष्म शपथ लेलनि ताहि मे हुनकर जिनगीक सभटा स्वार्थ स्वाहा भऽ गेलनि। हुनकर असलीका नाम की छनि प्रायः कमे लोक कें बुझल हेतै। ओ जीवनदानी नाम सँ विख्यात छथि आ समग्र मैथिलक आदर एवं सम्मानक अधिकारी बनि मिथिलाधाम मे भ्रमण करैत छथि।

जीवनदानी अबितहि पचकौड़ी झा 'दिवाकर' कें वक्र नजरिए देखैत बजलनि—अखबार मे अहाँक नव कविताक पोथी 'कखन हरब दुख मोर'क विमोचनक समाचार पढ़लहुँ। जानकारी भेलाक उपरान्त अहाँक दर्शनक अभिलाषी बनि गेलहुँ। भाँज लगबैत-लगबैत एखन एतय पदार्पण केलहुँए। जेना कि हमरा कर्णगोचर भेलए जे ओहि खेपक अहाँक कविताक पोथी दुख, दर्द, क्लेश सँ ब्याकुल अश्रुपात करैत प्रगट भेल। तकर अर्थ भेल जे अहि बेरक अहाँक काव्य-ग्रन्थ अवस्से पठनीय हैत। हम आग्रह करब जे थोड़ेक पुस्तक हमरा दी। बेचि कऽ हम टाका पहुँचा देब। अहाँक प्रकाशनक खर्चमे थोड़बो मदति करब हमर कर्त्तव्य बनैए।

जीवनदानीक मधुर वाणीक कोनोटा प्रभाव पचकौड़ी पर नहि पड़लनि। ओ घोरल चिरैताक तीत-अक्कत स्वाद कें कंठ मे भरि खोंखिआइते बजलाह—पछिला खेप अहाँ जे हमर पोथी लऽ गेलहुँ तकर मूल्यक एकोटा टाकाक दर्शन हमरा नहि करेलहुँ। फेर पोथी लेब' पहुँच गेलहुँए। हम हाथ जोड़ि कऽ बिनती करैत छी, हमरा पर दया करू, हमरा बकसि दिअ।

—आहि रे बा! रंज करब एवं अपशब्दक वमन करब अहाँ के शोभा नहि दैए। पछिला खेपक एकोटा पोथी बिकायत तखन ने हम टाका देब' अबितहुँ।

पचकौड़ीक मुखमंडल दिआबातीक सुपती जकाँ धधकि उठलनि। ओ कहलनि—हमरा खबरि भेटल अछि। अहि खेपक विमोचन समारोह मे ओ आयल रहथि। नाम नहि मोन पड़ैए, ओहो कविए रहथि। ओ मूल्य निर्गत कऽ अहाँ सँ हमर उपन्यास किनलनि, पढ़लनि तकर समाचार देने छलाह। अहाँ मिथ्या बजैत छी जे हमर पोथी बिकाइते ने अछि।

—आब लिअ। अपवाद तऽ सभठाम होइत छैक। पंडितोक परिवार मे मूर्ख जन्मैत छैक। दू चारिटा एहन घसकल लेखक अबस्से छथि जे मूल्य दऽ कऽ मैथिली भाषाक पोथी किनै छथि। मुदा ओहने बिक्री सँ प्राप्त

द्रव्य तऽ आवागमन काल टेम्पोक भाड़ा मे खर्च भऽ जाइत छैक। तखन बचल की सुथनी जे हम अहाँ कें दिअ अबितहुँ।

पचकौड़ी आ जीवनदानी आमने-सामने ठाढ़ रहथि। दुनूक मिजाज गर्म भऽ गेल छलनि। मिथिलाक माटिमे लौह द्रव्यक अभाव अछि। कोनो अनर्थकारी क्रिया हेबाक सम्भावना नहि रहैक, तथापि हम सावधान छलहुँ।

क्रोध मे थरथराइत पचकौड़ी उक्खरि जकाँ मुँहबाबि कें किछु बजबाक प्रयास केलनि। मुदा जीवनदानी तकर अवसर नहि देलखिन। दमसबैत कहलखिन—धन-सम्पत्ति, जमीन-जत्था यश-प्रतिष्ठा मे हम अहाँ सँ बीस छी। अहाँ बी.ए. त' हम एम.ए.। शारीरिक मजबूतीक तुलना मे जँ हम एक मुक्का अहाँक पीठ पर बजारि दी त' तीन दिन तक अहाँ ओछैन पर सँ उठि नहि सकब। हयौ पचकौड़ीजी महाराज, अहाँ की बुझैत छियै जे हम मैथिली भाषाक किताब बेचि कऽ भोजन करैत छी। अहाँ मूर्ख छी, चपाट छी। जहिना अहाँ कें कथा, कविता रचना करबाक रोग अछि तहिना हमरा मिथिला, मैथिलीक सेवा करक निशा पछाड़ने अछि। हयौ कविराज, दरभंगा मे फतिंगा जकाँ कवि, कथाकार फरल छैक। ककरहु ने ग्राहक छैक आ ने छैक पाठक। कहलकै किने—हिनका पुस्तकक मूल्य चाहियनि।

—तों हमरा फतिंगा कहलँए?

—एकदमे सँ कहलहुँए।

—तखन हमरा लग की करऽ लेल एलँए?

—फतिंगेक बीच तितलीओ उड़ैत छैक। तितली सुन्दर, आकर्षक होइत छैक। तितलीएक तलास मे अहाँ सनक टुटपुजिया लेखक लग हम जाइत छी। मुदा भेटैए की? बेटीक बिबाह, बेटाक उपनयन, दुरागमनक कन्ना-रोहट, फरीकक बेइमानी, दरबज्जा परहक चिकड़ब-भोकरब इत्यादि। अहाँक पछिला पोथी जे उपन्यास थिक ओकर विषय-वस्तु की अछि? अहाँ कें पत्नीक संग मनमोटाव भ' गेलए। सभकें होइत छै, अहूँ कें भेल। मुदा तकरा अहाँ कथा बना पोथी प्रकाशित करा देलियै। पत्नी संग अहाँ कें झगड़ा भेल, अहाँ दलान पर जा कऽ बैसि रहलहुँ आ बात कें मथ' लगलहुँए। मथैत-मथैत आपस जाबे अहाँ अपन कनियाँक गोरधरिया कर' लेल आँगन पहुँचलहुँए, उपन्यासक सोलह पन्ना अहाँक निरर्थक प्रलाप सँ

भरि गेलए। जे पाठक धोखहुँ सँ एकरा पढ़लनि तिनकर माथ मे ठनक उठि गेलनि। ई भेल मैथिली भाषा कें दूरि करब। बदलल युगक मोताबिक कथा हेबाक चाही ने। पुरने बात-व्यवहार आ अनेरेक अश्रुपात करैत कहरबै, बहुक व्यथा मे कथा लिखबै आ तकर विमोचन काल कतबो ढोल पिटबै त' एहन पोथी कें के कीनत, के पढ़त? सभ कथाकारे बनि जेताह, कविए बनि जेताह। हयौ पचकौड़ी, अहाँ शिक्षक छी, ट्यूशन सँ प्रचुर टाका कमाइत छी। अहाँ कें टाका-पाइक फलिहारी अछि। हम विचार देब जे पुस्तक लिखि कें तकरा छपबेनाइ आ तकर बाद धौजनि सहनाइ की नीक बात भेलै? अपनहु बचू आ हमरा सनक सनकल पर सेहो उपकार करू।

पचकौड़ी झा 'दिवाकर' कें बकार नहि फूटि रहल छलनि। ओ पाथरक मूर्ति जकाँ बौक भेल ठाढ़े रहलाह। जीवनदानी बजिते रहला—क्रोधित नहि होउ। सही बात कें बुझक चेष्टा करियौ। मैथिली भाषा कपार पर राष्ट्रभाषा हिन्दी आ हिन्दी भाषाक थुथना तोड़निहारि विश्व-भाषा अंग्रेजी। युग अछि कम्प्यूटरक। छौंड़ाक कान मे बलिया आ छौंड़ीक ड्रेस अछि टाइट पेंट-शर्ट। तेहन विषम समय मे हमरा सनक सनकी मनुक्ख कें मातृभाषा मैथिलीक अस्मिता बचबैक प्रयास। मातृभाषाक सम्बन्ध स्थान विशेषक संस्कृति, परम्परा सँ होइत छैक। मैथिली भाषाक विनाश सँ मिथिलाक प्राचीनतम दर्शन नष्ट भ' जेतैक। इएह तर्क अछि जे हम रने-बने बौआइत छी। सही करैत छी आ कि गलत एकर तसफिया मात्र आबऽबला समये करत। आब ने जनक छथि आ ने अष्टावक्र। आब छथि पचकौड़ी आ हिनकर स्कूलक चपरासी जनका।

जीवनदानीक कठोर मुद्रा एवं सत्य वचन कें श्रवण क' पचकौड़ीक मनसा, वाचा, कर्मणा सँ उपजल क्रोध तिरोहित भ' गेलनि। ओ अपन मूड़ी कें नीचा गोंति लेलनि।

जीवनदानी हमरा दिस घूमि क' कहलनि—श्रीमान्, हमरा आ पचकौड़ीक संग जे नोकझोक भ' रहलिए तकरा लेल अपने वृथा चिंता नहि कएल जाउ। एखन पचकौड़ी झा 'दिवारक'क अपने वृहत् परिचय प्राप्त करू। पचकौड़ी कें दू टा पत्नी छथिन। पहिल गाम मे कुटिया-पिसिया करऽ लेल आ दोसर भानस-भात करऽ लेल शहरमे। उत्पादन दुनू पत्नी सँ बरोबरि भऽ रहलनिए। अध्यापक तऽ ई छथिहे। मिथिला, मैथिलीक कोनो

सम्मेलन होइक हिनका अपने मंच पर विद्यमान अबस्से देखबनि। एतेक कार्य सम्पन्न केलाक बादो हिनका मे ऊर्जा बाँचिए जाइत छनि। पत्नीक वियोग मे कविता नामक अश्रुपात कर' लेल ई सदिकाल आतुर रहैत छथि। पचकौड़ी कें हम नीक जकाँ चिन्हैत छियनि। मुदा ई हमरा चिन्ह पौताह तकर ने हिनका संस्कार छनि आ ने अवकाश।

जीवनदानी आ पचकौड़ी झा 'दिवाकर' प्रस्थान केलनि। हम अनिश्चयक स्थिति मे पहुँच गेलहुँ। जीवनदानीक कटाक्ष की केवल पचकौड़ी लेल छलनि? कथमपि नहि। हमहूँ तऽ मैथिली भाषाक लेखक बनलहुँए। हमर लेखनी सँ बहरायल भाषा एवं विषय-वस्तु अपठनीए भऽ सकैत छल। दर्पण मे सभकें अपन छाया सुन्दरे लगैत छैक। अपन लिखल कविता आ कि कथा सभ कें उच्च कोटिक रचना बुझना जाइत छैक। ई भेल अहि जगतक साधारण नियम। अही नियमक अधीन मनुक्ख धरती पर जिबैत अछि, अपन वजूद कायम रखने अछि। एकटा दोसरो बात पर हमर ध्यान गेल। स्टेशनक बुक-स्टॉल पर हिन्दी भाषाक सहस्रो पुस्तक, पत्र-पत्रिका के हम बिकाइत देखैत छियैक। अधिकांश पोथी एवं प्रकाशन पढ़ऽ जोगर नहि रहैत छै। तइयो ओ सभटा सामग्री बुक-स्टॉल पर उपलब्ध रहैत छैक किएक त' ओकर ग्राहक छैक, पाठक छैक। मैथिली भाषाक कविता आ कथाक पोथी सार्थक आ निरर्थक भऽ सकैत अछि। अहि भाषाक प्रकाशन स्टेशनक बुक स्टॉल पर बिकाइ लेल किए ने उपलब्ध छैक? मैथिली भाषा मे प्रकाशित पोथीक ग्राहक एवं पाठक किएक नहि छैक? ग्राहक एवं पाठकक खोज नामक समस्या फेर सँ हमरा आगाँ ठाढ़ भ' गेल। खोज करक आवश्यकता छैक आ कि मार्ग छैक? पता नहि। तखन कोनो बुद्धिमान लोक सँ परामर्श करबा मे हर्जे की? कोनो हर्ज नहि। हम डेग उठेलहुँ।

दू

हमर महल्ला मे हमरे जकाँ पाकल उमेरक थोड़ेक लोक आ सभहक एकटा बैसार। बैसारक नाम भेल अपाहिज क्लब। अपाहिजक क्लबक मुख्यालय श्री दिनेश प्रसादक मकान मे। दिनेश बाबू सर्वसम्मति सँ अपाहिज क्लबक आचार्य छथि। ओ पी.एच.डी. विभागक बड़ा बाबू पद

सँ अवकाश प्राप्त केलनिए। हुनकर पत्नी स्वर्ग पथगामिनी भऽ गेल छथिन आ सभटा संतान देश-विदेशक विभिन्न भाग मे उच्च पद पर आसीन अपन-अपन सुरुचिपूर्वक जीवन जीवि रहलखिनए। तें दिनेश बाबू अपन निजक मकान मे एकसरे रहि रहल छलाह। आश्रम छोट होअय अथवा पैघ मनुक्ख कें जीवित रहऽ लेल आवश्यकताक कमी नहि। एकटा चाकर हुनकर पेंशनक चौथाइ भाग तनखाह ल' क' इमानदारी सँ हुनक सेवा क' रहल छल। दिनेश बाबू कर्ण कायस्थ नहि, श्रीवास्तव कायस्थ। मुदा मैथिली भाषाक अद्भुद प्रेमी। मैथिली भाषा मे प्रकाशित केहनो ने पुस्तक एवं पत्रिका होइक ओ अबस्से किनता, पढ़ता आ सहेज क' सेल्फ मे रखताह। माटि सँ निकलल भाषा मे मायक ममता। ओहने ममता मे आत्माक स्पर्श करऽवला सुख। हम टटके मैथिली भाषाक उपन्यासकार बनल छलहुँ, तें अपाहिज क्लबक आन-आन सदस्य सँ हमरा ओ अधिक आदर एवं सिनेह करैत रहथि।

अपाहिज क्लबक नियमित बैसार अपराह्न चारि बजे सँ गोधूलि बेर तक। मुदा हम समय सँ दू घंटा पहिने पहुँच गेल रही। दिनेश बाबू अपन ड्राइंग रूप मे बैसल-बैसल हिन्दी सिनेमाक उदयकालक गीत 'ये शाम की तनहाइयाँ ऐसे मे तेरा गम। पत्ते कहीं खड़के हवा आई तो चौंके हम' सुनै मे निमग्न रहथि। असमय मे हमर आगमन, दिनेश बाबू आश्चर्य प्रकट केलनि। आग्रह सँ बैसेलनि आ हमर चेहरा पर अंकित चिन्ताक छाया देखिकऽ ओकर कारण पुछलनि।

मैथिली भाषाक पुस्तकक ग्राहक एवं पाठकक विकट समस्या कें दिनेश बाबू एकाग्र भऽ कऽ सुनलनि, तखन कहलनि—कइएक पुस्त सँ हम मिथिलाक बासी छी। तथापि हम मैथिल नहि छी। तें हम मिथिला सम्बन्धी कोनो बात कें निधोक बाजि सकैत छी। हमर बाजब किनको नीक लगलनि अथवा अधलाह तकर परबाहि हमरा नहि हैत। तोहर आँखि कोना फुटलहु? तों कनाह कोना भऽ गेलह? प्रश्नक जवाब मे कोनो तरहक शब्दोच्चारण नहि। मात्र शून्य बनि शून्य मे ताकब। हम अमैथिल, तें हम शून्य मे नहि ताकब। हम चिकैर-चिकैर कें बजबे करब। मैथिली साहित्यक दयनीय अवस्थाक कारण छथि अपना कें मैथिल कहनिहारक स्वभाव।

हम अकचकाइत पुछलियनि—स्वभाव! से कोना?

दिनेश बाबू जवाब देलनि—स्वभाव प्रकृतिक देन अछि। स्वाभिमान आ अभिमान दू तरहक स्वभाव, मुदा दुनूक विपरीत अर्थ, विपरीत क्रिया-कलाप। जीवनक मूल्यक प्रति एवं अपन संस्कृतिक प्रति संवेदनशील होयब भेल स्वाभिमान। अपना कें मानब, सभ सँ अधिक बुद्धिमान बुझब, सदिकाल दर्प मे रहब ई भेल अभिमान। स्वभाव मनुक्ख कें कतेक गहीर तक प्रभावित करैत छैक तकर एकटा खिस्सा कहैत छी, सुनू। एकटा लोक छल जकर स्वभाव मे इर्खा भरल रहै। एक दिन ओकरा लग मे पहुँच कें भगवान कहलथिन—तों वरदान मांग। तो जे किछु मंगबे से हम देबौ। मुदा एकटा शर्त छौक। तोरा जे किछु देबौ तकर दोबर तोहर फरीक कें देबौ। आब ओ मनुक्ख सोचऽ लागल जे जँ ओ एक मन सोना मंगतै तऽ ओकर फरीक कें दू मन सोना प्राप्त भऽ जेतै। ओ एक करोड़ टाका मांगत तऽ ओकर फरीक कें दू करोड़ टाका भेटि जेतैक। इर्खा मे डुबल मनुक्ख मनहिमन कलपि उठल। ओकर फरीक कें जे भेटतै से सोचिए कें ओ छटपटाय लागल। ओ बड़ीकाल तक विचारैत रहल, तखन भगवान सँ कहलक—हौ भगवान, हम जे किछु मंगब' तकर दोबर तों फरीक कें देबहक से बात पक्का ने?

भगवान कहलथिन—से बात पक्का।

तखन इर्खालु मनुक्ख भगवान सँ कहलक—तों हमर एकटा आँखि फोड़ि दहक।

भगवान टकटक ओहि इर्खालु मनुक्ख कें देखैत रहि गेलाह। ओ अपन एकटा आँखि फोड़बऽ लेल तैयार भऽ गेल किएक त' फरीकक दुनू आँखि फूटि जेतैक। तें कहलहुँ जे स्वभाव मे परिवर्त्तन नहि होइत छैक। यत्न केला सँ थोड़ेक सुधार भ' सकैत छैक। मुदा मूल स्वभाव मे परिवर्त्तन हैब असंभवे रहैत छैक। मैथिल बन्धु, मैथिल समाज एवं मिथिलाक परिवेश एक खास तरहक स्वभावक अधीन अछि। अहाँक एखनुका चिन्ता अछि जे मिथिलाक लोक अपन मातृभाषाक प्रति उदास किएक छथि। अहि समस्याक आलोचना-समालोचना कर' लेल अतीत मे जा कें एकर जड़ि मे पहुँचि एकटा ठेहा पकड़ब आवश्यक अछि।

ठेहा अर्थात् विषयक जड़ि कें मानि लिअ अंग्रेजी शासनकाल मे लॉर्ड मैकॉलेक भारत आगमन! लॉर्ड मैकॉले 1861 ई. मे भारत पहुँचल रहथि। ताहि समय तक सम्पूर्ण भारत मे अंग्रेजी शासन पसरि चुकल रहै, अंग्रेजी

शासन चलबै लेल न्यायालय बनि गेल रहै, न्यायाधीशक नियुक्ति सेहो भऽ गेल रहै, मुदा कानूनी धारा नहि बनल रहैक। लॉर्ड मैकॉले अंग्रेजी न्याय लेल कानून यथा सी.आर.पी.सी., आई.पी.एस. इत्यादि बनौलनि। इएह कानूनी धारा एखनहुँ आजाद भारत मे न्यायक रीढ़ बनले अछि। तकरा संगहि लॉर्ड मैकॉले अंग्रेजी भाषाक शिक्षाक अनिवार्यता कें सेहो स्वीकार केलनि। हुनकर मान्यता छल जे जन्म सँ, रंग सँ भारतीय प्रजा कें रुचि सँ, विचार सँ, नैतिकता सँ एवं संभव हुए तऽ विवेक सँ सेहो अंग्रेज बनाओल जेबाक चाही तखने अंग्रेजी शासनक पयदान मजबूत हेतै, अंग्रेजी शासन दीर्घकाल धरि भारत मे कायम रहि सकतै। लॉर्ड मैकॉलेक प्रयास सँ अंग्रेजी भाषाक प्रसार शुरू भेल। ताहि समय तक मीरजफर एवं गालिबक गजल उर्दू भाषाक निर्माण कऽ ओकरा अपना बुलंदी पर पहुँचा चुकल छल। हिन्दी भाषा कखनहुँ संस्कृत, कखनहुँ उर्दू आ कखनहुँकाल उत्तर भारतक आंचलिक भाषा संगे गठजोड़ कऽ अपन स्वरूपक रचना कऽ रहल छल। मुदा मैथिली भाषा बहुत पहिने सँ भाषा बनि तैयार भऽ गेल छल। ओ भाषा छल कतऽ? ओ छल ताम्रपत्र पर हस्तलिखित राजा, महाराजाक खजाना मे झाँपल। ताहू सँ अधिक मैथिली भाषा मिथिलाक सभ वर्णक ठोर पर मौजूद छल। अंग्रेज छपाइ मसीन भारत अनलक। छपल पुस्तकक चलन आरम्भ भेल। पहिल बेर छापाखाना सँ छपल मैथिली पत्रिका 1905 ई. मे जयपुर सँ निकलि मिथिला पहुँचल। तेँ हम आरम्भे मे कहने छलहुँ जे मैथिली भाषाक आधुनिक दशा एवं दिशाक आकलन लॉर्ड मैकॉलेक भारत मे प्रवेश केलाक बादे करब उचित हैत।

अंग्रेज बंगालक रस्ते भारत मे प्रवेश केलक। बंगाल प्रांत कें जीति कऽ कलकत्ता कें अपन राजधानी बनौलक। अंग्रेजी शासन शुरू भेल। समग्र बंगाल मे अंग्रेजी भाषाक शिक्षा लेल स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय स्थापित भेल। एकरा चलते परिवर्त्तन एलै। परिवर्त्तन एहन जे भारतक स्वरूपें के बदलि देलकै। शासन व्यवस्था, समाजक गठन एवं व्यक्ति विशेषक महत्वाकांक्षा सभ किछु मे आमूलचूल परिवर्त्तन भेलै। अंग्रेजी शिक्षा सँ भारतक मुनल आँखि खुजि गेलै। सम्पूर्ण विश्वक ज्ञान सहजहि प्राप्त भऽ गेलै। अँग्रेजे सम्पूर्ण आधुनिक भारत कें स्वतन्त्र होयबाक मार्ग प्रशस्त केलकै।

बंगालक भद्रपुरुष धोती-कमीज आ कमीजक कंठ मे टाई पहिरलनि।

बंगभाषी अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण केलनि, अंग्रेजक सत्संग मे यूरोप मे भेल जागरण कें साक्षात्कार केलनि; संसारक विभिन्न संस्कृति, परम्परा, भाषा आदिक ज्ञान प्राप्त केलनि। मुदा बंगभाषी अपन मातृभाषाक प्रति अनुराग कें कहिओ कम नहि होब' देलनि। एकर समुचित परिणाम भेलै। बंगालक लोकभाषा, लोकगीत, लोक संगीत, रंगशाला, चित्रकला, नृत्यकला अर्थात् कला सम्बन्धी प्रत्येक क्षेत्र मे प्रचुर प्रगति भेलै। बंगाल मे ने जाति रहलै आ ने सम्प्रदाय रहलै। बंगालक सभटा बासी बंगाली बनि गेलाह आ हुनकर सभहक एकमात्र भाषा बंगभाषा कायमे रहल। बंगालक मुसलमान सेहो उर्दूक स्थान पर बंगभाषा कें अपना लेलनि।

–विश्वक कोनो भाषा होउक, एकर विकास लेल शर्त होइत छैक। शर्त ई जे भाषा बिकाउ होअय। अधिक सँ अधिक लोक भाषाक पोथी कें क्रय करए एवं रुचि सँ ओकरा पढ़ए। बंगभाषा मे उपलब्ध कविता, कथा, उपन्यास आदि पोथीक ग्राहकक कहियो कमी नहि रहलैक। तें बंगभाषा मे अनेकों मूर्धन्य कवि, उपन्यासकार भेलाह जिनकर रचना भारत टा मे नहि समूचा विश्व मे ख्याति प्राप्त केलक। बंगभाषाक विशालता मे बंगालीक कोनो काबिलियत आ कि चतुराइ नहि रहनि। रहनि मात्र हुनकर सभहक स्वभाव। स्वभाव एहन जे एक दोसराक प्रशंसा कर' मे उदारता, विनम्रता, सरसता। आब मिथिला मे पयर राखू। मैथिली भाषाक प्रतिए मैथिल उदास किएक छथि तकर कारण ताकू। मुदा कनिए ठहरि जाउ।

कनेककाल तक दिनेश बाबू शान्त भेल रहला। शायद मनहिमन किछु सोचैत रहलाह। तखन जेना सुतल सँ जागि गेल होथि तेहने मुद्रा मे कहब आरम्भ केलनि–मैथिल समाजक छिद्रान्वेषण करी से हमर उद्देश्य नहि अछि। तकर योग्यतो हमरा नहि अछि। मात्र हम जे देखलियैए, अनुमान केलियैए तकरा आधार बना एखनुका विषयक समीक्षा क' रहलहुँए। हमर विचार के सुधारल जा सकैए, मुदा एकर उपहास करब कथमपि उचित नहि हेतै। कारण ई समस्या तमाम ओहि व्यक्ति सँ सम्बन्धित अछि जे मैथिली भाषाक लेखक छथि। आब मुख्य विषयक चर्चा कएल जाए। मिथिला मे अर्थात् मैथिली बजनिहारक इलाका मे किछु बर्ख पूर्व वज्रपात भेल रहै। अंग्रेज दार्जिलिंग कें हथिआबैक एवज मे आधा मिथिलाक हिस्सा नेपालक राजाकेँ सुपूर्त क' देने रहैक। मिथिला दू भाग मे

विभाजित भ' गेल रहै। तकरबादो बहुत नोकसान नहि भेल छलै। दू देश मे खंडित मिथिला एक राष्ट्रक स्वरूप मे कायमे रहि गेल रहै। बीसवीं सदीक आरम्भ मे बिहार कें बंगाल सँ अलग प्रांत बनाओल गेलै। उड़ीसा सेहो अलग प्रांत बनल। ताहि समय मे मिथिला मे अबस्से विद्वान लोकक अकाल नहि हेतै। मुदा मिथिला अलग प्रांत बनौ ताहि लेल कियो मुँह नहि खोललनि। कनिओटा सुगबुगाहट नहि भेलै। बिहार प्रांत मे अनेक भाषा आ बोली। ओहि मे मैथिली बजनिहार एक कात मे!

–उनैसवीं सदीक अंत मे एवं बीसवीं सदीक आरम्भ मे भाषा विज्ञानक दू गोट विशिष्ट विद्वान भेल रहथि। एक व्यक्ति रहथि अंग्रेज आ दोसर छलाह बंगभाषी भद्रपुरुष। दूनू अन्वेषण केलनि। मिथिलाक भौगोलिक सीमा, विद्यापति मैथिली भाषाक कवि छलाह तकर सत्यापन एवं बंगभाषाक लिपि मिथिलाक्षर छल ताहि बात कें प्रमाणित केलनि। ओहि दुनू महाशयक काज एहन भेल जे मानि लिअ मिथिलाक पोखरि मे डूबल जाठि देखार भऽ गेल। खास कऽ हेरायल विद्यापति कें पुनः पाबि मिथिलाक लोक हर्षे विभोर भ' गेल। हम कहि चुकल छी जे अंग्रेजी राज्य कायम भेलाक बादे आंचलिक भाषाक प्रति लोक मे रुझान आयल रहै। मिथिला अछूता नहि रहलै। मैथिल कें सेहो अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति रुचि जागि गेल रहनि। एक तरहक मंतव्य बनि गेल रहै जे मिथिला मे बास केनहिार तमाम लोक मैथिल छथि आ हुनकर सभहक मातृभाषा मैथिली बोली नहि भाषा थिक। मुदा अहि मंतव्य पर कुठाराघात भेलै। 1910 ई. मे मिथिला नरेशक छत्रछाया मे विशेष तामझामक संग एकटा संस्थाक निर्माण भेलै जकर नाम रहै ''मैथिल महासभा''। ओहि संस्थाक पहिल शर्त छल जे केवल मैथिल ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थे टा मैथिल महासभाक सदस्य बनि सकैत छथि। किएक यौ? मैथिल ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थेटा मैथिल छथि आ हुनके टा मातृभाषा मैथिली छनि? बाकी मिथिला मे रहनिहार तमाम जातिक लोक अमैथिल छथि। दलित आ महादलित जातिक चर्चो करब बेकार। कारण ओहि जाति कें मैथिल नामक कोन तरहक चिड़ै होइत छैक तकर ज्ञान तक नहि रहै। जमींदारी प्रथा आ दरभंगा महाराजक वर्चस्व, आम जनता दिन मे खेलक तऽ राति मे भुखले सुति रहल। परिणाम भेल जे मिथिलाक सम्पूर्ण जनसंख्याक लगभग पाँच प्रतिशत मैथिल बनि सकल। बाँकी बचल पन्चानबे प्रतिशत

मिथिलाक बासी जनगणनाक समय अपन मातृभाषा मैथिली नहि हिन्दी दर्ज करौलक।

हम दिनेश बाबूक कथन कें रोकैत हुनका कहलियनि—ओहि समय मे ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थेटा शिक्षित जाति रहल हेताह, तें मैथिल महासभा मे सदस्यताक एहन विधान बनल हेतै।

दिनेश बाबूक जवाब छल—स्वादिष्ट व्यंजनक स्वाद सँ अधिक स्वाद परनिंदा मे भेटैत छैक। से सत्य रहितहु ककरहु निंदा करबामे हमर स्वार्थ नहि अछि। अतीत मे कयल कर्मक नफा-नोकसानक चर्चा होइते रहैत छैक। एकटा गलत निर्णय आ कश्मीर समस्या अपने देशक काँट बनि मौजूद अछि। अहाँक कहब सत्य भऽ सकैए जे ताहि समय मे मिथिला मे ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थेटा धन एवं शिक्षा मे अग्रणी हेताह। मुदा मैथिल महासभाक स्थापनाक उद्देश्य एवं प्रयोजनीयता की छल हेतैक? हमरा दृष्टिए मैथिल महासभाक उद्देश्य आ प्रयोजन छलै मात्र एकटा जातिक श्रेष्ठता एवं मैथिली भाषा पर एकाधिकार स्थापित करब। तुलनात्मक अध्ययन लेल हमसब बंगभाषी दिस ताकी। आरम्भ मे बंगभाषा मे रचना केनिहार बंगाली सेहो उच्च जातिक लोक रहथि। मुदा ओ सभ महामहोपाध्याय नहि बनलाह। ओ सभ चट्टोपाध्याय सँ चटर्जी, मुखोपाध्याय सँ मुखर्जी, गंगोपाध्याय सँ गांगुली आदि बनि अपन भाषाक विकास केलनि। तें हमर बाजब ककरहु लेल निन्दा नहि अछि। आ जँ अछि तऽ होबऽ दियौ। हम अमैथिल, हमरा ककरो गारि-फज्झतिक भय नहि अछि। एखनुका वार्त्तालापक विषय अछि मैथिली भाषा मे लिखल गेल पोथीक पाठकक अभाव। पोथीक ग्राहक आ पाठक किएक नहि छैक जखन कि भाषा अति समृद्ध एवं प्राचीन छै? एकर बजनिहारक जनसंख्या करोड़ मे छै?

कनेककाल चुप रहलाक बाद दिनेश बाबू पुनः बजलाह—एतबे भ' क' रहितैक त' हम अपन कथन कें समेटि लैतहुँ। मुदा से नहि भेलै। संस्था थोड़बे लोक कें प्रामाणिक मैथिल मानलक। उच्च गोत्रमूलक ब्राह्मण जे कुशाग्र बुद्धि एवं अद्भुत प्रतिभाक स्वामी रहथि, कोट-पेंट पहिरलनि, कंठ मे टाइ बन्हलनि आ अंग्रेजी राज्यक सेवाक निमित्ते उच्च पद पर आसीन भेलनि। मात्र मनोरंजनक दृष्टिए मैथिली भाषा मे कलम घसलनि, ओहने एक-आध विद्वान, जनिक प्रतिष्ठा समग्र मिथिला मे

पसरि गेल रहए, अबस्से भेलाह जनिक रचित गद्य-पद्य, नाटक, कथा आदि उत्तम कोटिक छल। विद्वानक चेला-चाटी सेहो मैथिली भाषा मे रचना कर' लगलाह। हुनके सभहक रचना कें सुच्चा मैथिली मानल गेल। ओ सभ चिचिया-चिचिया कऽ अनघोल केलनि—एँ हौउ, जे शुद्ध-शुद्ध मैथिली ने लिखि सकैए आ ने बाजि सकैए से मैथिल कोना भेल। एकर नतीजा भेलै जे मैथिल ब्राह्मण एवं कर्ण कायस्थोक जनसंख्या मे थोड़बे लोक सुच्चा मैथिल बनि सकलाह, बाकी सभटा अमैथिलक पाँत मे ठाढ़ भऽ गेलाह। आब बचलाहा सुच्चा मैथिल मे थोड़ेक बाबू साहेब। हुनकर मुसाहिब खुसामदी-सरकार, अपनेक उपन्यासक नायक रेशमी परिधान आ पाग-दोपटा पहिरि सजि-धजि कें हाथी पर सवार सासुर जाइत छथि। फलनमाक उपन्यासक नायक बिन जोतल खेतक आड़ि पर कपार फोड़ैए। बाबू साहेब प्रसन्न भेलाह। मुसाहिब कें इनाम-बख्सीस भेटलै। तकर अलावा महाराजक दरबार मे चुरूक मे जल लऽ कऽ लघुशंका करऽवला पंडितक जमात। दरबारी पंडित पाछाँ कोना रहितथि। ओ लोकनि संस्कृत भाषा के बिसरि गेलाह। विद्यापतिक काव्यक नकल करैत कविताक रचना कर' लगलाह। थोड़ेक पंडित नाटक सेहो लिखलनि। ताहि समय मे बंगाल प्रांत मे विद्यालय, विश्वविद्यालय खुजि रहल छलै। बंगभाषी मैथिली भाषा मे ज्योतिरीश्वर कृत वर्णरत्नाकर सदृश गद्यग्रन्थ आ महाकवि विद्यापतिक देसिल वयना पदावली देखि चमत्कृत छलथि। तें 1919 ई. मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली भाषाक पढ़ाइ स्वीकृत कयल गेल। एमहर पुरना बिहार प्रांत मे सेहो स्कूल, कॉलेज आ विश्वविद्यालय खुजब शुरू भेल। महाराजक धनक कृपा सँ सभठाम मैथिली भाषा कें विषय मे स्वीकृति भेटि गेलै। आब मैथिली महासभा सँ प्रमाणित विद्वान, बाबू साहेब एवं दरबारी पंडितक रचल कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, लेख आदि उपलब्ध रहबे करै। सभटा मैथिली भाषाक पाठ्यक्रम मे सम्मिलित भ' गेल। अहि तरहें मैथिली भाषा कनिएटा टोल आ कनिएटा संसार मे समटाइत गेल। सुच्चा मैथिलक स्वभाव आ स्वभाव सँ उपजल अहंकार। हुनकहिटा कविता, कथा, लेख आदि मैथिलीक प्रमाणित भाषा बनल। तकर प्रतिफल भेलै। मिथिलाक अधिकांश बासीक भाषा मैथिली नहि सहज उपलब्ध हिन्दी भाषा भऽ गेल।

हम श्रोता आ दिनेश बाबू वक्ता। हुनकर विवेचना हमरा बहुत

किछु एहन जानकारी सँ अवगत करा रहल छल जकर ज्ञान हमरा पहिने सँ नहि रहए। मैथिली साहित्य जगत मे हमर आगमन नव छल। पता नहि किएक, दिनेश बाबू जाहि तरहक जानकारी प्रेषित क' रहल छलाह हमर मोन केँ तीत कऽ देने छल। कियो रूप मे होथि, मैथिली भाषाक सेवा केनिहार हमर प्रणम्य रहथि। हम चुपे रहि दिनेश बाबूक कथन कें श्रवण कऽ रहल छलहुँ।

दिनेश बाबू धाराप्रवाह बजैत-बजैत थाकि गेल रहथि। कनेकाल तक ओ विश्राम केलनि। तखन फेर सँ ऊर्जा संचित क' कहब प्रारम्भ केलनि–बीसवीं सदीक आरम्भ सँ साठि ईस्वी तक बहुतो मैथिली भाषाक रचनाकार एहनो भेलाह जे सभ तरहें स्वतन्त्र रहि रचना केलनि। एकटा लेखकक कृति एतेक ने प्रशंसनीय पठनीय भेलनि जे हुनकर पोथी दुरागमन काल कन्याक पेटार मे साँठल जाय लागल। एक तरहेँ विद्यापतिक बाद मैथिली भाषा कें प्राणवान बनबै मे ओहि लेखकक अवदान कें बिसरल नहि जा सकैए। एकटा दोसर लेखक जे बाद मे हिन्दी भाषाक यशस्वी कथाकार एवं कवि बनि सम्पूर्ण भारत मे प्रसिद्ध भेलाह तिनकर हम चर्चा करब। ओ लेखक मिथिलाक छलाह, मैथिल छलाह आ अपन जीवनक आरम्भ मे मैथिली भाषा मे कविताक रचना केलनि, उपन्यास लिखलनि जकरा आइयो जखन पढ़ैत छी तऽ आश्चर्य होइए। जँ ओहन लेखक समुदाय कें मान्यता भेटल रहितैक, प्रोत्साहित कयल जइतैक तऽ आइ मैथिलीओ भाषा मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरद चन्द्र चट्टोपाध्याय भेल रहितैक। मुदा हुनका सभ कें भेटलनि की? भेटलनि घृणा, ईर्ष्या, भर्त्सना आ अहंकार मे डूबल दुतकार।

यद्यपि इतिहास कें स्मरण करब एक तरहक सांस्कृतिक चेतना मानल गेलए। तथापि हम कहब जे इतिहास कें इतिहासे रह' दिऔ। जाहि भाषाक विकासक समय नींव कमजोर पड़ि गेल होअय तकरा चाहिओ कें बिसरब मुश्किल अछि, तथापि हम विचार देब जे एकरा बिसरबे नीक हैत। बीतल समय जे इतिहास बनि गेलए तकर जड़ि मे छल हमर–अहाँक स्वभाव। भिखमंगा कतबो ने अमीर बनि जाय ओ भीख माँगब नहि छोड़त; जुआरी कतबो ने धन जुआ मे हारि जाय ओ जुआ खेलब नहि छोड़त। तहिना अहंकारी कें कतबो ने बुद्धि, विवेकक पाठ पढ़ाओल जाय ओ अपन अहंकार कें नहि छोड़त। समय मे सभ किछु बदलि गेलैए।

राजनीति, साहित्य, व्यापार इत्यादि सभ किछु कम्प्यूटरक पेट मे समा चुकलैए। तकरबादो किछु एहन प्रसंग छैक जाहि मे बदलाब नहि एलैए। एखनो पुस्तक छपि रहलैए, बाजार मे आबि रहलैए आ तकर बिक्री भ' रहलैए। कम्प्यूटर युग पुस्तकक प्रकाशन कें रोकि नहि सकलैए। ओहि संदर्भ मे हमसभ जखन मैथिली भाषाक पोथी-पत्रिका दिस तकैत छी तखन एकर दशा देखि दुख होइए, लाज होइए। तें एकर एतेक विश्लेषण। मैथिली भाषाक विकासक पथ मे पंडित स्वभाव एखनो अर्चन बनले छैक। मुन्नी बाइक गीत 'मोरी अटरिया मे आना बलमजी, तनी देखा-देखी हुइ जाय' गीत कें सुनितहि मैथिल नामक पंडित कान मे अंगुरी पैसा लेताह। मुदा विद्यापतिक गीत 'पिया मोरा बालक, हम तरुणी गे, कोन तप चुकलहुँ, भेलौं जननी गे' नामक गीत सुनि विभोर भऽ जेताह। ई विरोधाभास पंडितक स्वभाव मे समायल अछि। बचलाहा सुच्चा मैथिलक स्वभाव मे मात्र घृणा, ईर्ष्या, दोसरा कें कुचेष्टा करैक अलावा आओर किछु नहि छैक।

—बहुतो समय बीति गेलै। बाकियो समय बीति रहलैए। हिन्दीक एकटा गीत छै—''जिन्दगी के सफर में गुजर जाते हैं जो मुकाम, ओ फिर नहीं आते।'' जे बीति गेलै तकरा लेल कतबो ने कपार फोड़ब ओ आपस नहिए एतै। तें लोक कें कहैत सुनबै—लेभरायल सतरंजी कें झाड़ैक परिश्रम सँ नीक ओहि पर बैसि जाह। जखन उठिह' तखन पोन झाड़ि लिह'। पाठकक समस्या निराशाक भाव कें सत्य बना रहलैए। हजारो स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय मे मैथिली भाषाक पढ़ाइ होइत छैक। मैथिली भाषा मे एम.ए., पी-एच.डी., डी.लिट्क डिग्री भेटैत छैक। आइ.ए.एस., आइ.पी.एस., एलाइड नामक उच्चतम योग्यताक परीक्षा मे मैथिली भाषा कें मान्यता प्राप्त छै। तकरबादो मैथिलीक पाठक किएक ने छैक?

दिनेश बाबू एकतरफा बाजि रहल छलाह। हम सुनि रहल छलहुँ। सुनैत-सुनैत हमर धैर्य जवाब दऽ देलक। कहलियनि—तखन हम जाहि समस्या लऽ कऽ अहाँ लग एलहुँए तकर निदान नहिए ने छैक, सयह हम बूझि लिअ'?

दिनेश बाबू उत्तेजित नहि रहथि। स्थिरे भेल रहलाह तखन कहलनि—अहाँ एना अगुताउ नहि। धैर्य राखू। हमरा लोकनि बितलाहा समयक समीक्षा केलहुँए। आब आब'वला समय पर दृष्टिपात करिऔक। सुच्चा मैथिलक

सोच सँ अलग हजारक-हजार मैथिल युवक कें अपन मातृभाषा दिस ध्यान आकृष्ट भऽ रहलनिहएँ। अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषाक प्रति शत्रुता नहि, मित्रता भाव रखैत ओ सभ अपन मैथिली भाषाक विकास लेल तत्पर भ' रहलाए। बिहार एवं नेपाल, दुनू ठाम मैथिली पुस्तकक बाढ़ि आबि गेलैए। हमरा जे भेटैए ताहि मे सँ कोनो-कोनो कविता, कथा पढ़ि कऽ हमरा तृप्ति भेटैए। बाजार मे एहनो मैथिलीभाषाक पत्रिका कें बिकाइत देखलियै जकर कलेवर, साज-सज्जा चुम्बक जकाँ हमरा आकर्षित करैए। विज्ञापन पत्रिकाक रक्त संचालन लेल आवश्यक होइत छैक। एहनो मैथिली भाषाक पत्रिका पर हमर नजरि गेलए जाहि मे विज्ञापन भरल छैक। प्रवासी मैथिल मे सेहो विद्यापति समारोह करक प्रवृत्ति जगलैए। हमरा एकटा बात मोन पड़ैए। हमर छोट बालक विदेश मे छथि। हुनके आग्रह पर हम जापान गेल रही। जापानक राजधानी टोक्योक हवाइ अड्डाक देवाल पर मधुबनी पेंटिंग टाँगल देखने रहियैक। मधुबनी पेंटिंग अर्थात् मिथिलाक चित्रकला अपन मौलिकता सँ, अपन विशेषता सँ संसारक चित्रकला विशेषज्ञक हृदय मे अपन स्थान बना चुकलैए। तें कहलहुँ जे अधैर्य नहि होउ। मैथिली भाषाक कंठ दबनिहार अपने-आप भुतिया कें हरदा बाजि देताह। जाति एवं सम्प्रदाय बिहीन मिथिलाक नवयुवक कें अपन मातृभाषा लेल ममत्व जागि रहलैए। समय लगतै, मुदा एकर उज्ज्वल भविष्य एबे करतै। भाषाक कोमलता, मधुरता फूल बनि अपन सौरभ सँ, अपन सुगंध सँ समग्र मिथिला मे गमगम करतै तकर हम विश्वास दिआबैत छी। सम्प्रति अहाँ अपन लिखल उपन्यास लेल पाठक ताकि रहलहुएँ। हम एकटा संस्थाक नाम जनैत छी जत' एखन तक सुच्चा मैथिल नहि पहुँचलैथ अछि।

दिनेश बाबू अपन कथन कें पूर्ण नहि कऽ सकलाह। समय बहुत बीति चुकल रहै। चारि बाजि गेल रहैक। अपाहिज क्लबक नियमित बैसारक समय भ' गेल छलैक। दिनेश बाबूक मकान मे निकलल कनेटा दुआरि। वएह स्थान छल अपाहिज क्लबक दलान। क्लबक कर्मठ सदस्य देवचंद, नवीन चौधरी, त्रिलोकी कुमर, दमनकांत आ विदेशर मंडल हहाति पहुँचि गेलाह। कनै पाछाँ साकेत सिंह सेहो अपन हाजरी दर्ज करौलनि।

देवचंदक मुँह फूलल रहनि, माथक पाकल केश छिड़िआयल रहनि

आ नाकक दुनू फोंफी सँ फोंफोक ध्वनि बहार भऽ रहल छलनि। मुदा नवीन चौधरी, त्रिलोकी कुमर एवं विदेशर मंडलक चेहरा सँ एना उत्साह दमकि रहल छलनि जेना तीनू कोनो बाजी जीत क' आयल होथि। दिनेश बाबू कें चिन्ता भेलनि। ओ देवचंदक लग मे पहुँचि कऽ पुछलखिन–की भेलए? एना कांतिबिहीन किएक बनल छी?

देवचंदक मुँह सँ एकोटा आखर बाहर नहि भेल। अपाहिज क्लबक सभटा माननीय सदस्य कुर्सी पर बैसलाह। तखन नवीन चौधरी अपसोच करैत कहलथिन–देवचंदक संगे एखन एहन जे अन्हेरवला बाकया भेलनिए तकरा बजलो ने जा सकैए।

त्रिलोकी कुमर बात कें हिलकोरैत टिपलथिन–दिनेश बाबू कागभुसुण्डी त' नहि छथि जे सृष्टिक सभटा बात अपने आप बूझि जेथिन। दिनेश बाबू कें सत्यक साक्षात्कार तऽ करबैए पड़त ने।

विदेशर सेहो नीक वक्ता रहथि, कोना चुप रहितथि। बजला–अपाहिज क्लबक सभटा सदस्य एक दोसराक सुख-दुख मे सहभागी बनक शपथ खा चुकल छथि। देवचंदक उपर कोन तरहक विपत्ति आयल छनि तकर स्पष्टीकरण तऽ हेबेक चाही।

साकेत अपन हाथ ऊपर उठबैत कहलनि–हम विदेसरक कथन सँ सोलह आना सहमति रखैत छी।

बीचहि मे दिनेश बाबू देवचंद कें टोकलनि–बाजू ने, की भेलए? अहाँक आँखि मे नोर किएक भरलए?

देवचंद सप्लाइ इन्सपेक्टरक पद सँ कार्यमुक्त भेल रहथि। प्रांत मे बहुतो सप्लाइ इन्सपेक्टर भेलइए। मुदा देवचंदक मुकाबला कर'वला आइ तक कोनो सप्लाइ इन्सपेक्टर ने भेल आ ने हैत। देवचंदक अकबाल एतेक ने अधिक रहनि जे हिनकर डरे कइएकटा बनियाँ कें धोतीए मे लग्घी भऽ जाइक। समूचा बाजार देवचंदक आगमन सँ आतंकित रहैत छल। पता नहि कोन गलती पकड़त आ ठामे दोकानक लाइसेन्स केन्सिल कऽ देत। बाजारक सभटा व्यापारी दिस सँ देवचंद के बान्हल अगौं भेटैत रहनि। व्यवस्था एहन जे तहूँ व्यापार करैत रह आ हमरो निश्चिन्त रह दे। देवचंद अपन कनियाँ कें बेसुमार लभ करैत छलथिन। नौकरी करैक अवधि मे देवचंद बोराक-बोरा चीनी आ कन्टरक कन्टर खाँटी कड़ुक तेल आनि कनियाँ कें हाक देथिन–कहाँ छी यै काश्मीरक कली। हैए लिअ। अपनहुँ

खाउ आ हित अपेक्षित कें सेहो खुआउ। लोकक उपकार करू। धर्मशास्त्र कहैए जे परोपकार सँ बढ़ि कऽ कोनोटा धर्म धरती पर नहि अछि।

नौकरी करैत काल देवचंद चानी पिटैत रहलाह। मुदा जखन रिटायर भेलाह हुनकर आमदनी कोनियाँ मे समटा गेलनि। ओ अपन बहसल खर्चा कें कन्ट्रोल मे अनलनि। पछिला परिश्रम सँ कमायल धन सँ ओ जमीन किनलनि आ दू तल्ला भवन बनबौलनि। तकरबाद जे भेल से ईश्वरक मर्जी। एकाएक देवचंद कें संसार सँ विरक्ति भऽ गेलनि। संसार नश्वर थिक, संसार माया थिक। मायाक फँसरी सँ बाँचब जरूरी अछि। प्रभुक सुमिरन करब तखने अगिला जन्म मे फेर सँ सप्लाइ इन्सपेक्टर बनि सकब। देवचंद बोतलेटा नहि, माँउस, माँछ, अंडा, पियाजु, लहसुन सभ किछु तियागि एकादशीक पारण उसिनल अल्हुआ सँ करऽ लगलाह।

मुदा देवचंदक चकोरी, मोहल्लाक मोदियानि, खाजा मिठाइ सँ भरल चंगेरा जकाँ चतरल हुनकर काया, सभ तरहक संयम सँ हटले रहलीह। हुनका मे कोनो तरहक परिवर्त्तन नहि भेलनि। देवचंदक कनियाँक नैहर कोशीक ठाप महक कोनो गाम मे रहनि। कनसारक तपत बालु मे लाबा बनल तमहा चूड़ा आ भूजल टेंगरा माँछक सुआद एखनो तक हुनकर जिह्वा मे बनले रहलनि। ओ चिचिया-चिचिया कें अपन हित-अपेक्षितकें कहथिन–सभटा दोख कुशेसर महादेवक पुजेगरीक। वएह जनपिट्टा हमर नसीब कें हरि लेलक। हमर स्वामी कें बाबाजी बना देलक। हमर जीवनक सुख-मनोरथ कें पाहुन बना देलक। मार बाढ़नि पुजेगरी कें। भोलेनाथ ओकरो माथ पर एक दिन बज्जर खसाए देथिन तकर हम सराप दैत छियै।

दिनेश बाबूक टोकारीक बादो देवचंद किछु नहि बजलाह। ओ मूड़ी गोंतने सुबकैत रहलाह। नवीन बाबू पी.डब्लू.डी.क जूनियर इन्जीनियर पद सँ रिटायर भेल रहथि। आर्थिक दृष्टिए सभ सँ अधिक मजबूत, मिलनसार मुदा सही समय पाबि बिठुआ काटए मे ओस्ताद। दिनेश बाबू दिस घुमैत नवीन बाबू कहलथिन–देवचंद सँ किएक किछु पुछै छियनि। ई किछुओ बाज' जोकरक नहि छथि। हम सभटा बात कहब। सभ दिन जकाँ अपाहिज क्लब ऐबा सँ पूर्व हम देवचंद कें संग कर' हिनकर डेरा पर पहुँचलहुँ। ओतुका वातावरण गर्म रहैक। देवचंदक कनियाँ अधिक काल अपन कटु वचन सँ हिनकर हृदय कें मर्माहत करैत रहलनिए से बात जग विदित अछि, सभ कें बुझले अछि। आइ जखन हम हिनका लग पहुँचल

रही ताहि काल हिनक प्रियदर्शिनी हिनका उपर हाथ उठा देने छलीह।

साकेत सिंह पोस्ट-ऑफिस सँ अवकाश प्राप्त कयने रहथि। सरल, सज्जन, मृदुभाषी साकेत तरहत्थी सँ दुनू कान झँपैत बजला-राम, राम। पत्नी पति पर हाथ उठाबथि! घनघोर कलियुग।

विदेशर मंडल रेलवे कर्मचारी रहथि। अवकाश लेलाक बादो फूर्तिगर रहबे करथि। पुछलथिन-मुक्का आ कि थापर?

त्रिलोकी कुमर बेगुसराय जिलाक कोनो गाम मे जनमल छलाह। हुनकर पाकल केश उज्जर नहि भुल्ल रहनि। परिहास कें आँगा ठेलैत विदेसरक जिज्ञासाक पूर्ति केलनि-ने थापर आ ने मुक्का। ठुनका।

दिनेश बाबूक चेहरा सँ चिन्ता विलुप्त भऽ गेलनि। लगभग सय ग्रामक मुस्की ठोर पर पसरि गेलनि। अचंभित भेल कहलनि-हे ईश्वर। मुक्का पचि सकैए। पत्नीक थापर सेहो सहि लेबा मे हर्ज नहि। मुदा ठुनका। ई तऽ घनघोर अपमानवला बात भेलै ने।

दमनकांत पछिले बर्ख मिडिल स्कूलक अध्यापकक पद सँ सेवानिवृत्त भेल रहथि। बहुत आवश्यक भेलहि पर ओ अपन मुँह कें कष्ट दैत छलाह। दमनकांत एकाएक बाजि उठलाह-एक समयक खिस्सा थिक। बाघक बिआहक बरियाती जा रहल छल। बरिआतीक आगाँ बहुतो जानवर नाचि रहल छल। जानवरक झुंड मे एकटा मूस सेहो भाँगरा नाच नाचि रहल छल। मूस कें नचैत देखि दुल्हा बनल बाघ कें आश्चर्य भेलै। आश्चर्यक संग बाघ रंजे माहुर भ' गेल। बाघ मूस लग पहुँचल आ ओकरा कहलकै-बाघक बिआह मे तों मूस भ' क' किएक नाचि रहलैए? मूस जवाब देलकै-श्रीमान्, बिआह सँ पहिने हमहूँ बाघे छलौं।

दमनकांतसँ खिस्सा सुनि देवचंद कें छोड़ि सभटा सदस्यक ठहाका सँ अपाहिज क्लबक दलान डोलि गेल। हँसिते नवीन चौधरी कहलथिन-हमर समक्षे देवचंदक प्राणेश्वरी हिनका ठुनका मारने छलथिन। हिनकर बाँहि पकड़ि हिनका तिरैत हम रस्ता पर अनने रहियनि। ओही काल त्रिलोकी सेहो पहुँचि गेल रहथि। हम तत्काल त्रिलोकी कें सभटा बात कहि देलियनि। हम आ त्रिलोकी एकट्ठे देवचंद कें विचार देलियनि जे पत्नीक ठुनका खेलाक बाद हिनका जीबाक अधिकार नहि छनि। ढोंरही तक पानि मे नाक डुबा कें हिनका प्राण त्यागि देबाक चाहियनि। सभ कियो पुछियनि जे हिनका ई विचार हम आ त्रिलोकी देने छलियनि आ कि नहि?

नवीन चौधरीक शब्द-भेदी वाण सँ घायल देवचंद चौक परहक बुढ़वा साँढ़ जकाँ फुफकारि उठलाह—डूबि कें मरि जाउ? किएक यौ, हम किएक डूबि कऽ मरि जाउ। नवीन बाबू कुसमय हमरा देखि लेलनि तें हमर ढोल पीटि रहलाए। दिनेश बाबू कें छोड़ि दिअनु, ओ भाग्यवान छथि। हुनकर पत्नी सवेर सकाल स्वर्ग चलि गेल छथिन। बाकी एतय जतेक बुढ़बा बैसलए से बाजए जे सभहक घर मे अम्बा छथिन कि नहि? शपथ खा क' सभ बाजथि जे के नहि अपन बहु सँ डेराइए, के नहि कदीमाक तरकारी खाइए। सभहक दशा हमरे जकाँ छनि, तखन हमही किएक डुबि क' मरि जाउ। एक तरहें देखल जाय त' गलती त' हमरे छल ने। ओ पानकट ब्लॉउज सिआब' लेल कहने रहथिन। हमरा मोन नहि रहल। हम मयूरकट ब्लॉउज सिआ कें आनि देलियनि। ताहू पर सँ दर्जी सार एक नंबरक खच्चर। ब्लॉउजक आगाँ दिसुका फान कें ओ बड़ीटा क' देलकै आ ताहू फान मे फूल-पत्तीबला झालरि लगा देलकै। ब्लॉउजकें देखितहि हमर कनियाँक तामसक टेमी लेसा गेलनि। हुनकर तामस सभ तरहें जायज छल। मुदा तामस कने अधिक भऽ गेलनि। एमहरुका पत्नी पति परमेसर होइत छैक। तें हुनका जे काज नहि करक चाहियनि से कऽ देलनि। कहलकै कीने, हम डूबि क' मरि जाउ आ बाकी एतुका सभटा अपाहिज गुलछर्रा उड़बैत रहत।

देवचंदक स्पष्टीकरण सुनि अपाहिज क्लबक तमाम सदस्य अपना कें जप्त नहि राखि सकलाह। सभ एकहि बेर ठिठिया क' हँसि पड़लाह। दमनकांत सेहो खिखिआइते रहलाह, देवचंद बाबूक पत्नीक पानकट आ मयूरकट ब्लॉउजक चर्चा सुनि ओ बजला—हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ि गेलए। तकरा कहऽ दिअ। सभ अपन हँसी पर ब्रेक लगौलनि। दिनेश बाबू कहलथिन—अबस्से कहिऔ।

—नसरुद्दीन एकबेर दुखित पड़लाह। कतबो दवाइ-दारू भेल मुदा हुनकर दुख बढ़िते गेलनि। नसरुद्दीन मरनासन्न भऽ गेलाह। ओ अपन पत्नी कें बजा कऽ आदेश देलथिन जे विवाह काल जेना ओ वस्त्र गहना पहिरने छलीह तहिना सजि-धजि कऽ आबथि आ हुनकर बिछौनक एककात बैसि जाथि। नसरुद्दीनक आदेशक अनुसार पत्नी पूर्ण शृंगार कऽ बिछौन पर बैसि गेलथिन। ताहीकाल नसरुद्दीनक एकटा मित्र हुनकर जिज्ञासा कर' लेल ओतए एलथिन। ओ ओतुका अजीबे दृश्य देखि आश्चर्यचकित

भऽ एकर कारण पुछलथिन। कारण बतबैत नसरुद्दीन कहलथिन–हमर आब बाँचब असम्भव अछि। शीघ्रे हमर प्राण हरण लेल एतय यमदूत औताह। यमदूत हमर पत्नीकें सजल-धजल देखि भऽ सकैए हमरा बिसरि हमर पत्नीए कें पसिन क' लेथि। तखन हमर प्राण बाँचि जायत ने।

अपाहिज क्लबक अहि बेरुका ठहाका एतेक ने जबर्दस्त छल जे सड़क पर जाइत बटोही थकमका गेल। अहि बेरुका ठहाका मे यद्यपि देवचंद संग नहि देलखिन, मुदा हुनकर ठोर अबस्से बिहुँसि गेलनि। देवचंद लोटाक जल सँ आँखिक नोर कें भिजौलनि, गमछा सँ मुँह पोछलनि आ तरोताजा भ' बैसि रहलाह। उपस्थित तमाम अपाहिज क्लबक सदस्य विगलित चिकुर मिलित मुखमंडलक भाव मे आबि अपना आपकें सान्त्वना देलनि।

हम देवचंद दिस तकलहुँ। देवचंद क्रोधक पात्र नहि दयाक पात्र बुझना गेलाह। हम सोचै लेल मजबूर भऽ गेलहुँ जे वृद्धावस्था मे थोड़बो प्रहसन मोन कें मनोरंजिते टा नहि करैत अछि, अरुदा कें सेहो बढ़ा दैत अछि।

दिनेश बाबूक चाकर चाह अनलक। सभ सदस्य चाह पिलनि। कनेककाल लेल अपाहिज क्लबक मंडप मे शान्ति पसरि गेल। अस्त होइत सूर्य अपन लालिमा पसारि फेर भोर हेबे करतै तकर संदेश दऽ गेलाह। ओहने संयत भेल समय मे दिनेश बाबू हमरा दिस घूमि कहब शुरू केलनि–विषयान्तर भ' गेल रही। आब फेर सँ अहाँक आनल समस्या पर विचार करी। अपन देशक राजधानी नई दिल्ली मे केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित एकटा संस्था छैक जतय राष्ट्रभाषा हिन्दीक अलावा अष्टम अनुसूची मे स्वीकृत देशक तमाम आंचलिक भाषाक पुस्तक कें प्रकाशित करैक प्रावधान छैक। जहाँ तक हमरा बुझल अछि ई संस्था जे एखनो मुग्धावस्था मे अछि, सुच्चा मैथिल एकर कौमार्य कें भग्न नहि क' पौलनिए, मैथिली भाषा लेल उत्तम काज क' सकैए। ई संस्था आंचलिक भाषाक पुस्तकक प्रकाशनेटा नहि, एकर वितरण एवं बिक्री सेहो करैए। राजधानी मे आ तकर अलावा आन-आन शहर मे संस्था अपना स्तर सँ पुस्तक मेला लगबैए, देशक हजारो पुस्तकालय मे पुस्तकक वितरण करैए आ विदेश मे स्थापित अपन दूतावास मे सेहो पुस्तक पठबैए। अहि संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकक कागज, छपाइ त' उत्तम होइते छैक, पुस्तकक

मूल्य सेहो बहुत कम रहैत छैक। मैथिली सेहो अष्टम अनुसूची मे स्वीकृत भाषा अछि। मुदा मैथिली भाषाक पुस्तकक प्रकाशन ई संस्था सम्प्रति नहि क' रहलैए। अहि संस्था मे पुस्तक प्रकाशन लेल एकटा प्रक्रिया होइत छैक। जँ अहाँ मैथिली भाषाक उपकार करक इच्छा रखैत छी, संगहि अपन लिखल उपन्यासक पाठक ताकक लेल अधीर छी तऽ हम अहाँ कें विचार देब जे दिल्ली जाउ, संस्था मे जा क' एकर आवश्यक प्रक्रिया कें पूर्ति करू आ मैथिली भाषाक पुस्तकक प्रकाशन जोगार लगाउ।

उत्साहित भऽ कऽ हम दिनेश बाबू कें कहलियनि–अहाँक सुझाव हमरा एकटा दिशा देलकए। हम शीघ्रातिशीघ्र नई दिल्ली जयबे करब।

हमर उत्साह पर एक बाल्टी जल ढारैत त्रिलोकी कुमर बजलाह–इच्छा भेल आ दिल्ली पहुँच गेलहुँ? दिल्ली जेबाक लेल आरक्षित रेल टिकट चाही, से काज ओहिना भेल जेना आकाशक तरेगन कें छुअब। तीन मास अगता टिकट कटब' पड़त। तखनो टिकट भेटत आर.ए.सी.।

हम असहाय भेल विदेसर दिश तकलहुँ। विदेसर कहलनि–सही मे, हम रेलवेक कर्मचारी रही आ रेलवेक पेंशन पाबि सम्प्रति जीवन निर्वाह क' रहलहुँए। मुदा हमहूँ अहाँक मदति नहि क' सकब। रेलवे टिकटक आरक्षण मे भ्रष्टाचार आकाश तक ठेकल छैक। टिकट लेल अहाँ कें कोनो दलालक खोज करऽ पड़त।

दलाल कत' भेटत? अपाहिज क्लबक सभटा सदस्य मौनव्रत धारण कऽ लेलनि। हम सभहक मुँह दिस तकैत उठि क' बिदा भ' गेलहुँ।

तीन

अपाहिज क्लब सँ आपस डेरा जा रहल छलहुँ। मोन मे हरिवंश राय 'बच्चन'क एकटा कविता घुरिया रहल छल–''कुछ किए बिना किसी की जय-जयकार नहीं होती। कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती।'' दिल्ली जयबाक चाही, दिल्ली जेबे करब। दिनेश बाबूक देल विचार सही छनि। मुदा दिल्ली जायब कोना? रेल टिकट भेटत कोना? दलालक मुँह-कान केहन होइत छैक? अही तरहक सोच मोन कें डगमगौने रहए ताही काल एकटा आवाज सुनलियै। पाछाँ घुमि क' तकलहुँ। देवचंद हाक दऽ रहल छलाह–हयौ, रुकि जाउ। सुनैत छी ने, रुकि जाउ।

साँझ भऽ गेल रहै। हम तेज डेग सँ अपना डेरा जा रहल छलहुँ। देवचंदक गर्द सुनि थकमका कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ। मौसम गर्म रहैक। घाम सँ लथपथ अपसियाँत देवचंद हमरा लग पहुँचि हकम' लगलाह। जखन हुनक स्वाँस गति स्थिर भेलनि तखन कहलनि—जँ अहाँ दिल्ली जयबाक विचार पक्का क' लेने होइ तऽ मुँह खोलू। हम अहाँक दिल्ली यात्रा लेल बर्थक आरक्षण करबा सकैत छी। हम छी अकबाली लोक। हमर पावर कतेकटा अछि से देखबै तऽ अहाँ कें चोन्हरी लागि जायत।

देवचंदक विशेष परिचय हमरा नहि रहए। अपाहिज क्लबक सदस्य रहथि मात्र ततबेटा हुनका हम चिन्हैत रहियनि। कनेकाल पहिने अपाहिज क्लब मे जोकरक पाट मे जाहि अपाहिज कें हम देखने रही ताही सँ भिन्न एखन मूल रूप मे देवचंद कें देखि रहल छलहुँ। विस्मित होयब हमरा लेल स्वभाविके रहए। बिना किछु बजने हम एकटक देवचंदक कपार पर ठढ़का चाननक मध्य पघिलल सेनूरक ठोप कें निहारैत रहलहुँ। देवचंदक आँखिक डिम्हा नाचऽ लगलनि। ओ अगुताइत कहलनि—चुप भेल ठाढ़ नहि रहू। बाजू, बाजू ने। जँ टिकट चाही त' हमर शर्त मान' पड़त। शर्त ई जे एखन हम जतय जा रहल छी हमरा संग अहाँ कें जाय पड़त।

हमर पत्नीक नैहर मे अष्टजाम भऽ रहल छलनि। ओ अष्टजाम मे भाग लेब' अपन गाम गेल रहथि। एखन डेरा मे हम एसगरे रही। हमरा पाकशास्त्रक थोड़ेक लूरि। रतुका भोजन लेल हम रोटी-तरकारी अपनहि बनालैत छलहुँ। तें देवचंदक संग जयबा मे कोनो तरहक अड़चन नहि रहए। ओहुना दिल्ली जयबा लेल रेल टिकट प्राप्त करक व्यग्रता एतेक ने तीब्र रहए जे बिनु बिलम्ब कयने हम देवचंदक पाछाँ-पाछाँ बिदा भऽ गेलहुँ।

लहेरियासराय मे गुदरी नामक बाजार। आरम्भ सँ अंत तक गुदरी भेल दृश्य। जँहपटार दोकान, जँहपटार लोकक भीड़। उत्तर सँ दक्षिण माथे बाजार मे प्रवेश कयल। मुर्गीक माँउस बेचऽवला कसाइक दोकान। तकर बाद पतियानी मे पसरल आलू-पियाजुक दोकान। एकटा दोकानक आगाँ देवचंद ठाढ़ भऽ गेलाह। दोकान आधा लग्गा चौड़ा, मुदा खिखिरक बील जकाँ गहींर। दोकान मे बैसलि छलीह एकटा महिला। महिलाक आगाँ मे तराजू राखल छल। महिलाक एक कात आलू आ दोसर कात पियाजुक ढेरी। महिला अपन चढ़ैत जवानीक समय अबस्से

सौन्दर्यक महारानी रहल हेती तेहन अन्दाज भेल। मुदा एखन हुनक जवानी ढलान पर रहनि। गोदना सँ छाड़ल गोरकी बाँहि आ सींथ मे सेनूरक दाग मात्र एतबे महिलाक सिंगार रहि गेल रहए। देवचंद कें देखितहि महिला जोर सँ बजलीह—आलू लेबहिन आ कि पियाज। बाज रौ मनसा, तोहर बहु की अनै लेल कहलकौए?

देवचंद बिना किछु बजने हुल द' दोकान मे पैसि गेलाह। कोनो दोसर गहिकी नहि रहै। देवचंद महिलाक देह से सटि कऽ बैसि गेलाह आ हुनकर कान मे फुसफुसाय लगलाह। देवचंदक व्यवहार अजीबे रहनि। प्रायः निर्लज्जे कें असभ्यो कहल जाइत छैक। आलू-पियाजुक गंध मे फेंटल महिलाक देहक गंध हमर नाक तक पहुँचि गेल रहए। हम मुँह फेरि लेलहुँ। कनिए कालक बाद तीर जकाँ सनसनाइत देवचंद दोकान सँ बाहर निकलला आ हमरा दिस बिनु तकने सोझे सामने बिदा भ' गेलाह। हम करितहुँ की? हुनकर पछोर धऽ लेलहुँ।

चौराहा लग पश्चिम दिशा मे घुमलहुँ। फेर पतिआनी मे छोट-छोट दोकान। सभ दोकान मे केराक घौर टाँगल। सभहक सामने सोहल, बिनु सोहल नारियलक ढेरी। मंदिर सँ कनिकबे पहिने देवचंद दाहिना कातक गली मे ढुकला। गली मे नाला। नाला के टपैत आगाँ दिस जाइत रहलहुँ। देवचंद एकाएक ठाढ़ भ' गेलाह। ओतय एकटा मुनिगाक गाछ। गाछक पात झरल, डारि टूटल, सभटा सांगह हकन कनैत। तकरबादो अकड़ि कऽ मुँह दुसैत गाछ ठाढ़े रहए। गाछक कतबहि मे एकटा खोपड़ी। खोपड़ीक दोसरकात एक लग्गा लम्बा, एक लग्गा चौड़ा आंगन। आंगनक कतबहि मे रेलवे गुमटीक आकार मे बनल कनिएटा पक्का घर। देवचंद घरक जंजीर खोललनि। घर अन्हार, घर मे एकोटा खिड़की नहि। देवचंद कें जेना कोठलीक सभ वस्तु देखले होनि, कतहु सँ पटिया आनि ओछौलनि आ हमरा आदेश देलनि—बैसि जाउ।

हमरा बैस' सँ पहिने देवचंद पटिया पर बैसैत कहलनि—ई घर गुलबियाक छियै। पहिने फूसक घर रहै। हमहीं एकरा पक्का घर बना देलियै।

गुलबिया के? प्रश्न हमर माथ मे चक्कर काटऽ लागल। मुदा बिनु पूछनहि देवचंद 'गुलबिया के' तकर जवाब हाजिर केलनि—सही मे अहाँ गुलबिया कें कोना चिन्हबै। सकल पदारथ अहि जग माही, करमहीन नर पाबत नाही। हयौ, अहि जगत मे कतेक तरहक सुआद भरल छै तकर

जानकारी अहाँ कें कत' सँ हैत। अहाँक दौड़ डेरा सँ अपाहिज क्लब आ अपाहिज क्लब सँ डेरा। अहाँक दुनियाँ एतबेटा। आलूक दोकानबाली जकरा लग हम बैसल रही सैह अछि गुलबिया। गुलबियाक साँय हमर यार। ओ अहि इलाकाक सभ सँ पैघ तांत्रिक आ हमर ओस्तादो छथि। ओस्ताद कें भूत पकड़ैक मंत्र सिद्ध छैक। आइ अमावस्याक राति छियै ने। गुलबिया बतौलकए जे ओस्ताद आइयो कोनो छौंड़ीक देह मे पैसल भूत कें पकड़थिन, फेर ओकरा शीशाक जार मे बंद करथिन आ तखन कनखोरिक श्मशानक पीपरक गाछ मे काँटी सँ ठोकि देथिन। ओस्ताद ओही पीपरक गाछ मे बहुतो भूत कें काँटी सँ ठोकने छथिन। अजुको भूत ओही गाछ मे ठोकायत आ बाप-बाप करत।

देवचंदक देल उपदेश एवं भर्त्सना दुनू कें पचबै मे हमरा कष्ट भऽ रहल छल। ओ जाहि तरहक विषयक बखान कऽ रहल छलाह तकर जड़ि-छीप, हम किछुओ ने बुझि रहल छलहुँ। कोठली आ कोठलीक बाहर सँ आबैत दुर्गन्धक कारणे हमरा श्वाँस लेब कठिन भऽ रहल छल। मुदा देवचंद मस्ती मे रहथि। हुनका हमर बेकलता सँ कोन मतलब? ओ बजिते रहलाह—हमरा नव-नव विद्या सिखैक लुतुक अछि। गुलबियाक साँय कें कहलियै जे जँ ओ हमरा भूत पकड़ैवला मंत्र सिखा देत त' हम अपन अर्जित सम्पत्तिक आधा ओकरा दान क' देबै। ओस्ताद गछि लेलकए। अहि मंतर सिखैक एकटा खास मुहूर्त होइत छैक। ओ मुहूर्त कहिया औतइ से हमरा नहि बुझलए। तें अमावस्याक राति जखन ओस्ताद भूत पकड़ैक लीला करैत छथि हम सावधान रहैत छी। हम सतत् प्रयास मे छी, ई विद्या सीख कें रहब तकरा अहाँ निश्चय मानू।

बाजक लेल मुँह खोल' पड़ैत छैक। मुदा देवचंदक करिश्मा सुनि क' हम एहन मनोदशा मे पहुँचि गेल रही जे हमर चौहु अलगिए ने रहल छल। तरकारी, फल आ आन-आन वस्तु किनै लेल कइएक बेरि गुदरी बाजारक चक्कर कटने रही। गुदरी बाजार मे बहुतो गली, सोन्हि छैक तकरा द' बुझल छल। मुदा बहुक हाथे ठुनका खेनिहार देवचंदक संग जाहि सोन्हि मे पैसल रही आ जाहि तरहक तमासा देखैत बात सम्प्रति हम सुनि रहल छलहुँ तकर कल्पना कहिओ ने कयने रही। मोनक भीतर दोसर मोन। ओ कहि रहल छल—बौआ रौ बौआ! फँसि गेल छें। किछु बाज नहि। देवचंदक पावर कें देखैत रह।

हमरा सन फालतू जीवन जिनिहार मनुक्खक प्रति अफसोच करैत देवचंद कहलनि—की अहाँ उपन्यास-तुपन्यास लिखि क' अपन समय कें दूरि करैत छी। राम, राम! इहो कोनो काज भेलै! हमर सोहबत मे एलहुँए तऽ हम किछु बुद्धि दैत छी तकर फायदा उठाउ। हयौ, छौंड़ीक देह मे भूत कखन सन्हियाइत छै? जखन छौंड़ीक देह सँ फागुन मासक महुआक गंध बहराइत छै। महुआक मादक सुगंध बड़का लोकक घर मे, बड़का शहर मे नहि भेटत। अहि तरहक सुगंधि बहराइक स्थान भेल देहात, देहातक गाछी-बिरछी, खोपड़ी-झोपड़ी। जखने छौंड़ीक देह मे जवानी अपन टेमी बारलक, भूत ओकर देह मे प्रवेश केलक, छौंड़ी कें उठा-उठा क' पटकलक। ओहन बदमास भूत कें पकड़ब एकटा विद्या भेल, एकटा इल्म भेल। हम विचार देब जे अहूँ भूत पकड़ैक मंतर सीख लिअ। परोपकारक संग अपनहुँ मोरब्बा खाइत रहब, जीवन कें सार्थक बनबैत रहब।

देवचंदक देल बुद्धि हमरा कष्ट द' रहल छल, हमर मानसिक संतुलन मे बिकार उत्पन्न कऽ रहल छल। देवचंद अनवरत बाजिए रहल छलाह। मुदा हुनकर बाज' मे व्यवधान भेलनि। उत्तर-पश्चिम कोन दिस सँ झालि-मृदंगक आवाज ओतय आब' लगलै। आवाज कें सुनितहि देवचंद हड़बड़ाइत उठलाह आ हमर हाथ पकड़ि हमरा तिरैत कोठली सँ बाहर आँगन आ आँगन सँ बाहर गलीक मुँहथरि लग पहुँचा देलनि।

अन्हार भऽ गेल रहै, मुदा तइयो सभकिछु देखबा मे आबि रहल छलै। उत्तर दिस सँ जे गली आयल रहै से पश्चिम दिस मुड़ि गेल रहै। गली संकीर्ण, उटपटांग, टेढ़-टुढ़, बुझि लिअ मूसक बील जकाँ। थरथराइत आवाज मे देवचंद कहलनि—अहाँ नसीबवला छी। आइ अहाँ जे किछु प्रत्यक्ष देखबै तकरा देखै लेल मनुक्ख कें कइएकटा जन्म लिअ पड़ैत छैक। अमावस्येक राति मे भूत-प्रेत, डाइन-योगीनवला काज कयल जाइत छै।

झालि-मृदंगवला ध्वनि क्रमशः तीब्र होइत-होइत कर्कश आवाज मे बदलि गेल। आहि आवाज मे फेंटल एकटा आओरो आवाज, जेना भूत-प्रेत संगे कियो उठा-पटक क' रहल होअय। देवचंदक आवभाव मे एकदमे सँ परिवर्त्तन भ' गेल रहनि। हुनकर समूचा शरीर मे थरथरी पैसि गेल छलनि। कोनो मंत्रक जाप करैत देवचंद कूदि-कूदि कऽ हमरा कहि रहल छलाह—केहनो ने नाँगट भूत-प्रेत होअय, हमर ओस्तादक सामने

टिक नहि सकैए।

अन्हार गली सँ एक-एक क' मंडली बाहर आबऽ लागल। पहिल मनुक्ख मुरेठा एना कें बन्हने छल जाहि सँ ओकर चेहरा झँपा गेल रहै। ओ दुनू हाथे पैघ साइजक एकटा सरबा पकड़ने रहए। सरबा सँ विषाक्त दुर्गंधवला धुआँ निकलि रहल छलै। धुआँ पसरि क' गली कें आरो अन्हार कऽ देलकै। तकर बाद जे मनुक्ख सामने आयल सेहो लाल रंगक मुरेठा बन्हने रहए। मुरेठाक ऊपर एकटा शीशाक जार रहै जकरा ओ दुनू हाथे कसि कें पकड़ने छल। तुरंते देवचंद अपन जानकारी हमरा लग प्रेषित केलनि–अही शीशाक जार मे भूत कैद अछि।

आब गली सँ बाहर निकललाह देवचंदक ओस्ताद। ओस्तादक असलीका चेहरा जे किछु होनि, एखन ओ भयंकर आकृतिवला राक्षसक पाट मे रहथि। समूचा चेहरा कारी रंग सँ पोतल, ठाम-ठाम उज्जर रंगक छींटा, ललाटक रंग सुर्ख लाल जाहि ठाम कारी रंगक फीता बान्हल छलै। ओस्तादक आँखि लाल-टरेस, छाती उघार जतय गुच्छाक-गुच्छा कारी केश पसरल आ गरदनि मे हड्डीक माला। हुनकर डाँड़ मे कारी रंगक लुंगी मजबूत बेल्ट सँ गछाड़ल, ओस्ताद हब्सी सदृश रहथि। ओस्तादक बाम हाथ मे नरमुंड आ दहीन हाथ मे तेल पिऔल लम्बा बेंतक छड़ी रहनि। ओस्ताद अपन हाथक छड़ी कें नचबैत, पटकैत हो होक' हुंकारैत चारूकात घूमि-घूमि कऽ नाचि रहल छलाह।

ओस्तादक ठीक पाछाँ ओ अभागलि छौंड़ी छलि जकरा पछिला एक बरख सँ भूत सबारी कसने रहै। दू टा मजबूत जनानी छौंड़ीक दुनूकात सँ बाँहि पकड़ने छल। जनानी कें डाइन कहब उचित नहि हैत, मुदा दुनूक आकृति डेराओन अबस्से रहै। भूताहि छौंड़ीक झोंटा छिड़िआयल, देहक आंगी मसकल, नुआ जहिं-तहिं फाटल। अर्द्धनग्न छौंड़ी बदहवास, बेहोशक स्थिति मे दुनू जनानीक बीच टाँगलि जा रहल छलि। छौंड़ीक पाछाँ चारि-पाँचटा आरो मौगी-मनसा। सभहक अंत मे झालि-मृदंग बजबैवला दू टा मनुक्ख।

करीब दू लग्गा पाछाँ हटल उदास आ कँपैत ओ मनुक्ख आबि रहल छल जकर बेटीक देह सँ भूत भगबैक सभटा तमासा भऽ रहल छलै। झुंड पश्चिम गली दिस बिदा भेल। देवचंदक पाछाँ-पाछाँ हमहूँ डेग उठौलहुँ। देवचंद बेटीक बाप मे सटैत पुछलथिन-भूत छलै आ कि प्रेत?

बेटीक बापक जवाब छल—ने भूत आ ने प्रेत। चुड़ैल सेहो नहि। ई छल पिचास। अपन देशक नहि, अपन जातिक सेहो नहि। कोनो दूर देश सँ आयल रहए। हमर बेटी डोमनी, एकर दू बेर बिआह करौलियै। मुदा एकर वर एकरा डेब नहि सकलै। कोना डेबितैक, डोमनी गात मे त' चंडलबा पिचास सन्हिया गेल रहै। छौंड़ी कें एको क्षण लेल चैन नहि। दिन-राति भाउवे खेलाइत रहलै। डोमनी कें कतेको जगह मे लऽ जा कें झाड़-फूक करबौलियै, ओझा-गुणी सँ जड़ी-बूट्टी खुऔलियै, मुदा सूइक नोक बरोबरिक फायदा नहि भेलै। तखन कियो चरणदास उर्फ चरणी तांत्रिकक अता-पता बतौलक। चरणी तांत्रिकक पयर कें हम छानि लेलियनि। हमर निहोरा चलते हुनका हमरा पर दया उगलनि। ओ फूल-अक्षत लेल तीन हजार टाका, तीन टा मूर्गा, एकटा कारी रंगक छागर आरो दू बोतल दारुक माँग केलनि। सभ किछु चरणी तांत्रिकक चरण मे पहुँचा देलियनि। चरणी महराज लगातार पन्द्रह दिन-राति डोमनीक उपचार बंद कोठली मे केलथिन। तब जा के आइ अमावस्याक राति मे भैरवी कें छागर, मूर्गाक बलि चढ़ा कऽ पूजा केलथिन। भैरवी प्रसन्न भेलथिन। जागल भैरवीक प्रसादे पिचास कें पछाड़ि जबर्दस्ती ओकरा शीशाक जाड़ मे कैद केलथिनहँए। एखनी अही पिचास कें श्मशानक पीपरक गाछ मे काँटी सँ ठोकि देथिन। डोमनी कें पिचास सँ सभ दिन लेल मुक्ति मिल जेतै से बात कहलथिनए।

एतबा बजैत-बजैत डोमनीक करमघटू बाप कें हिचकी उठि गेलै आ जँ ओकरा पकड़ि नहि लैत'थिन तऽ ओ ओंघरा कऽ भूइयाँ पर खसि पड़ितैक।

गली जा कें वाकरगंज बाजार मे ठेकल। बाजार मे चहल-पहल, पी-पाँ चारूकात बिजली बत्तीक इजोत। हम बड़ी काल सँ अन्हार मे आँखि कें पिजौने चलि रहल छलहुँ। तेज प्रकाश मे चोन्ही लागि गेल। तकरा संगे आशंका से ग्रसित क' लेलक। आशंका अहि बातक जे कोनो चिन्हार लोक हमरा भूत पकड़ैबला हँसेरी मे ने देखि लिअय। पयर पर जँ कुरहरि खसि पड़ए त' पयर कटि जायत, शोणित बह' लागत। मुदा देवचंदक संग आबि कऽ हम कुरहरिएपर पयर राखि देने छलियैक तखन जे ने होअय से कम। भुतहा हँसेरी सड़क पार केलक आ पश्चिम दिशा मे ठीक सोना-चाँदी दोकानक बाम कात गली मे ढुकि गेल। कने दूरतक

गली मे दुनू कात मुसलमानक घर रहै। घर सँ कने-मने इजोत सड़क तक आबैत छलै। मुदा जखन झुंड घनगर आमक गाछी मे प्रवेश केलक तखन घुप-अन्हार भ' गेलै। आब सड़क नहि उभर-खाभर पगडन्डी। हम देवचंदक बाँहि पकड़ि लेलहुँ। झुंड बागमती नदीक तीर पर पहुँचि क' दम लेलक।

आम गाछी सँ हटल बागमती नदीक कछेर मे एकटा पीपरक गाछ। काँटी मे ठोकर दर्जनो किकिआइत भूत-प्रेतक कारणे पीपरक गाछ सुखायल, ठुठ, मरनासन। ओही पीपरक गाछ मे पिचास कें सेहो काँटी सँ ठोकल जेतै। पिचास पहिले पहिल पकड़ायल छल। तें ओहि बदमास पिचास कें गाछक सभसँ उपरका भाग मे ठोकल जेतै तकर घोषणा चरणी तांत्रिक केलनि। तकरा संगहि तांत्रिक महाराज भयंकर अट्ठहास करैत नाच' लागलाह। तांत्रिकक नाच मे ताल मिलबैत झालि-मृदंगवला सेहो नाचब शुरू क' देलक। बाँकी बचल स्त्री-पुरुष सेहो आस्ते-आस्ते नाच मे सम्मिलित भ' गेल। केवल बाँचि गेल डोमनी आ ओकर बाप। शैतान पिचास सँ पछाड़ल डोमनी भुइयाँ पर ओंघरा गेलि। हकन कनैत बाप अपन बेटीक बगल मे बैसि रहलाह। हम देवचंद पर आँखि पथने रही। एक क्षण तक देवचंद सभटा तमासा देखैत रहलाह। मुदा ओ अपन ओस्ताद सँ अलग कोना रहितथि। ओहो कुदि-कुदि क' नाच मे मिलि गेलाह।

भूतहा मंडली सँ अलग भ' क' बागमतीक काते-कात चलैत हम दूर हटि गेलहुँ। आकाश पारदर्शी रहैक। अन्हरिया रहितहुँ आकाशक तरेगन एतेक इजोत पसारने छल जे सभ किछु देखऽ मे आबि रहल छल। नदीक काते मे एकटा उँच जगह भेटल। ओतुका जमीन बहारल, साफ-सुथरा। परिष्कृत स्थान कें देखि हम ओतहि बैसि गेलहुँ।

दिल्ली जयबाक लेल रेलगाड़ीक टिकट चाही। टिकट भेटब कठिन। देवचंद आश्वासन देलनि। हुनकर एकबाल बड़ी टा। टिकटक लोभ मे देवचंदक पछोर धऽ लेन रही। तकरबाद नाटक शुरू भऽ गेल। नाटक अजीब आ हमर कल्पनाक परिधि सँ हटल। नाटक मे तेजी एतेक ने जे हम स्वयं नाटकक पात्र बनि गेलहुँ। किछु सोचब तकर अवकाश नहि। मुदा आब जा क' मोन कने स्थिर भेल रहए। अहि शहर मे पछिला पन्द्रह बर्ख सँ रहि रहल छलहुँ। मुदा बागमती नदी कें लग सँ नहि देखने रहियैक। नदी कें लगीच सँ देखबाक अवसर भेटल। नदीक दुनू पाट दिस

बड़का-बड़का गाछ पसरल। दुनू कात मूर्दघटी। जरल आ जरैत मूर्दाक गंध सँ स्थान गनहाइत।

नदीक आधा पेट तक जलक बहाब। बहाव स्थिर मुदा तइयो ओकरा मे हहाइत एक तरहक ध्वनि। नदीक जल मे तरेगनक झलफलाइत छाँह। छाँह देखि क' भय जकाँ भेल। कथीक भय? प्रायः मृत्युक भय। संसार मे अपना इच्छा सँ त' नहि आयल रही। कियो धरती पर ठेल देने छल आ वएह एक दिन घींच क' लइयो जायत। तखन भय करबाक प्रयोजन? नहि यौ प्रयोजन रहैने। जीवन वरदान थिकै आ कि अभिशाप, अनमोल थिकै आ कि अकारथ, ताहि बात दिस ध्यान कहिओ गेलै ने रहए। मुदा जीवनक प्रति मोह, ममता एतेक ने अधिक भ' गेल छल जे मृत्युक दुआरि पर पहुँचि क' भयातुर भ' गेल रही। ठाढ़ भऽ गेलहुँ। कने दूर मे कोनो आकृति कें देखलियै। ओ आकृति मनुक्खे छल आ हमरा दिस आबि रहल छल। हिम्मत पस्त भ' गेल रहए तइयो साहस कऽ ठाढ़े रहलहुँ। आबवला मनुक्ख लगभग बीस वर्खक एक सुन्दर युवक छल। गौर वर्ण, ऊँच कद, माथक केश छिड़िआयल, युवक कें तत्काल हम चिन्ह गेलियै—के मोहना छिएँ ने रौ? मोहना, तों एत' कत' सँ आबि गेलँए रौ?

—दादा, भूत पकड़ैलाक झूंड मे माथपर शीशाक जाड़ उठौने जकरा अहाँ अबैत देखने छलियै से आन कियो नहि, अहाँक मोहने छल ने। पिचास हमरे सबारी बना क' एतय तक पहुँचलए। हम बहुत पहिने अहाँ कें देख लेने रही, चिन्ह सेहो गेल रही, मुदा हमरा माथ पर पिचास छल। हम बजितहुँ त' बजितहुँ कोना। हँ, मोन अवस्से बेकल होइत रहल। ई जगह त' दादाक नहि छियनि। एतुका तमासा त' मूर्ख, अज्ञानीक थिकै। एतुका रचल तमासा कें मात्र घृणे टा कएल जा सकैए। अहि घृणित तमासाक बीच दादा की कऽ रहलाए? दादा, एखन हमर माथ पर सँ पिचासक सबारी हटलए आ दौड़ैत हम अहाँ एलहुँए।

एतबा बाजि क' मोहना हमरा लग मे सटि गेल। हम आ मोहना, दुनू जमीन पर बैसि गेलहुँ। कथा कें विस्तार कर' सँ पहिने मोहना के छल तकर परिचय देब आवश्यक भ' गेलए।

लगभग दस बर्ख पहिलुका कथा थिकै। हमरा अखबार, पत्रिका पढ़ैक रोग आ पत्नीकें पुरना अखबार, पत्रिका बेचैक बेगरता। पुरना अखबार, पत्रिका बेचै काल पत्नीक एकाग्रता, व्यग्रता ओहि सीमा तक

पहुँचि जानि जे जँ ओहि समय हुनका टोकि दितियनि त' बिना झगड़ा भेने नहि रहितय। हम तरकारीक झोड़ा लेने अपन डेराक कम्पाउन्ड मे प्रवेश कयने रही। पत्नीक बकझक भ' रहल छलनि–डंडी उदास छौ। पुरना अखबार, रद्दी कॉपी एवं अन्य तरहक कचरा किनैबला छौंड़ाक जवाब–दादी, पइकार पचास पाइए पुरना अखबार लैत छै। हम चालिस पाइए किनबै तखने ने हमरा पेट मे अन्नक दूटा क'र जेतै। हम चोरि नहि करैत छी, भीख नहि मँगैत छी। दिन-राति गलिए-गलिए बौआइत छी। तइयो आधा महिना भूखले सुतैत छी। दादी, हमरा सनक गरीब, लाचारक अहींसभ आसरा छियै ने। हम अहाँ लग उदास कोना तौलबै।

हम एक नजरि ओहि छौंड़ा दिस ताकल। लगभग नौ-दस बर्खक, गौरवर्ण, माथक छिड़िआयल केश, पैघ-पैघ आँखि आ ओकर बाजब मे कोमलता। ओकर एक-एक शब्द हमर हृदयक गुफा मे संचित करुण भावकेँ हिलकोरब शुरू क' देने रहए। हम एक क्षण स्तब्ध भेल ठाढ़ रहलहुँ। फेर चुपचाप डेराक भीतर चलि गेलहुँ। कचरा किनैबलाक प्रति नफरत होयब एकटा साधारण बात भेल। मुदा ओहि बालकक चपलता, चंचलता एवं बाजक मधुरता अबिलम्ब हमरा आकर्षित कऽ लेने छल।

किछु महिना बितल हेतै, ओहि बालक कें हम फेर अपन डेरा मे देखलहुँ। मुदा दोसर रूप मे। अपाहिज क्लब सँ आपस डेरा पहुँचल रही। साँझ भऽ गेल रहैक। बारामदा पर बालक नीचा मे बैसल रहए। ओकरा आगाँ मे थारी रहै। थारी मे भात, दालि, तरकारी परसल छलै। बालक खा रहल छल। तखने पत्नी दहीक बाटी लेने पहुँचल रहथि। पत्नी बालकक थारी मे दही परसि देलथिन। बालक खायब छोड़ि बाजल रहए–दादी, हमरा लेल एतेक सिनेह किएक? संसार अदला-बदला पर चलैत छै। माइयोक संतानक प्रति सिनेह भविष्यक बाट तकैत रहैत छैक। हम कंगाल छी, छोट जातिक छी। गरीब, लाचार आ अपन बापक अत्याचार सँ पीड़ित छी। दादी, अहाँक सिनेहक बदला हम कोना चुकायब। दादी, अहाँक दयाक कारणे हम पिचा क' मरि जायब।

एक अल्प आयुक बालकक मुँह सँ सुनल प्रत्येक वाक्य हमर भाव संसार कें झकझोड़ि देलक। पत्नी डँटैत कहलथिन–मोहना, तों बड़ बात बनबैत छें। चुपचाप खो। तोरा खुआबै मे हमर भगवान तृप्त होइत छथि। तों मानि ले जे पछिला जन्म मे हम तोहर माय छलियौ।

बालकक नाम छल मोहना। पत्नीक व्यवहार मे अजगुतवला बात देखल। पाइ-पाइक हिसाब रखनिहारि, भीखमंगो कें एकटा पाइ भीख नहि देनिहारि, कंजूस एतेतक जे दालि, तरकारी मे नोन खसबै मे कंजूसी केनिहारि एखन एकटा कचरा किनैवला मोहना कें ऊपर हमर पत्नी यथेष्ट वात्सल्य आ ममताक बर्खा क' रहल छलीह। हमर पत्नी कें अपन संतान रहनि। बेटा-बेटी, पौत्र-पौत्री, नाति-नातिन सभ छलनि। संतान आ संतानक संतान, मुदा सभक जीवन व्यस्त, सभ कें समयक अभाव। कहियो काल मात्र औपचारिकताक निर्वाह करै लेल ओ सभ अबैत रहथि। दादी, नानी बनलाक बादो हमर पत्नी सिनेहक भुखलि तें हुनकर हृदय मे एकत्रित सभटा सिनेह, ममता मोहना पर बरसि रहल छल। कहबा मे कोनो हर्ज नहि जे मोहनाक प्रति हमरो ममता जागि गेल रहए। पत्नी द्वारा डाँटि-डाँटि क' मोहना कें भोजन करइवला दृश्य हमर मोन कें पुलकित क' रहल छल, आनन्द सँ भरि रहल छल।

महिना, दू महिना बाद क' क' मोहना अबैत रहल। तकरबाद बहुत दिन तक मोहना नहि आयल। बुझि लिअ एक दूट बर्खक समय बीति गेल हेतै। हठात् एकदिन मोहना पहुँचल। ओकर कपार फूटल रहै। शोणितक धार टघरि क' गरदनि तक पसरि गेल रहै। अबिते मोहना बाजल रहए—दादी, आइ हमर बाप किलोबला बटखारा हमरा माथ पर पटकि देलकए। हमर बाप बाप नहि कसाइ थिक। एक दिन हम बदला ल' क' रहबै।

पत्नी मोहनाक दशा देखि व्याकुल भ' गेलीह। ओकरा सेवा मे लागि गेलीह। मोहनाक मरहम-पट्टी कराओल गेल। राति-दिन ओकरा देखभाल भेल। पत्नी मोहना कें कहने रहथिन—तोहर बाप एहन कसाइ छौ त' ओकरा सँ हटले किएक ने रहैत छें?

जवाब मे मोहना बाजल छल—दादी, हमर बाप हमरा घर सँ निकालि देने अइ। हमर माय हमरा बड़ मानैए। मुदा हमर बापक डरे ओ किछुओ ने कऽ पबैए। हमहूँ अपन बापक घर मे नहि रहैत छी। एतय-ओतय बौआइत रहैत छी। हमरा सँ पाँच बर्खक छोट हमर बहीन मालती अछि। मालती हमर सभ सँ प्रिय। ओकरा बिनु देखने हम जीबि नहि सकैत छी। मालती जखन भैया-भैया कहि शोर पाड़ैए तऽ हमर हृदय मे आनन्दक धार बह' लगैए। दादी, हम तऽ कहिया ने जहर-माहुर खा क' मरि गेल

रहितहुँ। मुदा मालतीए लेल हम जीबि रहलहुँए। हम मरि जेबै त' मालती कें के देखतै? मालतीए कें देखै लेल हम नुका क' अपन घर आ कि दोकान मे जाइत छी। जाहि दिन हमर कसैया बाप हमरा देखि लैए हमर दुर्दशा केनाइ नहि छोड़ैए।

मोहना नीके भ' क' गेल। फेर ओ कहियो आपस नहि आयल। पत्नी कइएक बेर मोहनाक चर्चा केलनि। मोहना हमरो मोन कें तिरने रहल। जखन कखनहुँ डेराक गेट खुजैक आवाज सुनिते हम खिड़की लग पहुँच जाइत रही, किनसाइत मोहना ने आयल हुए। मुदा मोहना नहिए आयल। बर्खक-बर्ख बीति गेलै आ मोहनाक स्मरण धुमिल होइत-होइत समाप्त भ' गेल रहए। आइ श्मशान घाट मे एकाएक मोहना कें देखिलैयै। यद्यपि मोहना आब बीस बर्खक अति सुन्दर, हँसमुख युवक बनि गेल छल तथापि ओकरा चिन्ह' मे हमरा एको पलक बिलम्ब नहि भेल। तें हम आश्चर्यचकित भ' मोहना कें पूछि देने रहियै—मोहना, तों एतय कत' सँ?

मोहना समीप मे बैसल-बैसल अपन पछिला दस बर्खक खिस्सा संगहि अपन परिवारक सभटा व्योरा देलक।

चारि

खिस्सा गुदरी बजारे सँ आरम्भ होइए। शहर मे रहनिहार प्रत्येक मनुक्ख कें पेट आ पेट मे सदिकाल कायम भूख। भूख मेटबै लेल चाही चाउर-दालि, नोन-तेल, साग-सब्जी, फल-फलहारी इत्यादि। सभ विषय-वस्तुक बाजार अछि गुदरी बाजार। गुदरी बाजारक अधिकांश हिस्सा वैश-बनियाँक मरौसी। थोड़ेक हिस्सा दरभंगा म्युनिसिपलक स्वामित्व मे, जाहि मे बनल छल पतियानी मे छोट-छोट दोकान। प्रत्येक दोकान म्युनिसिपल द्वारा लीज पर देल एक खास जातिक लोक कें। ओहीमे सँ एकटा दोकानक मालिक छल रघु प्रसाद वल्द दुखी प्रसाद। रघु प्रसाद आलू-पिआजु खुदरा बेचैत छल आ समय पर दोकानक टैक्स अदा कऽ अपन नामक रसीद कटबैत छल। रघु प्रसाद असगरुआ मुदा ओकर रोआब बड़ बेसी। रघुक बिआह होइ मे अरचन रहै ओकर शरीर मे व्याप्त विभिन्न तरहक रोग। दम्मा तऽ सदिकाल ओकर दम कें फुलौने रहिते रहै। मुदा मनुक्ख केहनो ने हुअय कियो ने कियो ओकर सहायक रहिते छैक।

ओएह सहायता केनिहार मित्र मंडली मदति केलकै, जुगुत भिरेलकै। रघु प्रसादक बिआह दरभंगाक अपने जातिक कन्या सँ भऽ गेलै। लोक मे कहबी छै जे जन्म, बिआह आ मृत्यु मनुक्खक वश मे नहि छै। एकरा भगवान डाइरेक्ट डील करैत छथि। मुदा कखनहुँकाल भगवानोक काज मे मिस्टेक भऽ जाइत छनि। रघु प्रसाद बीमारीक चलते बौंकटी आ ओकर कनियाँ जकर नाम छलै गुलबिया, गुलाबक फूल जकाँ सुन्नरि आ गुलाबे जकाँ गमगम करैत। गुलबिया जखन रघु प्रसादक पाँच धूर मे बनल आँगन मे एलै तऽ आँगन गमकि उठलै। माइ गे माइ! अहि जाति मे एहन सुन्दरि रूप कहियो ने देखने छलियै। कोंकनल रघुआ की अहि रूपक महारानी कें डेबि सकतै? सैह सत्य भेबो केलै। रघुआक नसीबमे गुलबियाक भोग नहि लिखल रहै। बहुत जल्दीए बिना नोटिस तामिल केने रघुआ अपन प्राण त्यागि देलक। गुलबिया मुस्किल मे पड़ि गेल। मुदा बेचारी गुलबिया करितय तऽ करितय की? जिनगीक पगहा-डोरीकें तऽ घिचैए पड़ैत छै। गुलबिया रघु प्रसादक आलू-पियाजुक दोकान मे बैसऽ लागलि। दोकानक बिक्री तऽ अबस्से बढ़ि गेलै मुदा गुलबियाक जवानी ओकर काल बनि गेलै। लोकक नजरि गुलबियाक गत्तर-गत्तर मे सुल्फा भोंकय लगलै। जखन गुलबिया कें बरदास्त सँ बाहर भऽ गेलै तखन ओ गुजर जोगरक सौदा बेचि दोकान बंद कऽ लिअए आ आँगन मे आबि अपन रूप पर अंगोर ढारऽ लागए।

ओही समय मे एकटा बाभन बाजारक हाकिम बनि गुदरीबजार मे पयर रखलनि। बाभन भाइ हरफनमौला आ अपन काज मे पटु। सभ दोकानक खोज-पुछारि करब हुनके जिम्मा। महिनबारी कतेक देत तकर तय-तसफिया। बाभन भाइ गुलबियाक दोकान पर पहुँचलाह। गुलबिया कें देखिते बाभन भाइ कें छगुन्ता लागि गेलनि, करेज मे धुकधुकी पैसि गेलनि। गुलबिया कें ने साँय आ ने धिया-पूता। असगरि, असहाय, बेबस आ तकरा संगे धधकैत जबानी। बाभन भाइ जन्मजात परोपकारी लोक। रूपक रानी गुलबियाक परिचय पाबि बाभन भाइ पसिझ गेलाह। गुलबियाक मदति करब हुनकर कर्त्तव्य बनि गेल। तराजू आ बटखाराक जाँच जरूरी नहि छै। रघु प्रसादक नामे दोकानक लाइसेन्स छल। बाभन भाइ गुलबियाक नामे सरकारी रसीद बनबा देलथिन। आरो तरहें बाभन भाइ गुलबिया कें पुचकारब शुरु केलनि। बाजारक बनियाँ अकान नहि रहए, सभ बाभन

भाइक बाजीगरी कें बुझैत रहए। तकर बादो बाभन भाइ सनक बाजारक करियल हाकिम कें टोकैक ककरो साहस नहि भेलै। एमहर बाभन भाइ कतबो ने परमार्थक काज केलनि, गुलबिया हुनका अपन लग मे सटऽ नहि देलकनि। अंत मे आजीज भऽ कऽ बाभन भाइ ब्रह्मास्त्र छोड़लनि। जनउक हड्डा आ गंगाजलक बोतल हाथमे लऽ कऽ ओ शपथ खेलनि—गै गुलबिया, जीवन भरि तोहर प्रतिपाल करबौ तकर वचन दैत छियौ।

माय गे माय! अइ दुनियाँ मे भगवानक बाद बाभन। बाभन कें दुतकारब भेल पाप। पछिला जिनगी मे पाप केलियै तेँ ने अहि जिनगी मे लगले विधवा भऽ गेलियै। धरती डोलि गेलै, आकाश गरजि उठलै, गुलबिया पाप नहि करत तकर विचार कें पक्का केलक। गुलबिया पिघलि गेलि, अपन जिद्द सँ फराक भऽ गेलि। कलियुग मे निर्लज्ज कें अधिक भोग प्राप्त होइते छैक। बाभन भाइ लाज कें कहिओ नजदीक नहि आबऽ देलनि। समयक चक्र घुमैत रहलै। एक दिन बाभन भाइ कें गुलबियाक पेट मे मोहनाक आगमनक सूचना भेटलनि। ओ ने घबड़ेलाह आ ने धड़फड़ेलाह। अहि तरहक फंदा सँ कोना साबुत बाहर निकलि जाइ तकर ट्रेनिंग बाभन भाइकें बहुत पहिने भेटि चुकल छलनि। ओ गुलबिया कें सान्त्वना दैत कहलखिन—वचन देने छियौ तखन तों चिन्ता किएक करैत छें। तोहर इज्जति मे दाग नहि लागऽ देबौ। भेल तऽ एकटा बापक इन्तजाम केनाइ। हमरा लेल ई कोनो कठिन काज नहि अछि। निश्चिन्त रह, अगिला एक सप्ताहक भीतरे तोहर आब'वला संतानक बापक इन्तजाम हम कऽ देबौ।

मनुक्खक दुश्मन भेल रोग आ व्याधि। एकर उपचार करक लेल डाक्टर, वैद्य, हकीम। एकटा दोसर प्रकारक रोग। रोग नहि उपद्रव। ओना तऽ सभ तरहक परिवारमे, मुदा विशेष क', गरीब, मूर्ख परिवार मे जखने छौंड़ी जबानीक दुआरि पर पयर रखलक, भूत आ कि प्रेत ओकर देह मे ढूकि कऽ भाउ खेलाए लागल। भूत भगबैक विद्या बहुत कमे भगता कें अबैत छैक। मुदा चरणीदास उर्फ चरणी तांत्रिकक नाम के ने सुननेए। चरणी तांत्रिकक असलीका नाम छै कालीचरण प्रसाद। विगत समय मे मुरली झा नामक एकटा प्रसिद्ध तांत्रिक भेल छलाह। ओ बड़ कठिन तप केलनि। अंत मे मुरली झा कें भैरवी दर्शन देलथिन आ मनुक्ख जातिक सेवा करक आदेश देलथिन। मुरली झा द्वारा स्थापित कनिएटा भैरवीक

मंदिर आ मंदिरक सोझा मे कनिएटा पोखरि। बिना जाठिक पोखरिक घाट पक्काक। मुरली झाक स्वर्ग गमनक बाद हुनकर भातिज खोखन झा भैरवीक मंदिर मे अपन खंती गारलनि। किछुए बर्ख मे खोखन बाम मार्गीक अघोर पंथी बनि प्रसिद्ध तांत्रिक बनि गेलाह। तंत्र विद्या कें सिद्ध करऽ लेल भैरवी मंदिर मे नशा सेवन करऽ लेल लोकक भीड़ जमा हुअ लागल। खोखन कें चेला-चाटीक कमी नहि रहलनि। मुदा हुनकर चेला मे सभसँ प्रसिद्ध भेल चरणी दास भगता। चरणीदास अधिक काल नशा मे बूत मंदिरक हाता मे बनल पोखरिक घाट पर बेसुद्ध पड़ल रहैत छला। मुदा जखन कहिओ भूत-प्रेतक उपद्रव सँ ग्रसित कोनो छौंड़ीकें चरणी तांत्रिक लग आनल जाइत रहए हुनकर नशा उतरि जानि आ ओ सावधान भऽ जाइथ। अपन निर्धारित फीस ग्रहण कऽ ओ भूताहि छौंड़ी कें अपन अड्डा पर आनि छौंड़ीक अभिभावक कें हुकुमनामा सुना देथिन-पन्द्रह दिनक बाद अबिहें आ छौंड़ीकेँ तहदर्ज आपस लऽ जइहें।

भूत भगबैक काज मे चरणीदासक सहायक छल मौलवी बसरुद्दीन। लहेरियासराय मे एकटा पैघ पोखरि। पोखरिक पूबरिया भीड़ पर बनल अछि शहरक प्रसिद्ध कबुरगाह। कबुरगाह मे अछि अलबदर, अलजौहरी, अलबगदादी नामक कएकटा मजार। एकटा मजार बहुत पैघ। ओही मे बनल अछि छोट-छोट गुफानुमा कोठरी। एकटा गुफा चरणीदास लेल रिजर्व राखल रहैत छैक। ओतहि दोसर मजार पर खिदमतगार मौलवी बसरुद्दीनक अड्डा सेहो छल। बसरुद्दीन बहुतो इल्मक मालिक। तरह-तरहक नशा सेवन करऽ मे आ करबै मे ओ बेजोड़ छल। बसरुद्दीनक जाल मे फँसल शहरक नामी-नामी हिन्दू-मुसलमानक गुंडा, लोफर आ गीरिहकट। सभ ओकर जी हजूरी मे मोसतैज रहैत छल। फ्री मे निशा कर, फ्री मे बिरयानी खो आ फ्री मे गुंडागर्दी करक परमिट ले। मुदा जखन बसरुद्दीन काज अढ़ा देथुन तऽ बिना नाकर-नुकूर केने हुनकर हुकुम कें तमिल कर। नेपालक से खेप आ गेलइए। अरे साला जहीरवा, एकरा बम्बइ पहुँचा दहीन। जाली नोट पहुँचाबै का काम मजीदबा का हइ। देख रे साला, पेटी के आराम से खोल। एकरा मे ए.के. सैंतालिस राइफल आ एकर ससुरा गोली भरल हइ। एकरा ठिकाना पहुँचाबै का काम खतरा का हइ। जान जाइ का जोखिम हइ। घबड़ाइ का जरुरत ने हइ। अगिला हप्ता नूर मोहमदबा साला का जमानत हो जेतइ। ओ जेल से निकलतइ तऽ

राजी-खुशी से एकरा ठेकाना पर पहुँचा देतै।

जेना अलग-अलग बीमारक अलग-अलग डाक्टर तहिना बसरुद्दीनक अलग-अलग काज करक लेल एक सँ बढ़िक' एक काबिल, होशियार ओकर शागिर्द छल। बसरुद्दीनक फौज मे बहुतो जनानी सेहो कार्यरत रहए। जनानी बीमारीक उपचार मे बसरुद्दीनक जड़ी-बुटीक खोराक बहुत कारगर छलै। दवा खेलकै तइयो अच्छा ना होलै? तब मौलवी बसरुद्दीन का बदना का पानी थोड़ा पिला दहीन आउर थोड़ा बदन पर छीट दहीन। साला सभटा रोग रफूचक्कर हो जेतै। अल्ला रे अल्ला! ई के हैइ रे? जबान छौंकरी। हिन्नू-मुसलमान का भेद मत कर। एकरा बदन मे तकियाकलाम करैबला भूत होइ, प्रेत होइ, चुड़ैल होइ आ ताहू से बड़ा बदमास कोनो जिन्न साला सवारी कसने होइ तऽ एकरा हमर जिगरी यार चरणी साला कें सुपुर्त कर दहीन। ओ साला भूत पकड़ का मंतर जनै हइ, ओ एकर इलाज कर देतै।

लहेरियासराय बाजारक हाकिम बनि क' बाभन भाइ आयल रहथि। ओ फुर्तिगर लोक छलाह। हुनका चहलकदमी करक आदति रहनि। शहरक सभ तरहक खबरि राखब हुनकर धंधा रहनि। बाभन भाइ बसरुद्दीनक अड्डा पर पहुँच गेलाह। पहिने तऽ बसरुद्दीन घबड़ा गेल। आतंकवादीक मुखवीर बसरुद्दीन सदिकाल चौकन्ना रहैत छल। मुदा जल्दिए बसरुद्दीन कें बाभन भाइक रोगक पता चलि गेलैक। बाभन भाइ भूत-प्रेत पकड़ैक मंतर सिखै लेल बसरुद्दीनक अड्डा पर पहुँचल रहथि। बसरुद्दीन कें जखन सभ तरहक इतमीनान भऽ गेलै तखन ओ बाभन भाइ कें जब्बह लेल तैयार भऽ गेल। ओ चरणी भगत कें तलब केलक। चरणी तांत्रिक आयल। बसरुद्दीन बाभन भाइ कें बुझबैत कहलक—ह चरणी साला। एकरा भूत-प्रेत पकड़ै का मंतर आबै हइ। ई कतना हिन्नू-मुसलमान छौंकड़ी का भूत उतार देलकै हइ तकर गिनती का हिसाब करना मुश्किल हइ। ई तोरा भूत-प्रेत के पकड़ै का मंतर सिखा देतै। लेकिन ऐसन काम मे बड़ा टेम लगै हइ। एकरा साथे चरणी के खुश करै मे, एकर दिल जितै मे तोरा खर्चा करैक जरूरत होतै रै बाभन भाइ।

बाभन भाइ तैयार भऽ गेलाह। ओ चरणी भगत मे सटि गेलाह। एक दिन चरणी भगत बाभन भाइ सँ कहलक—हयौ दोस्त, हम अहाँ कें भूत पकड़ैक मंतर अबस्से सिखा देब। मुदा एकर सही समय आबऽ दिऔ। मंत्र

सिखेलाक बाद हम अहाँक ओस्ताद आ अहाँ हमर चेला बनि जायब।

बाभन भाइ चरणी भगतक मित्रेटा नहि ओकर जिनगीक आगाँ-पाछाँ सभ तरहक जानकारी सँ अवगत भऽ चुकल रहथि। संयोग एहन रहैक जे चरणी गुलबिए जातिक छल। चरणी भगत कें कोकिन नशाक आदति रहैक। कोकिन बड़ महग निशा। मुदा बाभन भाइक प्रचुर आमदनी आ परोपकारी स्वभाव, तें कोकिन कोनो तरहें महग नहि। कोकिनक खर्च बाभन भाइ अदा करैत छलथिन। चरणी भगत बाभन भाइक उपकार सँ उपकृत छल। जखने बाभन भाइ कें गुलबियाक पेट महक संतान लेल एकटा बापक जरूरत भेल छलनि तखने ओ चरणी भगत कें बाप बनबै लेल मोन बना लेने रहथि। एक दिन जखन चरणी संयत अवस्था मे छल बाभन भाइ ओकरा पोल्हेनाइ शुरू केलनि-हयौ मित्र, अहाँ एना कहिया तक छुट्टा बौआइत रहब। अहाँ बिआह कऽ लिअ। मनुक्ख योनि मे जन्म लेबऽवला जँ बिआह नहि केलक तऽ ओकरा मृत्यु भेला पर नर्क भेटैत छैक। हम अहाँ हितचिन्तक, तेँ अहाँ लेल अहींक जाति मे कनियाँ ताकि कऽ रखने छी। कनियाँ एतेक ने सुन्नरि अछि जे जखन ओकरा देखबैक तऽ सय ग्राम कोकिनक नशा अपने आप चढ़ि जायत। कनियाँक आगू-पाछू कियो नहि छैक। ओ पाँच धूरक घराड़ी, घराड़ी पर पक्का मकान, लाख टकाक आलू-पियाजु दोकानक मालकिन अछि। बिआहक बाद अहाँ सभटा सम्पत्तिक मालिक बनि जायब। अहाँ भूत पकड़ैबला जे काज करैत छी से करिते रहब। कियो रोक-टोक नहि करत। अहाँक मदति करब हमर कर्तव्य बनैत अछि। मित्र, अहाँ बाजू, अहाँ तैयार छी ने?

लोभक पोटरी एतेक ने वजनगर रहै जे चरणी भगत बाभन भाइक उपकारकें नकारि नहि सकल। ओ बिआह करऽ लेल राजी भऽ गेल। चरणी भगतक जाति मे पहिल बेर बिवाह होइत छलै जे गुलबियाक रघु प्रसाद संगे भऽ चुकल रहैक। दोसर बेर सम्बन्ध होइत छै जे गुलबियाक चरणी भगत संगे भलै। बाजार पर बाभन भाइक हुकूमत। कोनो तरहक अरचन आ कि उपद्रव नहि भेलै। थोड़े समयक लेल चरणी भगत गुलबिया मे एना भऽ कऽ रमि गेल जे ओकरा संसारक होश-हवाश नहि रहलैक। मुदा जखन ठेही उतरलै तखन कोकिनक खोज मे ओ बेचैन हुअ लागल। चरणी भगत कें बसरुद्दीनक अड्डा पर जाइए पड़लै, भूत पकड़ैबला मंतरक पाठ पढ़ैए पड़लै।

समय पर मोहनाक जन्म भेलै। बाभन भाइ गंगाजलक बोतल उठा कऽ गुलबिया कें वचन देने रहथिन। ओ कहियो अपन देल वचन सँ पाछाँ नहि हटला। कोनो शहर मे पदस्थापित होथि ओ गुलबिया खोज-पुछारि करिते रहलाह। नव-नव नुआ-आँगी, चानी-रूपाक गहना आ थोड़-बहुत नगदी गुलबिया कें पहुँचबिते रहलाह। एकरे नतीजा भेलै जे मोहनाक जन्मक पाँच बर्खक बाद ओकर बहीन मालतीक जन्म भेल रहै।

खिस्सा कें बिस्तार करैत मोहना बाजल—दादा, हमर बाप चरणी भगत कें भाँज लागि गेलै जे हम ओकर जनमल नहि छियैक। ओकर अत्याचार शुरू भऽ गेलै। हमरा देखिते हमर बाप कें माथ मे सनकी चढ़ि जाइक। मारि खाइत-खाइत हम पाँच-छह बर्खक भेलहुँ तखन हम अपन घर सँ निकलि गेलहुँ। भरि दिन पुरना अखबार, कॉपी, शीशी, बोतल कचराक जे वस्तु भेटए तकरा कीनी आ पइकार लग बेची। जे कैंचा भेटए तकरा सँ नीक-बेजाए खा-पी कऽ स्टेशनक प्लेटफार्म पर सूति रही। हम सभ कें बिसरि गेलियै, मुदा अपन बहीन मालती कें नहि बिसरि पौलियै। दिन-राति कखनहुँ जँ ओकरा देखि नहि लियै हमरा चैन नहि पड़ैए। ओहि काल धोखहुँ सँ जँ हमर बाप हमरा देखि लिअय तऽ लहुलुहान केने बिना नहि छोड़ैए।

—दादा, टीशन पर एकदिन चेकिंग भेलै। हमरा पकड़ि कऽ स्टेशन मास्टर आर.के. चटर्जीक सोझा मे आनल गेल। चटर्जी काका हमरा देखलनि। दैवक माया, हुनकर दया हमरा पर उमरि पड़लनि। चटर्जी काका राधाकृष्णाक भक्त। चैतन्य महाप्रभु हुनकर गुरु। दया, ममता, करुणा हुनकर जीवनक मंत्र। चटर्जी काका हमरा अपन बासा पर अनलनि। हमर दुनिया बदलि गेल। नहा-धो कऽ हम फेर सँ मनुक्खक बच्चा बनि गेलहुँ। नीक भोजन, नीक वस्त्र आ नीक बोल हमरा भेटऽ लागल। चटर्जी काका हमर नाम स्कूल मे लिखा देलनि। पढ़ाइ मे हम तेज रही। एक वर्ष मे दू-दू क्लास टपैत हम प्रथम श्रेणी मे मैट्रिकक परीक्षा उत्तीर्ण भेलहुँ। एखन हम प्राइभेट स्कूल मे प्लस-टूक बिद्यार्थी छी। चटर्जी काकाक बदली भऽ गेलनि। हुनका जगह पर एलथिनए श्रीपत गांगुली। गांगुली काका सेहो हमर मान-दान ओहिना शुरू कऽ देलनि जेना चटर्जी काका करैत छलाह। गांगुली काका तँ एतेक तक कहलनिए—मोहना, तों ग्रेजुएट भऽ जो। तोरा रेलवेक नौकरीक परीक्षाक तैयारी हम करबा देबौ।

तों तेज दिमागक लोक थिकाह। तोरा आसानी सँ रेलवे मे नीक नौकरी भेटि जेतौ।

—दादा, हम अपन गलती कें स्वीकार करैत छी जे पछिला दस बर्ख मे हम दादीसँ भेंट करए कहिओ ने गेलहुँ। मुदा हम शपथ खा कऽ कहैत छी जे दादीक सिनेह कें हम कहिओ ने बिसरलौंए। हमर जीवन मे जे परिवर्तन आयल अछि से हुनके आशीर्वादक प्रसाद थिक। हम दादीक ऋणी छी आ आगुओ रहब। दादा, हमर बहीन मालती आब पैघ भऽ गेलए। हमरा ओकर बिआहक चिंता अछि। हमरो जाति मे नीक घर-वर छैक। मुदा ओकरा लेल धन चाही। हम स्टेशन पर रहिकए रेलवेक सभ तरहक काज सँ वाकिफ भऽ चुकलहुँए। रेलवेक कर्मचारी सरकार सँ नियुक्त होइए। मुदा बहुतो काज जेना ए.सी. बोगी मे कंबल बाँटैक काज आ पेन्टरी कार सँ यात्री तक भोजन जलपान पहुँचाबक काज ठीका पर होइत छैक। पहिने चटर्जी काका एवं एखन गांगुली काकाक मदतिए हमरा ठीकावला काज मे मजदूरक काज भेटैत रहलए। अहि काज मे हमरा चिक्कन आमदनी होइए। ट्रेन मे काजक समय हमरा पढ़ाइ करऽ लेल पर्याप्त अवकाश भेटि जाइए। हम एतेक धन जमा कऽ चुकलहुँए जे मालतीक बिआह नीक घर मे भऽ जेतैक। मालतीक बिआहक बादे हम जिम्मेबारी सँ मुक्त होयब आ अपना लेल किछु सोचब।

मोहना धाराप्रवाह बाजि रहल छल, थाकि कऽ चुप भऽ गेल। कने हटल भूत पकड़ैबला खेला मे हलचल भैए रहल छलै। कने सुस्तेलाक बाद मोहन फेर सँ कहब शुरू केलक—दादा, आइयो हम नुका कऽ मालती कें देखऽ लेल आयल रही। हमर बाप हमरा देखि लेलक। मारलक-पिटलक नहि, मुदा बेगार करऽ लेल बाध्य कऽ देलक। ओकरे हुकूम सँ भूतबला शीशाक जार उठा कऽ हम अहि भुतही गाछी मे एलहुँए। ओतबे नहि, हमर बाप हमरे कनहा पर ठाढ़ भऽ कऽ गाछक उपरका हिस्सा मे पिचास कें काँटी सँ ठोकलकए। देखिऔ हमर कनहाक दशा।

मोहना कमीज खोलिकऽ दुनू कनहा देखौलक। जूताक नाल मोहनाक दुनू कनहा कें थौआ कऽ देन छलैक, सोणित थक्का बनि जमा भऽ गेल रहै। मोहनाक दुर्दशा देखि हमर मोन सिहरि उठल आ क्रोध अपन चरम पर पहुँचि गेल। कहलियै—सही मे तोहर बाप चंडाल छौक। एहन लोक कें

धरती पर जीबैक अधिकार नहि छैक।

मोहना कें अपन बापक अत्याचार सहैक आदति पड़ि चुकल रहै। अपन छोट बहीन मालतीक प्रति अत्यधिक स्नेह ओकरा सभ तरहक शारीरिक, मानसिक क्लेश आ प्रताड़ना सहबाक ऊर्जा दैत छलै। मोहना कमीज पहिरलक तखन कहलक—दादा, भूत पकड़ैबला तमासा की छियैक से तऽ अहाँ कें बुझले होयत। आब हमरो बुझै मे आबि गेलए। नव वयसक युवतीक उपर अतृप्त वासनाक प्रहार कखनहुँ काल मानसिक संतुलन मे गड़बड़ी आनि दैत छैक। ई भेल अलग किस्मक रोग। अहि रोग कें अंग्रेजी भाषा मे हिस्टेरिया कहल जाइत छैक। गरीब, मूर्ख एकरा भूतक उपद्रव मानि भगता लग, मौलवी लग निदान लेल जाइए। भगता आ मौलवी धूर्त्त, बेइमान, भ्रष्ट आ समाजक दुश्मन होइए। उपचार करैक स्वांग भरिकऽ भगता आ मौलवी युवतीक शारीरिक दोहन करैए आ युवतीक अभिभावक सँ धन ऐंठैए। मुदा एकटा बात हमर मगज मे नहि ढूकि रहल अछि। बाभन भाइ तऽ शिक्षित, संस्कारी समाज सँ अबैत छथि। ओ अहि तरहक घृणित कार्य मे किएक सम्मिलित छथि? भूत पकड़ैक मंतर सिखै लेल ओ किएक हमर बापक पयर पकड़ने छथि?

आहार, निद्रा, भय, मैथुन इत्यादि सभटा क्रिया धरती परहक समग्र प्राणी मे समान रूप सँ विद्यमान रहैत छैक। मुदा मनुक्ख कें एकटा अतिरिक्त गुण भेटल छैक। ओ गुण थिकै विवेक। विवेक जाहि मनुक्ख मे चेतना सँ ऊर्जा संग्रह कऽ मोन कें जागृत रखैत छैक से भेल विवेकशील प्राणी मुदा जाहि मनुक्ख मे विवेकक अभाव छैक से मनुक्ख नहि, धरती परहक जानवर थिक। मोहना कें बाभन भाइक निमित्ते पूछल प्रश्नक जवाब की दितियै। हमहीं मोहनाक प्रश्नक जवाब मे प्रश्न केलियै—बाभन भाइ! बाभन भाइ!! ई बाभन भाइ के छथि?

मोहना बिना कोनो संकोचक जवाब देलक—परम आदरणीय एवं पूजनीय हमर आ हमर बहीनक जन्मदाता श्री देवचंद चौधरी। दादा, ओ अहींक मोहल्ला मे रहैत छथि।

हम सोचबा लेल मजबूर भऽ गेलहुँ। सभ्यता आ सभ्यता सँ निर्मित्त संस्कृति एवं परम्परा अबस्से अनुशासन एवं कठोर नियम सँ बनैत छै आ फलीभूत होइत छै। अनठेकानी बीजारोपण मात्र विनाशक कारण बनि सकैए। लोकक कहब छैक जे कलियुग मे लोकक काज अनाप-सनाप

हेतै। संशय छल, संशय यथार्थ मे बदलि गेल। देवचंदक अद्‌भुत कृत्यक बखान थोड़े काल लेल हमर दिमाग कें सुन्न कऽ देलक। ठरका चानन, ललका ठोप, गरदनि मे तुलसीमाला आ तकरा संगे बहुक हाथे ठुनका खेनिहार ई छल देवचंदक छवि। बाँकी बचल हुनक चरित्र कें कोन स्वरूप मे देखल जाय? जाहि तरहेँ ब्रह्मांडक अंत नहि छैक तहिना धरती परहक मनुक्खक अधःपतनक अंत नहि छैक। लज्जाबिहीन देवचंदक कृत्य हमरा चमत्कृत सेहो कऽ देने रहए। हम चुप्पे भेल रहलहुँ।

मोहना बजिते रहल–हमर जाति मे चौधरी टाइटिल नहि होइत छै। मुदा स्कूल मे मैट्रिकक सर्टिफिकेट मे हमर नाम लिखल अछि चन्द्र मोहन चौधरी वल्द देवचंद चौधरी। दादा, हमर सर्टिफिकेट मे असलीका बापक नाम दर्ज हेबाक चाही ने? हम एकटा बात लेल सदिकाल साकांक्ष रहलहुँए जे हमर जन्म-रहस्य, रहस्ये बनि कऽ रहि जाओ। हमर जनकक परिवार मे ई रहस्य कहियो प्रगट नहि होअय, ताहि कारणे हम बाभन भाइक निवास स्थान दिस कहिओ ने जाइत छी। अपन जन्मदाता कें पीड़ा पहुँचाबी से हमर अभीष्ट नहि अछि। अहि संसार मे उनटा-पुनटा काज तऽ होइते रहैत छैक, के ककर बाप छियै तकर फरिछौट के करत? बहुतो काल जगत निर्माता सेहो दुविधा मे पड़ि जाइत हेताह।

ककरो आबैत देखि मोहना बामकात अन्हार मे बिला गेल। आबऽवला आन कियो नहि स्वयं प्रजापतिक आविष्कार देवचंद रहथि, तामसे हुनकर चेहरा तमतमायल रहनि। आक्रोशित भेल देवचंद हमर सामने ठाढ़ भऽ गरजैत बजलाह–पछिला बीस बर्ख सँ हम चरणीक पछोर धेने रहलहुँए जे ओ हमरा भूत पकड़ैक मंतर सिखा देत। मुदा ओ एकरा टारैत रहल। एहन कठिन मंतर कें सिखै मे समय लगैत छैक तें हम एकरा बर्दास्त कयल। आइ एखन ओ हमरा की कहलकए से सुनबै तऽ अहुँक मुँह मे जाबी लागि जायत। ओ कहलकए ओ भूत पकड़ैक मंतर सिखै लेल मुर्गा आ छागरक माँउस खाय पड़ैत छैक, ताड़ी-दारू पिअ पड़ैत छैक। ई बात ओ पहिने किएक ने कहलक जे आइ कहलकए। हम माछ, मांउस त्यागि कंठी पहिर लेलहुँ, वैष्णव धर्मक दीक्षा लऽ लेलहुँ तखन ओ सभ बातक खुलासा केलकए। भूत पकड़ैवला मंतर हम सीख नहि पौलहुँ तकर पश्चाताप हमरा जिनगी भरि रहत। मुदा हम कहि दैत छी जे चरणीओं कें हम छोड़बै नहि। हमहूँ बाजारक खेलायल घाघ छी। समयपाबि एहन दाव

मारबै जै चरणीआँ मुँहे बले खसत।

एतबा बाजि देवचंद बताह जकाँ भनभनाइत बिदा भऽ गेलाह। हमरा दिल्ली जयबाक टिकट दिआबक लेल ओ अनने रहथि सेहो बात हुनका मोन नहि रहलनि।

मोहना फेर सँ हमरा लग मे आबि कऽ बैसल आ कहलक—हमर जनक क्रोध मे रहथि। क्रोध मनुक्खक दुश्मन होइछ से बात सत्य नहि। मनुक्ख अपने अपन दुश्मन होइए से बात सत्य अछि। दादा, बाभन भाइ कें बिसरि जाउ। अहाँ किएक हिनका संग एतय आयल रही से हमरा कहू।

हम आरम्भ सँ अंत तक सभटा बात मोहना कें कहिलयै। जवाब मे मोहना कहलक—दादा, हमरा खुशी भऽ रहलए जे हमर असलीका पिता हमर खोज-खबरि रखैत छथि। हम रेलवे मे काम करैत छी से हुनका बुझल छनि। हुनकर गप्प छोड़ू। दादा अहाँ जाहि दिन दिल्ली जयबाक निआर करब, हम ओही दिनक आरक्षित टिकट आनि देब। राति बहुत बीति चुकलैए। चलू, हम अहाँ कें डेरा पहुँचा दैत छी। दादी नहि छथिन तकर चिंता नहि करू। हमरा बंगाली स्वादक व्यंजन बनबैक लूरि आबि गेलए। हम भानस कऽ अहाँ कें भोजन करा देब, तखने जायब।

पाँच

मोहना रेल टिकटक व्यवस्था कऽ देलक। दिल्ली पहुँचलहुँ। स्टेशनक समीप पहाड़गंजक एकटा होटल कें आवास बनेलहुँ। प्रात भेने तैयार भऽ कऽ टेम्पो सँ संस्थाक गेट पर पहुँचलहुँ।

पैघ-पैघ दैत्याकार विशाल गाछक छाहरि मे एकटा विशाल भवन। भीतर प्रवेश कएल। संस्थाक ऑफिस सजल। चारुकात देवालक सटल सोफा, कुर्सी, टेबुल राखल रहै। मुदा मनुक्ख अधिक नहि, मात्र एक-दूटा। एअर कन्डीसन फूल स्पीडमे। शीतल वायु देहक टटायल चामक स्पर्श केलक, मोन पुलकित भऽ गेल। देशक राजधानी मे छी तकर गौरव हुअ लागल। ठीक सामने रिसेप्शनीस्टक पैघ आकारक टेबुल। टेबुलक पाछाँ गद्दीदार कुर्सी पर एकटा संभ्रान्त मुदा थुलथुल महिला बैसल छलीह। महिलाक वयसक अनुमान करब हमरा लेल आवश्यक नहि रहए। मुदा हुनकर कायासँ दू-चारि बर्ख पहिनहि हुनकर जबानी प्रस्थान कऽ गेल

रहनि तकर पक्का विश्वास भऽ गेल छल। महिलाक परिधान एवं प्रसाधन सजल रहनि मुदा लिपस्टीक सँ रंगल ठोर हुनकर बाँचल सौन्दर्य कें कंठ दबोचने छलनि। महिलाक माथक खोपा फलकल, कानक झुमका पाउडर पोतल पचकल गालक कतबहि मे एना हकन कनैत जेना सुखाइत गाछ मे एकसरुआ एकटा पात झुलैत होअय।

रिसेप्सनीस्टक काजर पोतल आँखिक पल मे कंपन भेलनि। ओ एकोटा शब्दक उच्चारण करऽ सँ परहेज करैत हमरा दिस एना तकलनि जेना ओ अस्त होइत सूर्य कें नमस्कार कऽ रहल होथि। हम बिचलित नहि भेलहुँ। मुँहे मे कुसियार रसक स्वाद भरि पूर्ण विनम्रताक संग अपन आगमनक औचित्यक बखान केलहुँ। कने हटल आ देवाल सँ ओंगठल संस्थाक सेवक तमाकू चुना रहल छल। हमर सभटा बात सुनलाक बाद महिला सेवक दिस तकैत आँगुरक इशारा सँ ओकरा लग मे बजौलनि आ आदेश देलनि–'बूढ़े को प्रधान सम्पादक के पास ले जाओ।''

महिला द्वारा 'बूढ़े' शब्दक प्रयोग हमर मोनकें अकठाइन लागल रहए। रिटायर भेले रही। भऽ सकैए बूढ़ो भऽ गेल होइ। मुदा थौआ बूढ़ कथमपि नहि भेल रही। जेना कनाह कें कनहा, नांगर कें नेंगरा कहने ओकरा रंज होइत छैक तहिना 'बूढ़े' कहला पर हमरा खीस चढ़ल। मुदा क्रोध कें हम तत्काल समेटि लेने रही। पाचन क्रिया दुरुस्त राखक लेल गरिष्ठ भोजन सँ परहेज करब समयानुकूल विचार मोन मे आबि गेल रहए। सभटा हरसंखा वयसक दोख। चुपचाप सेवकक पाछाँ-पाछाँ बिदा भेलहुँ।

प्रधान सम्पादकक मुखमंडल त्रिभुजाकार रहनि। मनुक्खक पूर्वज बानर रहै ताहि सिद्धान्त कें परिभाषित करैत हुनकर समस्त कायाक बनाबट छलनि। हुनकर कंठ महक ढेबरी लगभग सय ग्रामक बरोबरि, नाकक ठुर्री पर लटकल चश्मा। प्रधान सम्पादक हमरा देखिते मुँह बौलनि। सड़ल नारियलक दुर्गंध बफारि तोड़ैत बाहर आयल। हम स्वाँस रोकि लेल। ठाढ़े-ठाढ़ मनुक्ख नामक जीव कें निहारैत रहलहुँ। तहिकाल ईश्वरक निर्माणकला कें दुतकारक इच्छा प्रबल भऽ गेल रहए। प्रधान सम्पादक अबस्से दक्षिण भारतक कोनो प्रांत मे अवतरित भेल हेताह तकर निश्चय मोन मे भेल रहए।

प्रधान सम्पादक नाक परहक लटकल चश्माक उपर सँ अपन आँखिक डिम्हा कें नचौलनि। हम हुनकर भाव कें बूझि सामने पड़ल कुर्सी पर बैसि

गेलहुँ। ठोर कें चिबबैत प्रधान सम्पादक प्रश्न दगलनि—''तुम किस काम वास्ते मेरे पास आया है।''

हमर तीब्र इच्छा भेल रहए जे प्रधान सम्पादक कें कहि दियनि—हरौ सार! हम तोहर तेरही करऽ लेल एलहुएँ। पता नहि, बीतल जीवन मे कोन तरहक पाप केने रही जे एहन पापी सँ साक्षात्कार करक जरुरत भेल रहए। हम साहित्यक अनुरागी, कलाक प्रेमी, राधाकृष्णाक पुजारी। मुदा करितहुँ की? काज मैथिली भाषाक अस्मिता लेल अरजेन्ट किस्मक छल। मोन कें परतारलहुँ। कनेकाल पहिने रिसेप्सनीस्ट लग जाहि विषयक प्रगटीकरण केने रही तकरा ओहि मनुक्ख लग फेर सँ दोहरयलहुँ। प्रधान सम्पादक कुर्सीए पर बैसल-बैसल अपन देहक फरमा कें गतानलनि। हुनकर एक बीत्ता कंठक कमानी पर हुनकर मूड़ी टाँगल रहनि। हमर सभटा वार्तालाप सुनलाक बाद ओ एना कें मुँह बिचकौलनि जेना सड़ल सजमनिक फाँक हुनकर कंठ मे अटकि गेल होनि। प्रधान सम्पादक अपन प्लस आठ पावरबला चश्माक शीशा कें रुमाल सँ रगड़ैत फुफकार छोड़लनि ''फिर एक नयी भाषा मैथिली।''

आब लिअ! प्रधान सम्पादक मैथिली भाषाक नाम तक नहि सुनने रहथि। ओ अपन नाक, आँखि, भों कें संगहि कपार तक कें तरेरैत अपन भाषा सम्बन्धी ज्ञानक बखान केलनि—''इस देश का राष्ट्रभाषा हिन्दी कल की छोकड़ी है। हिन्दी दूसरी भाषाओं का घघरी पहनकर नाचती है। उत्तर भारत का सभी भाषा बंडल है। मैथिली भाषा? इस भाषा का नाम अभी-अभी सुन रहा हूँ। मुझे अष्टम अनुसूची मे दाखिल सभी भाषाओं का लिस्ट फिर से देखना पड़ेगा।

मातृभाषा पर प्रहार? तामस पहिने सँ छल, ओहि मे बृद्धि भेल। प्रधान सम्पादकक चोटकल गाल पर चमेटा जड़ि देबाक इच्छा भेल। प्रधान सम्पादक मैथिली भाषा कें प्रताड़ित करऽ लेल जाहि तरहक उक्तिक उद्घोषणा केने रहथि तकर प्रत्येक शब्दमे दुर्गंध भरल रहै। मोन तीत भऽ गेल रहए। आत्मा तक कलपि रहल छल। ग्लानि मे डुबल हमर प्रतिक्रिया सँ प्रधान सम्पादक कें कोनो मतलब नहि रहनि। ओ अपन अतार्किक भाषण चालुए रखलनि—''इण्डिया का भी भाषाओं मे सभ से प्राचीन और सभसे समृद्ध भाषा है तमिल और तेलगू। बाँकी सभी भाषा भाषा नहीं बोली है। देश का शासन कमजोर है, भोट पर खड़ा है। इसी

वास्ते सभी को भाषा का दर्जा देकर अष्टम अनुसूची मे दाखिल कर दिया है।''

वाह रे प्रधान सम्पादक! वाह रे तोहर भाषाक ज्ञान एवं आचरण। वर्तमान संस्था राष्ट्रभाषा हिन्दीक संग देशक तमाम आंचलिक भाषाक विकास लेल स्थापित भेल अछि। मुदा प्रधान सम्पादक नामक बनमानुष एकर सर्वनाश कर' लेल फाँड़ कसने छथि।

प्रधान सम्पादक टेबुल पर राखल बटन दबौलनि। बाहर मे टनटनक घंटी बाजल। गाँधी टोपी पहिरने एकटा सेवक उपस्थित भेला। सेवकक उपरका ठोर आ नाकक बीच तितली कट मोंछ रहैक। प्रधान सम्पादक खोखियाति हुकुम देलथिन–''मेरे पास काम का इतना बोझा है कि मुझे बेकार के लोगों से बात करने की फुरसत नहीं है। फालतू लोगों को मेरे पास मत लाया करो। इस आदमी को सम्पादक के पास अथवा किसी के पास ले जाओ। यह आदमी बिना बजह मेरा माथ चाट रहा है।''

अन्दाज कएल जा सकैए जे हम कोन तरहक मानसिक यंत्रणा मे रहल हैब। हमर दोख एतबे जे हम मैथिली भाषा मे एकटा उपन्यासक रचना केलहुँ। ताहिकाल मैथिली भाषाक नाम पर कतेक नोर बहाबी से प्रश्न आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेल रहए। कनन मुँह भेल तितली छाप मोछबला सेवक संगे प्रधान सम्पादकक ऑफिस सँ बाहर एलहुँ। गलियारी बड़ीटा आ गोलाकार। गलियारी मे राखल बेंच पर सेवक हमरा बेसौलक। तम्बाकू चुनबैत सेवक अपन खींझ झाड़लक–''श्रीमानजी, मैं इस संस्था मे पछिला तीस बर्खों से सेवारत हूँ। अगिला बर्ख मैं अवकाश ग्रहण करूँगा। मेरी शिक्षा बहुत अधिक नहीं है फिर भी इस संस्था के निर्माण की आवश्यकता एवं महत्व को मैं अच्छी तरह समझता हूँ। इस संस्था का गरिमा और उद्देश्य उच्च कोटि का है। राष्ट्रभाषा के अलावा आंचलिक भाषाओं का विकास देश के एकता एवं संगठन से है। यहाँ अनेक सम्पादक हैं जिनकी नियुक्ति योग्यता के पैमाना पर होती है। लेकिन प्रधान सम्पादक और उनके ओहदे से भी उपर चेयरमैन की नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि उपर से तोपे जाते हैं। अभी संस्था की जो दयनीय दशा है पहले मैंने कभी नहीं देखी है। अभी जो प्रधान सम्पादक के पद पर आसीन हैं उन्हें ना तो योग्यता है और ना ही दृष्टि। महाशय पाक शास्त्र के विशारद हैं। इनका बनाया हुआ नारियल तेल में

कटहर के छिलके का भुजिया मनीस्टर साहेब को इतना पसंद है कि मनीस्टर बनने के बाद मनीस्टर साहेब अपने साले को दिल्ली बुलबा लिए। संस्था का प्रधान सम्पादक का पद रिक्त था। संस्था उसी मनीस्टर के अधीन था और प्रधान सम्पादक की नियुक्ति सम्बन्धित संचिका उनके टेबुल पर लंबित था। फिर क्या कहने की बात? मनीस्टर ने अपने प्रिय साले को प्रधान सम्पादक बना दिया। मनीस्टर साहब इतने बड़े ओहदे के मंत्री हैं कि उनके साले को न तो कोई टोक सकता है और न उन्हें पदच्युत कर सकता है।''

एतबा बाजि कऽ सेवक प्रश्न केलक–''आप कृपा कर बताएं कि देश के किस राज्य से आये हैं? और किस आंचलिक भाषा से आपका प्रयोजन है।''

हम जाहि प्रांत सँ पदार्पण केने रही आ जाहि भाषाक लेल आयल रही से सेवक कें कहलियै। सेवक हमरा धैर्य दैत कहलक–''सभी भाषाओं के लिए अलग-अलग सम्पादक हैं। किन्तु मेरी जानकारी में मैथिली भाषा का अलग से कोई सम्पादक नहीं है। आप चिन्ता नहीं करें। सम्पादक मंडली में अनेक ऐसे सम्पादक हैं जो योग्य हैं। अभी मैं जिस सम्पादक के पास आपको ले जाऊँगा वे हिमाचल प्रदेश के हैं। अभी इस संस्था में जो थोड़ा बहुत काम हो रहा है वह उन्हीं के परिश्रम का फल है। वे आपकी बात को समझेंगे और आपकी सहायता करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।''

सही मे प्रधान सम्पादकक उलटा सम्पादक महोदय सज्जन लोक रहथि। ओ शिष्टाचारक प्रदर्शन केलनि। आदर सँ बैसोलनि। सेवककें ठंढा आनऽ लेल कहलथिन। हमर धधकल मोन कें हरियरीक छाँह भेटलैक। सभ तरहक आगत-स्वागत सँ निश्चिन्त भेलाक बाद हम मैथिली भाषा व्यथाक करुण पुकार हुनका लग उपस्थित केलहुँ। सम्पादक धैर्य सँ हमर बात कें सुनलनि, कहलनि–बीता हुआ समय को याद रखना मुश्किल है। शायद तीन-चार बर्ख पहले की बात है। धोती-कुर्ता और ललाट पर सिन्दूर का टीका किए हुए एक मैथिल सज्जन यहाँ पधारे थे। उन्होंने भी मैथिली भाषा के पुस्तकों का प्रकाशन एवं विपणन की समस्या का चर्चा मुझसे किये थे। लेकिन बात आयी और चली गयी थी।''

हम सम्पादकक कहबाक अभिप्राय नहि बुझि सकलहुँ। तें पुछलियनि

जे 'बात आयी और चली गयी' सँ हुनकर की तात्पर्य छनि।

जवाब मे सम्पादक कहलनि–''हम सारी बातें कहता हूँ। आपसे अनुरोध है कि शांत रहकर आप हमारी बातों को सुनें। मौलिक रचना जिसमें मुख्य उपन्यास एवं कहानी का हो, देश की दूसरी भाषा अथवा विदेशी भाषा का अनुवादित उपन्यास एवं कहानी का हो और बच्चों के लिए स्वस्थ एवं मनोरंजक कहानी हो, ये सारी किताबें हिन्दी भाषा में यहाँ छपती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी भाषा में अधिक से अधिक किताबें यहाँ छपती हैं जिसके पाठक हैं और जिसे ग्राहक पसंद करते हैं। आंचलिक भाषाओं के लिए भी इसी तरह व्यवस्था है। प्रत्येक आंचलिक भाषा की कमिटी बनती है जिसमें उस भाषा के विद्वान सदस्य बनते हैं। नियम से कमिटी की बैठक होती है और सदस्य पुस्तकों की अनुशंसा करते हैं जो पुस्तकें यहाँ छपती है। गाइड पुआइन्ट यह होता है कि अनुशंसित पुस्तकें रुचिगर हो जिसको पाठक पसंद करें और मूल्य देकर क्रय करें। इसलिए उपन्यास, कहानी, अनुवादित कहानियाँ और बच्चों की पसंद की कहानी को ही स्थान दिया जाता है। शोध विषयक लेख का महत्व अनुसंधान के लिए हो सकता है परन्तु साधारण पाठक इसे पसंद नहीं करते हैं। पुस्तक-मेला में बिकनेवाली किताबें इसी विचार को पुष्ट करता है। मान लीजिए कमिटि द्वारा अनुशंसित किताब छपती है जिसे पाठक पसंद नहीं करते हैं तो संस्था का नुकशान होता है। उस हालात में संस्था उस कमिटी को भंग कर देती है। उसके बाद नई कमिटी का गठन तो असंभव ही हो जाता है। इसलिए कमिटी के सदस्यों को छपनेवाली किताबों का चयन समझ-बूझकर करना आवश्यक होता है।''

''मेरे पास जो मैथिल सज्जन पधारे थे उनको मैंने सारी बातों की जानकारी दे दी थी। मेरी बातों को सुनकर आगत सज्जन की भृकुटि तन गयी थी। उन्होंने कहा था कि मिथिला विद्वानों की नगरी है। एक से बढ़कर एक मूर्धन्य विद्वान वहाँ जन्म लिए हैं और अभी मिथिला में निवास करते हैं। उन विद्वानों का लेख मुख्यतः शोध विषयक ही होती है। शोध विषय के कारण ही विश्वविद्यालय उन्हें पीएच.डी., डिलीट उपाधि से आभूषित करते हैं। शोध विषयक सामग्री के समक्ष उपन्यास एवं कहानी का कोई महत्व नहीं है। मैंने उन्हें समझाया था कि हिन्दी भाषा प्रेमचन्द का ऋणी है। बंगभाषा शरदचन्द्र जैसे उपन्यासकार के कारण

विकास के शिखर पर पहुँचा है। किसी भी भाषा का विकास और साहित्य को साधारण जनता के समक्ष पहुँचाने का मार्ग अच्छी एवं मनोरंजक कहानी ही होती है। इस संस्था की स्थापना का मूल उद्देश्य हिन्दी एवं आंचलिक भाषा के विकास से है। मेरे सभी दलीलों को खारीज कर महाशय वापस चले गये। इसीलिए मैंने कहा था कि बात आयी और चली गयी।''

सम्पादकजीक सभटा कथन सुनलाक बाद हमर मुँह मे बकौर लागि गेल। भऽ सकैए हमरा सँ पहिने आएल मैथिल बंधु पंडित होथि, शोध विषयक पोथी छपेबाक रुचि रखैत होथि। हमरा अत्यधिक गंभीर दशा मे देखि कऽ सम्पादक कहलनि–''आपको अफसोस करने की जरूरत नहीं है। सभी काम अपने नियत समय पर ही पूरा होता है। इसमें समय आगे-पीछे होना कोई माने नहीं रखता है। आप सही समय पर यहाँ आए हैं। मुझे आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि यहाँ के सम्पादक मंडली में एक ऐसे व्यक्ति की नियुक्ति हुई है जो ऊर्जावान हैं, साहित्य अनुरागी हैं और वे मिथिला के बासी हैं। वे मेरे मित्रवत् हैं। उन्हीं से मुझे महान कवि विद्यापति का परिचय प्राप्त हुआ है। विद्यापति की कविताओं को पढ़कर मैं मंत्रमुग्ध हो चुका हूँ। जिस भाषा के विद्यापति जैसे कवि हों उस भाषा का मान-सम्मान होना ही चाहिए। सही में आंचलिक भाषाओं की पाँत में मैथिली भाषा उत्तरी भारत का प्राचीनतम भाषा है। सभसे विलक्षण बात यह है कि इस भाषा का उच्चारण इतना कर्णप्रिय है कि उसको बारम्बार सुनने की इच्छा होती है। मैथिली भाषा की किताब इस संस्था में छपनी ही चाहिए। ठहरिए, मैं अभी इसी वक्त आपको अपने मैथिल मित्र से मिलबाता हूँ।''

एतबा बाजि कऽ सम्पादक सेवक कें बजौलनि आ मैथिल बंधुक नाम लऽ कऽ हुनका बजा कऽ लाबऽ लेल कहलथिन। क्षमा करब, हम कोनो कारणे मैथिल बंधुक नाम लऽ कऽ कथा नहि कहब। मान हुनका मैथिल भाइ कहि कऽ सम्बोधित करब।

मैथिल भाइ अयलाह। परिचय भेटल। दरभंगा जिलाक खांटी मैथिल। वयस लगभग तीस-पैंतीस बर्ख, पत्रकारिता विषय मे स्नातक, हँसमुख, उत्साह-फुर्ती सँ लबालब भरल मैथिल भाइ कहलनि–अहाँ जाहि काजे एतय एलहुँए तकर आवश्यकता किएक छै से हमरा नहि कहू। हमरा नीक

जकाँ सभ बात बुझल अछि। हमहूँ मिथिलेक छी, मैथिल छी आ हमरो मातृभाषा मैथिलीए अछि।

हमर सभहक वार्तालाप मे अद्‌भुत चेतनाक समावेश तुरंते भऽ गेल। संस्थाक ओझरायल कार्य पद्धति कें सोझराबैत मैथिल भाय कहलनि—अहि संस्थाक की काज छैक से सर्वविदित अछि आ तकर ज्ञान अहूँ कें भैए गेल अछि। कार्य पद्धति मे बाधा कि छैक से हमरा सँ सुनि लिअ। संस्थाक चोटी परहक नियुक्ति योग्यता, साहित्य-प्रेम एवं कार्य करक निपुणता पर नहि, मात्र राजनीतिक अनुशंसा पर होइत छैक। एखनुका प्रधान सम्पादक एवं चेयरमैनक की योग्यता छनि तकर खोज-पुछारि करब व्यर्थ होयत। ओ दुनू महाप्रभु कोनो धाकड़ मंत्रीक लगुआ-भगुआ छथिन तें उच्च पद पर आसीन छथि। कहबाक तात्पर्य जे गॉडफादर सचिवालय मे सिगार धूकि रहलाए आ हुनकर चमचा संस्था कें चाटि रहलैए। हिनका सभकें व्यक्तिगत काज एतेक ने रहैत छनि जे संस्थाक काज दिस ताकक समये ने भेटैत छनि। हिनका सभ सँ तकरार करब कखनो सही नहि मानल जायत। मिलिजुलि कऽ, बटरिंग कऽ कऽ बेगारी खटि कऽ अपन काज सुतारि ली ई भेल सभसँ उत्तम फरमूला। हम अहि फरमूला मे महारत हासिल कऽ संस्थाक बहुतो रुकल आ ओझरायल काज कें पूरा कऽ रहलहुँ।

मैथिल भाइ कने रुकलाह, तखन फेर सँ कहब शुरू केलनि—चेयरमैनक पुत्रीक विवाहक वयस भऽ गेलनिए। चेयरमैन कें पुत्रीक विवाह करब अनिवार्य भेल छनि। बहुतो दिन सँ बौआ रहलाए। एकटा घर-वर पसिन भेलनिए। मुदा ओ तिलक मे पाँच करोड़ माँगि रहलनिए। चेयरमैन तीन करोड़ सँ अधिक एको पाइ नहि गनता ताहि पर अड़ल छथि। हम मिथिलावासी मैथिल। ब्राह्मणक वरदान सँ मिथिलाक लोक घटकैतीक काज मे पटु होइते अछि। हमहीं घटकैतीक दौड़-बरहा क' रहलहुँए। दुनू दिसका पार्टी कें धकिया-धकिया कऽ एक बिन्दु पर अनैक अथक प्रयास कऽ रहलहुँए। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे हम सफलताक सोपान प्राप्त करबे करब। विवाह सनक पुण्य काज सम्पन्न हेबेटा करतै। तखन लेब-देब छैक। मुदा शुभकाज मे थोड़-बहुत मतान्तर तऽ होइते छैक, घटक कें गारि-फैझैत होइते छैक। मुदा शुभकाज मे तकर परवाहि करबेक ने चाही। एखन चेयरमैन हमरा पर ढरल छथि। हुनकर पत्नी बिनु

जलपान करौने डेरा सँ निकलऽ नहि दैत छथि। एखन स्वर्णिम अवसर अछि जे मैथिली भाषाक कमिटीक निर्माण करा ली। बचल प्रधान सम्पादक। ओ जन्मजात हिजड़ा अछि। ओकरो परतारैक कोनो ने कोनो उपाय हम ताकिए लेब। अहि तरहक काज मे चैयरमैनक स्वीकृति सभ सँ अधिक जरूरी होइत छैक।

हमर मोन हर्षित भऽ गेल रहए। उमंग मे आबि सामने प्लेट मे पड़ल दुनू सिंघारा एवं मिठाइ कें हम उदरस्थ कऽ लेलहुँ। बर्फ मिलाओल गिलासक शीतल जल कें सेहो गटकि लेलहुँ। हमर गदगदी देखि सम्पादक एवं मैथिल भाइ, दुनू के प्रसन्नता भेलनि। मैथिल भाइ कहलनि–हम आ हमर मित्र मिलि कऽ संचिका तैयार कऽ लेब। एक-दू दिनुका समय तऽ अबस्से लागि जेतैक। तेँ हमर पूछब आवश्यक अछि जे अपने दिल्ली मे कतेक दिन रहबै।

मैथिल भाइक जिज्ञासाक पूर्ति मे कहलियनि–चारिम दिन हमर आपसी यात्राक बर्थ आरक्षित अछि। मुदा अहाँ जँ कहबै तऽ हम यात्राक दिन कें आगाँ बढ़ा देबै।

मैथिल भाइ संतोख दैत कहलनि–रेल टिकटक आरक्षण बड़ पैघ समस्या छैक। अपने अपन यात्रा मे फेर-बदल नहि कएल जाउ। कमिटी बनबैक जे प्रक्रिया छैक तकर जानकारी हमरा अछि। कमिटी बनबैक संचिकाक काज हमरा पर छोड़ि देल जाउ। अहाँ दिल्लीक भीषण गर्मी मे कतेक दुख सहब। केवल कतऽ ठहरल छी तकर पत्ता आ अपन मोबाइल नंबर हमरा लिखा दिअ। भगवतीक कृपा हेतनि तऽ हम अहाँक डेरा पर पहुँचि नीक समाचार पहुँचा देब।

तेसर दिन मैथिल भाइ हमर होटल पहुँचलाह। कहलनि– संचिका पर चेयरमैनक दस्तखत नहि भेलए मुदा हुनकर सहमति भेटि गेलए। चैयरमैन एक-दूटा संशोधन केलनिए। कमिटी मे नौटा मैथिली विद्वानक नाम देने छलियै तकरा चेयरमैन घटा कऽ मात्र छह गोट विद्वानक नाम स्वीकृति देलनिए। कमिटीक मीटिंग दिल्लीक अलावा आन-आन शहर मे सेहो होइत छैक। विद्वानक यात्रा एवं विश्रामक सभटा खर्च संस्था कें दिअ पड़ैत छैक। संस्थाक खर्चा कम करक लेल नौ कें छह कयल गेलैए। काल्हि चेयरमैन एको घंटा लेल आफिस ऐबे करताह। चेक पर हुनके दस्तखथ सँ कर्मचारीक तनखाह आ अन्य तरहक खर्चक भुगतान

होइत छैक। ऑफिस मे हम संचिका पर कमिटीक निर्माण स्वीकृत अबस्से करा लेब।

हम होटलक बेयरा कें बजा मैथिल भाइ लेल चाह-जलपानक आदेश दिअ लगलहुँ। मैथिल भाइ रोकैत कहलनि—हमरा लग समय महग अछि। चेयरमैनक पुत्रीक विवाहक आयोजन मे मंडप, बाजा, खेबा-पिबाक विन्यास इत्यादि लेल एजेन्सी छैक। सभटा काज लेल मात्र एजेन्सी कें आदेशटा दिअ पड़ैत छैक। मुदा सभसँ कठिन काज अछि सही पुरोहितक चयन। विवाह काल सही मंत्रक उच्चारण वर-वधुक उज्ज्वल भविष्य लेल जरुरी अछि से चेयरमैनक पत्नीक विश्वास छनि। योग्य पुरोहितक खोज करक काज चेयरमैन हमरे देलनिए। पुरोहित मे उच्च गोत्र-मूलक मैथिल छथि गंगा झा। गंगा झा बेनीपट्टी लगक कोनो गामक थिकाह। हिनक पितामहक तेरह गोट विवाह भेल रहनि। मुदा गंगा झाक पिता अयोध्या झा अपन मात्रिके मे दरिद्र-छिम्मरि बनल जीवन बतौलनि। गंगा झा गामेक संस्कृत स्कूल मे विद्या प्राप्त केलनि आ उनटैत-पुनटैत दिल्ली पहुँच गेलाह। गंगा झाक भाग्यक दरबज्जा खुजि गेलनि। सम्प्रति हुनकर कइएक कित्ता मकान छनि। सबारी लेल सभ सँ महग मोटरगाड़ी रखने छथि। विवाह, मुंडन, संकल्प, शुभ-यात्रा इत्यादिक दिन ताकै लेल गंगा झा सर्वश्रेष्ठ पुरोहित मानल जाइत छथि। दिल्लीक सेठ-साहुकार हुनकर जजमान। जजमान सँ गंगा झा कें कतेक धन प्राप्त होइत छनि एकर लेखा-जोखा कियो ने कऽ सकैए। गंगा झाक लग मे जा रहलहुँए। विवाहक मंत्र पढ़ैक हुनकर फीस छनि एकावन हजार टाका। हम निहोरा करबनि, किछु कम अबस्से कऽ देताह। विवाहक अवसर पर पुरोहित कें पिअररंग मे रंगल दू जोड़ धोती, गंजी, कुर्ता आ पाँच ग्राम सोनाक हनुमान देल जाइत छनि से हम चेयरमैनक पत्नी कें पहिने सुना देने छियनि। एतेक आमदनीक बादो गंगा झा कतेक छिड़िएताह, कतेक खटरास पसारताह तकर भय तऽ हमरा अछिए। एतुका लोके मैथिल पुरोहितक बड़ मान-सम्मान करैए। तकर कारण छै। संस्कृत मंत्रक पाठ करऽ मे हिनकर सभहक उचारण बड़ विलक्षण होइत छनि।

छोड़ू एहि गप्प कें। जँ गप्प करितहि रहि जायब तऽ चेयरमैनक कन्या कुमारिए रहि जेतीह।

एतबा बाजि मैथिल भाइ नमस्कार करैत उठि गेलाह।

छओ

अमृतक परिभाषा कें बुझब आ कहब कठिन। मुदा एखन हम जाहि अमृतक चर्चा करब तकरा सुनऽ मे अहाँ कें अबस्से नीक लागत। सातु मे मिलाओल बीटनोन, मरीचक बुकनी, भूजल जीर आ पानि सँ भरल टिनही गिलास मे दहाइत बर्फक टुकड़ी। एहने पेय पदार्थ के सम्प्रति हम अमृतक संज्ञा देलए।

नई दिल्लीक रेलवे स्टेशन। मइ महिनाक अन्तिम सप्ताह। पैंतालिस डिग्रीक ओहिपार पहुँचल सेल्सियस। हमर ट्रेनकें प्लेटफार्म पर आबऽ मे लगभग दू घंटाक बिलम्ब। टहकैत रउद देहक पसीना कें सोखि नेने रहए। मात्र माथक केशक जड़ि सँ बुलबुला कनपट्टी पर टघरि रहल छल। स्टेशनक एक स्थान पर ठाढ़े-ठाढ़ हम सातुक घोर, क्षमा करब, अमृत कें सिप कऽ रहल छलहुँ। मुदा एहन कष्टक दशा मे रहितहुँ मोन मे हर्षक वयार बहि रहल छल। तकर समुचित कारण छल। हम जाहि काजे दिल्ली आयल रही तकरा पूर्ण करऽ मे सफल भऽ गेल रही। होटल सँ स्टेशनक लेल बिदा होबऽ काल मैथिल भाइक फोन आयल छल—सुखद समाचार प्राप्त करू। मैथिली भाषाक कमिटी सम्बन्धी संचिका पर चेयरमैनक स्वीकृतिक मोहर पड़ि गेल।

सातु मास्टर टोकलक—श्रीमान, बड़ी काल सँ देख रहलहुँए अहाँ खाली भेल गिलास कें हाथ मे पकड़ने सोच मे डूबल छी। एहन भीषण गर्मी मे ठाढ़े-ठाढ़ दिवा स्वप्न देखब अबस्से रुचिगर हैत। ओना भ्रमित संसार मे सपना देखि-देखि कऽ जीवनक एक कात सँ दोसर कात पहुँचब नसीबेवला कें प्राप्त होइत छैक। एखनो अहाँक ट्रेन आबऽ मे घंटा भरिक समय छैक। अहाँक सातुक गिलास खाली अछि। कही तऽ एक गिलास सातु आरो दऽ दी।

सातु मास्टरक टोकब मे अपनत्व भरल छलै, नीक लागल। कहलियै—दहक, एक गिलास आरो दहक।

प्लेटफार्म पर लोकक भीड़ बहुत अधिक रहै। प्लेटफार्मक एक कात सात नंबर आ दोसर कात आठ नंबरक बोर्ड टाँगल रहै। दरभंगा जाइबला आठ नंबरक प्लेटफॉर्म पर औतैक आ तकरा आबऽ मे समय छैक। सातु मास्टर हमर हाथक खाली गिलास लेलक आ भरल गिलास पकड़ा

देलक। संगहि कहलक–अहाँ बड़ी काल सँ ठाढ़ छी। वयस भऽ गेलए। पयर कें अधिक यातना नहि दिऔ। हम स्टूल दैत छी, बैसि जाउ।

स्टूल पर बैसि कऽ सातु मास्टरक दोकानक मुआयना केलहुँ। एक लग्गा लम्बा आ आध लग्गा चौड़ा। तीन कात लकड़ीक उँच्चे डेस्क सँ घेरल। डेस्क पर विभिन्न प्रकारक बिस्कुट, पेस्ट्री शीशाक जार मे भरल। मुदा ग्राहकक माँग केवल पानि मे घोरल, बर्फ मे डुबाओल सातु आ ठंढा पानिक। सातु मास्टरक एकटा छौंड़ा असिस्टेन्ट। अपन सुटकेश कें पयरक बीच दबोचि, स्टूल पर बैसि कऽ सातुक चुस्की लेबऽ लगलहुँ। सातु मास्टर पुछलक–दरभंगा जेबै ने?

–हँ हौ, दरभंगे जेबै। तोहूँ तऽ मिथिलेक छिअ ने?

–हमहीं नहि, प्लेटफार्म पर जतेक दोकानवला, फेरीवला कें अहाँ देखैत छिअइ, सभ मिथिलांचल नामक पुण्यधामक बासी अछि। अहाँ कें तऽ अबस्से बुझल हैत जे मिथिलाक तीन-चौथाइ चूल्हा मनीआडरे सँ पजरैत छैक।

सातु मास्टरक जवाब मे सन्निहित ग्लानिक प्रतिकार करैत हम कहलियै–चिंता नहि करऽ। ईश्वरक अनुकम्पा सँ प्रांतक जंगलराज समाप्त भऽ गेलैए। नव तरहक सरकारक गठन भेलैए। प्रांतक हुलिया बदलि रहलैए। विकासक दरबज्जा खुजि गेलैए।

सातु मास्टर किछु पल तक एकटक हमरा दिस तकैत रहल। फेर दोसर एकटा स्टूल आनि हमर बगल मे बैसि रहल। तखन कहलक–विकास! कोन तरहक विकासक गप्प अहाँ करैत छी? एखन तक विकास एतबे भेलैए जे प्रांत चरबाहा स्कूल सँ खिचड़ी स्कूल तक पहुँचलैए।

सातु मास्टरक कटाक्ष हमरा कोनादन लागल। तमसाइते कहलियै–तों एना मूर्खचपाट जकाँ किएक बाजि रहलए?

हम बुद्धिमान छी तकर घमंड हमरा पर्याप्त मात्रा मे छल। सातु मास्टर अर्थात् सातु बेचिकऽ जीवन यापन केनिहार आ हम बुद्धिक आगर संग उपन्यास लेखक। सातु मास्टर कें हेय दृष्टि सँ देखब हमर अधिकार क्षेत्र मे अबैत छल। मुदा सातु मास्टर जे बात कहलक, जे तर्क उपस्थित केलक तकरा सुनिकऽ हम अबाक बनि गेलहुँ। ओकर तर्क अकाट्य छलैक। प्रांतक भविष्य की होमऽ जा रहल छैक तकर स्पष्ट संकेत रहै।

सातु मास्टर हमर आँखि मे अपन नजरि ठेकबैत बाजल–श्रीमान्,

जेहन दृष्टि तेहन सृष्टि। पछिला अनेक बर्ख तक प्रांत मे एहन शासन कूद-फान करैत रहलै जाहि सँ सम्पूर्ण प्रांत चोरी, डकैती, बलात्कार, अपहरण, हत्याक खरिहान बनि गेलै। देश मे अपन प्रांत बदनामीक गर्त मे पहुँच गेलै। बिहारी कें देखिते आन-आन प्रांतक लोक थू-थू करऽ लागल। हम बिहारी छी से बाजऽ मे हमरा लाज होबऽ लागल। हम ओहि निम्न दशा मे पहुँच गेलहुँ जे हमरा अपना आप सँ घृणा हुअ लागल छल। प्रजातंत्रक करिश्मा। भोट मे ठाढ़ भेनिहार एहन शासन अनलक जाहि सँ सभठाम अराजकता पसरि गेल। जाति सम्प्रदाय आ मजहब भोटक मूलमंत्र बनि गेल। सभ तरहक मानवी गुण-धर्मक सत्यानाश भऽ गेलै। सभ तरह कुकर्म एतुका कुटीर उद्योग बनि गेल। प्रांत मे हाहाकार मचि गेल। साधारण लोक कें जिअब कठिन भऽ गेल। उद्योग-धंधा प्रांत मे पहिनहुँ कमे छलै आ जेहो छलै तकर भट्ठा बैसि गेल।

—तखन चुनावक समय एलै। जनता कें शासन बदलै लेल दोसर तरहक संयुक्त राजनीतिक पार्टी भेटलै। शासन बदललै। लोक कें जंगलराज सँ मुक्ति भेटलै। आशाक नव किरण प्रस्फुटित भेलै। किछु बर्ख तक सड़क-पुल बनलै, बिजली मे सुधार भेलै, शिक्षक स्कूल जाय लगलाह, कर्मचारी कें समय पर दरमाहा भेटऽ लगलै। विश्वासक संग लोक बाजऽ लागल—आह! हमर सभहक भाग्य बदललए, दुर्दिन समाप्त भेलए।

—मुदा उज्ज्वल भविष्यक सपना किछुए दिन मे समाप्त भऽ गेलै। नवका शासक, हम बड़ काबिल छी, हमरा सँ अधिक काबिल प्रांतक कोन कथा देश मे सेहो कियो भइये ने सकैए, संयुक्त राजनीति कें तोड़ि अहंकार मे डूबि गेलाह। हुनका जंगल राजक विरोध मे भोट भेटल रहनि से बात हुनका मगज मे ढुकिए ने सकल। नवका शासकक महत्वाकांक्षा हुनकर कद सँ बहुत पैघ बनि गेल। आन्हर बनल प्रांतक नसीब अपन माथ फोड़ऽ लागल। पाँच बर्खक बीचहि मे सांसदक चुनाव भेलै। नवका शासक मुहें भरे खसलाह। मुदा तइयो हुनकर अहंकार समाप्त नहि भेल। एकटा बात अबस्से भेलै। नवका शासक भयातुर बनि गेलाह। सोचलनि, की करबाक चाही? एखन तऽ प्रांतक अगिला चुनाव मे दू बर्खक बिलम्ब छैक? नवका शासक अपन बुद्धि कें खखोरलनि आ अन्ततोगत्वा जंगलराजक चेयरमैनक आँगा नतमस्तक भऽ गेलाह।

श्रीमानजी, प्रांतक अभिमानी शासक अपन संस्कारक अनुरूप विकास

नीति कें छोड़ि खैरातक नीति अपनौलनि। खैरातक नीति एक सीमाक बाद विकास कें पंगु बना दैत छैक। ई अछि अर्थशास्त्रक अकाट्य नियम। मुदा नवका शासककें अर्थशास्त्रक नीति कें बुझबाक बुद्धिए ने छनि। हुनका भोट चाहियनि आ से भेटतनि खैरात बाँटला सँ। नतीजा भेलै जे प्रांत विकासक नाम पर फेर सँ दरिद्र बनि गेलए। तें हम कहलहुँ जे विकास चरबाहा स्कूल सँ आरम्भ भऽ कऽ खिचड़ी स्कूल तक पहुँचलैए।

हम एकाग्र भेल सातु मास्टरक कहब सुनि रहल छलहुँ। एक तरहक आन्तरिक वेदना सातु मास्टरक चेहरा पर पसरि गेल रहै। ओ बजिते रहल—समस्याक अन्त नहि छैक। मुदा स्टेशन पर हमर अहाँक वार्तालापक समयक अन्त छैक। तें गप्प-सप्प कें संक्षेप करक लेल आ किछु हद तक एकरा सोझरेबाक लेल हम मुख्य तीन समस्या दिस अहाँक ध्यान आकृष्ट करब। पहिल अछि जनसंख्या, दोसर भेल पर्यावरण। तेसर तऽ राक्षस बनल भ्रष्टाचार अछिए। पहिने जनसंख्या पर विचार करी। आबादी मे अबाध गति सँ वृद्धि भऽ रहलैए। प्रांत मे जनसंख्याक बिस्फोट भयावह बनि चुकलैए। खेत-खरिहान, गाछी-बिरछी, पोखरि-झाँखरि पर बासडीह बनि रहलैए। सड़क पर चलब मुश्किल भऽ गेलैए। आब अहि समस्याक अनदेखी करैत खैराती सरकार की कऽ रहलैए? महिला गर्भवती भेलीह आ कि सरकार एक टाँग पर ठाढ़ भऽ गेल। फ्री मे जाँच, फ्री मे सूई, फ्री मे दवाइ, फ्री मे अस्पताल पहुँचाबक ले एम्बुलेन्स। प्रसवकालक सभटा खर्च फ्री मे। बच्चा छौंड़ा नहि छौंड़ी छैक। तुरंत खैराती सरकार छौंड़ीक नामे पाँच हजार टाका जमा कऽ देलक। छौंड़ीक विवाहक समय ई टाका काज देलकै। अहि खैरातक की माने बेलै। माने भेलै सरकारक पुचकारी—तों बच्चा जनमाबैत रह, जनसंख्या मे वृद्धि करैत रह। तोरा कोनो चिंता नहि करक छौक। तोहर आ तोहर परिवारक लेल लाल कार्ड, पियर कार्ड, हरियर कार्ड तऽ मौजूद छौहे ने। फ्री मे बुतात आ आ जँ दुखित पड़बे तऽ तीस हजार रुपैया तोहर अस्पताल, डाक्टर, दवाइक खर्च फ्री मे भेटतौ। आब आउर की दिऔ? तों एकेटा बात मोन रखिहें, भोट हमरे दिहें।

—दोसर समस्या अछि पर्यावरणक। एकरा संक्षेप मे बुझक प्रयास करिऔ। गाछ-बृक्ष जे मनुक्खक प्राण रक्षार्थ आवश्यक छैक, अंधाधुंध कटि रहलैए। एक तरहें बुझी तऽ समाप्ते भऽ चुकलैए। हालात एतय तक पहुँच गेलैए जे जारनिक अभाव मे मुर्दा जराओल नहि जाइए, माटि मे

गारल जाइए। जल, वायु, अन्न-फल सभ किछु प्रदूषित भऽ रहलैए। होबऽ दिऔ। सरकार आँखि पर पट्टी बन्हने अछि आ ओहि सरकार कें वोट देनिहार ताल ठोकि रहल अछि। तेसर समस्या अछि भ्रष्टाचारक। जन्म सँ मृत्यु तक, प्रखंड सँ न्यायालय तक घूस दिऔ, काज कराउ आ चुपचाप नोर बहाउ। कर्मचारी जे स्वभावतः परजीबी होइए, जनता कें कष्ट देबा मे पटु होइए, निर्लज्ज भेल घूस कमाइए तकरा कोनो तरहक रोक-टोक नहि छैक। नवका सरकार अहि तीनू समस्या कें या तऽ देखि नहि रहलए अथवा देखऽ नहि चाहैए। ओकर एकमात्र लक्ष्य छैक जेन-तेन प्रकारे भोट समटब।

—प्रजातंत्र मे सुचारु तरहें शासन चलबै लेल सभ सँ आवश्यक तत्व अछि जनताक सहयोग। सहयोग देबवला जनता होथि केहन? जनता एहन होथि जनिका अधिकारक संग कर्त्तव्यक सेहो ज्ञान होनि। जनता अनुशासित होथि, जागरूक होथि, कर्त्तव्यक प्रति समर्पित होथि। जागरूकता औतै कोना? जागरुकता औते शिक्षा सँ। जनता कें जागरूक बनबै लेल शिक्षाक प्रसारक हेतु सरकार सचेष्ट भेल। फ्री मे किताब-कॉपी, वस्त्र, साइकिल आ तकर अलावे स्कूल मे दिनुका मुफ्त भोज। कोनो हर्ज नहि। लोभ अनतै शिक्षाक प्रति आकर्षण। स्कूल मे छात्र-छात्राक भीड़ जमा भऽ गेल। आब नीक जकाँ एतबा ध्यान दिऔ जे छात्र-छात्रा कें विद्यालय मे केहन शिक्षा भेटि रहलैए। कोन तरहक शिक्षक शिक्षा देबाक काज मे नियुक्त भेलए।

एतबा बाजि कऽ कनेकाल तक सातु मास्टर चुप भेल रहल। बुझि पड़ल जे ओ अपन मोन मे उमड़ैत विचार कें एकत्र कऽ रहल अछि। तखन कहलक—किछु बर्ख पहिने अपन प्रांत मे राजनीतिक उनटा-पुनटा नक्सा बनल रहैक। सरकार बनलै पिच्छड़ जातिक। ओहि सरकारक नायकक मोन मे पुस्त-दर-पुस्त सँ जमा भेल घृणाक एतेक पैघ पहाड़ रहै जे ओ कानून-व्यवस्था मे सुधार आनक बदला ओकरा तोड़ि-मरोड़िकऽ राखि देलक। अजीबे तरहक राजनीतिक नौटंकी शुरू भेल रहए। बहुतो तरहक करतब भेलै, मुदा एखन हम मात्र शिक्षाक केहन दशा भेलै तकरा दऽ कहब। अँग्रेजी विषय कें पाठ्यक्रम सँ हटा देल गेलै। परीक्षा मे चोरी करक लेल ढोलहो पिटबा देल गेलै। शासकक नायकक जयजयकार होबऽ लागल। हेंजक हेंज छात्र-छात्रा स्नातक डिग्री सँ आभूषित भेलाह।

बाद मे जखन एहन शिक्षाक मूल्यांकन भेल तऽ प्रांत भरिक आत्मा कलपि गेल रहए। छात्र-छात्रा केहन शिक्षा ग्रहण केलनि तकर जखन जाँच भेलै तखन एकर भयावह प्रतिक्रियाक बोध भेल रहै। ने दू शब्द बाजक अवगति आ आ ने दू शब्द लिखक लूरि। थोड़ेक स्नातक छल-बल सँ ऊँच डिग्रीधारी सेहो बनि गेलाह। एखन प्रांत मे जे धराधर शिक्षकक बहाली भऽ रहलैए सभ ओही आपात समयक डिग्रीधारी छथि। एहन विद्या-भूषण कें देशक अन्य राज्य मे स्थान नहि भेटतनि मुदा अपन प्रांत मे हुनकर स्थान सुरक्षित छनि। हुनकर व्यक्तिगत, हुनकर समाजक, हुनकर सम्प्रदायक भोटक बले ने सरकार बनलैए। आब बिचारियौ जे एहन शिक्षक समुदाय विद्यालय मे केहन शिक्षा दऽ रहलखिनए? सोचबै तऽ मोन कलपि जायत। सामूहिक रूपे शिक्षक खिचड़ी पकबैत छथि, छात्र-छात्रा मे बँटबारा करैत छथि। अजुका बँटबारा मे अहाँ कें हिस्सा नहि भेटत। कियैक यौ? अहाँ काल्हि दस किलो अधिक चाउर अपन हिस्सा मे लेने रहिए तें।

सातु मास्टर कहि रहल छल। ओकर कहल बातक मर्म हम बुझि रहल छलियै। सही मे, हमर प्रांत मे सरकारी विद्यालय मे शिक्षाक सत्यानाश भऽ रहल छल। सातु मास्टर उत्साह मे बजिते रहल—उद्योग अर्थात् कुटीर उद्योग, मध्यम श्रेणीक उद्योग, पैघ उद्योग आ तकरा संगे कृषि आधारित उद्योग, से भेल आर्थिक विकासक रीढ़। अपन प्रांत करमघट्टू। पहिनहुँ कमे उद्योग रहै आ जेहो रहै से सभटा बिला गेलै। उद्योग कें पुनर्जीवित करक बदला अहंकारी सरकार खैरात बाँटि रहलए, भविष्यक ललाट पर टिकुली साटि रहलए। खैरात खेनिहार कें मात्र अधिकारक ज्ञान रहैत छै, कर्त्तव्यक प्रति जिम्मेदारी ओकरा होइतहि नहि छैक। हम कोनो नहि करबौ मुदा हमरा बुतात दे, घर बनबै लेल नगदी दे, नेना-भुटका लेल स्कूल खोल, गीत सुनै लेल रेडियो दे। की कहलें रेडियो नहि देबहीन? दोसर पार्टीबला आयल रहए। हँ रौ, ओहो दलित, महादलितक पार्टी छियै। जकरा लग भोट सैह ने भेलौ तोहर बाप। ओ पार्टीबला, रंगीन टी.भी. देतै से कहि गेलए। तखन ओकरे भोट देबै ने, तोरा भोट किएक दिऔ? कहलकै किने, सरबे एलाह अछि हमरा सभ के ठकै लेल।

—श्रीमानजी, दुखक संग हमरा बाजऽ पड़ि रहलए जे एखुनका खैरात नीति काल्हि अकर्मण्य, आलसी, खुदगर्ज जनताक बीच एक खास

किस्मक मनोवृत्तिक पोषण कऽ रहलैए। एहन मनोवृत्तिक प्रतिफल की हेतै? जनता ने सोस्लीस्ट बनतै आ ने कम्युनिस्ट। जनता आतंकवादी आ नक्सली सेहो नहि बनतै। ई सभ बनक लेल उहि चाही। जनता बनतै विकासक दुश्मन, मनुक्खक दुश्मन, समाजक दुश्मन आ अंत मे अपन आपक दुश्मन। एहन मनोवृत्तिवला हमरा जकाँ सातु बेचिकऽ पेट नहि भरतै। ओ एहन समाजक निर्माण करतै जाहि मे विभिन्न तरहक भ्रष्ट आचरण कें उकसाबा भेटतै। चाबसी भेटतै। खैरात नीति एहन अराजकता पसारतै जे ओ अंतमे भोटबला सरकारे कें गिरि जेतै।

–श्रीमानजी, देखला सँ अहाँ पढ़ल-लिखल लोक बुझि पड़ैत छी। तें हमरा मूर्ख-चपाट कहि कऽ हमर हँसी उड़ा रहल छी। प्रांत मे जंगलराज समाप्त नहि भेलैए। जंगलराज सुखा कऽ ठूठ भऽ गेल रहै। मुदा नवका सरकारक क्रिया-कलाप सँ फेर ओ पघिल गेलैए। हम आग्रह करब जे हमर कहल बात कें विचारिऔ। सही विचार करक संस्कार अहाँ सभकें सृष्टिकर्त्ता देने छथि। खैरात नीति विकास नहि सर्वनाशक पथ प्रशस्त कऽ रहलैए। जखन आगि लगतै तखन छोटका-बड़का, मूर्ख-विद्वान, अमीर-गरीबक भेद नहि रहतै, सभहक घर सुड्डाह भैए कें रहतै। तें अनठेला सँ काज नहि हेतै, एकरा गंभीरता सँ सोचैक जरूरत छैक।

भविष्य देखैक दृष्टि ककरो-ककरो मे होइत छैक। सातु मास्टरक तर्क मे एतेक वजन रहै जे हमर मोन कें मथि देलक। पहिल बेर हमरा अपन प्रांत लेल चिंता जागि गेल। एखन तक हमर धारणा कायम छल जे होइत छै तकरा होबऽ दिऔ। सरकारक गठन भोट सँ बनैत छै। जतय भोट छै से चिंता करऽ जे केहन सरकार बनए। हमरा अहि सँ कोनो मतलब नहि अछि। मुदा सातु मास्टरक कहब कठोर सत्य पर आधारित रहै। जँ आगि लगतै तऽ सभहक घर जरतै। तें प्रांतक वर्तमान एवं भविष्यक स्थितिकें विचार करब सभहक दायित्व आ कर्त्तव्य बनैत छै।

जवाब मे सातु मास्टर कें किछु कहितियै तकर अवसर नहि भेटल। कतहु सँ हहाति मोहना ओतय पहुँच गेल छल। हम सातु मास्टरक बगल मे बैसल रही मुदा मोहना हमरा ने देखलक आ ने चिन्हलक। मोहना एकटक सातु मास्टर दिस ताकि रहल छल। मोहना कें देखितहि सातु मास्टर हड़बड़ाइत ठाढ़ भेल आ एक लग्गा दूर मे ठाढ़ भेल मोहना लग पहुँच गेल। दुनू मे गप्प-सप्प होबऽ लगलै। दुनूक गप्प-सप्पक विषय की

रहै तकर जानकारी हमरा नहि छल। मुदा मोहनाक चेहरा पर पसरल उत्तेजनाक लहरि एतेक ने स्पष्ट रहै जे मामला गंभीर छै तकर हमरा बोध करा देलक।

हमर नजरि छिटकल। मोहना आ सातु मास्टर सँ कनिकबे हटल एकटा युवती कें देखलियै। युवती एकटक मोहना आ सातु मास्टरकें देखि रहल छलि। युवती कें चिन्हऽ मे हमरा एको क्षणक बिलम्ब नहि भेल। युवती अबस्से मोहनाक बहीन मालती छलि। मालतीक नाम मोहना मुँहें हम कइएक बेर सुनने रही, आइ ओकरा देख रहल छलहुँ। मोहना एक सुन्दर, स्वस्थ एवं बाचाल युवक छल। ओकर बहीन मालती सौन्दर्यक प्रतिमा छलि। सौन्दर्य कतेक मोहक भऽ सकैए तकर ज्ञान मालती कें देखने हमरा भऽ रहल छल। मुदा एकरा लेल धन्यवाद ईश्वर कें दियनि अथवा देवचंद कें, तकर तसफीया करऽ मे हम असमर्थ भऽ गेल रही।

हम एकटक मालतीए कें देख रहल छलहुँ। मालतीक गाल पर केशक लट छिड़िआएल रहै। मुदा ओकर आँखि मे अंगार धधकि रहल छलै। की भेलैए? किएक दुनू भाय-बहीन एखन दिल्लीक स्टेशन पर आयल अछि। हमर धमनीक प्रत्येक बिन्दु मे कंपन होबऽ लागल छल। मोन अधीर भऽ गेल। मुदा मोन मे समायल भयक निराकरण नहि भऽ सकल। कारण तखने प्लेटफार्मक जबर्दस्त भीड़ मे सँ कियो गर्द केलक–ट्रेन आबि रहलैए।

समूचा प्लेटफार्म पर हड़बीर्रो मचि गेलै। होहल्ला कनफोड़ा बनि गेल। कियो गलाफारि कऽ टाहि देलक–एक बेर प्रेम सँ कहियौ गंगा माता की जय। भीड़क सम्मिलित ध्वनि जय, जय, समूचा प्लेटफार्म कें हिला देलक। हमरो चित्त अस्थिर भऽ गेल। ट्रेन प्लेटफार्म पर पहुँचि कऽ ठाढ़ भऽ गेल रहए। ट्रेन मे चढ़बाक व्यग्रता एतेक ने तीव्र होइत छैक जे जँ ताहि घड़ी यमदूतो आबि जेताह तऽ हुनका कहल जेतनि–कने ठहरू। हमरा डिब्बा मे चढ़ऽ दिअ। अपन बर्थ ताकऽ दिअ। सीट पर बैसऽ दिअ। मोटरी कें सैंतऽ दिअ।

मोहना, मालती आ सातु मास्टर दिस सँ हमर ध्यान हटि गेल। सूटकेस उठौने हम ट्रेन मे अपन डिब्बा ताकऽ लगलहुँ।

सात

ताकऽ मे कने समय लागल। थ्री टायर ए.सी. बॉगी। डिब्बा भेटि गेल। एक खाना मे आठ बर्थ। हमर रस्ता कातक निचला बर्थ छल। निश्चिन्त भेलहुँ आ बर्थ पर चुपचाप बैसि गेलहुँ। यात्रीक अनवरत आगमनक, सामूहिक व्यग्रता आ हलचल। हलचल मे फेंटल वेकलताक एकटा अनुपम दृश्य। मुदा हलचल आ कि हड़बड़ी तुरंते समाप्त भऽ गेल। प्रायः सभटा यात्री अपन-अपन बर्थ पर पहुँच गेल रहथि। बिना सीटी बजौनहि ट्रेन ससरऽ लागल। वातानुकूलित यंत्र मे खरखर खरखरक आवाज। हल्लुक मुदा शीतल हवा शरीर संगे मोन-प्राण कें शीतल कऽ देलक।

उपरका बर्थ चरमरेलै। जिज्ञासा भेल। बर्थ सँ नीचा उतरि ठाढ़ भेलहुँ आ मूड़ी नमरा कऽ उपरका बर्थ दिस तकलहुँ। मोहनाक बहीन मालती कें बैसल देखलियै। ई कखन आबि कऽ बर्थ पर बैसि गेलए? पता नहि। मोहनाक बहीन मालती कें देखि हमरा प्रसन्नता हेबाक चाही। मुदा प्रसन्नता नहि भेल। एक अज्ञात भय सँ समूचा देह सिहरि उठल। मालती असगरे अछि? मोहना कतऽ गेलै? दिल्ली सँ दरभंगाक यात्रा मात्र बाइस घंटाक आ चिन्ता जिनगी भरिक। ई केहन बात भेलै? निरर्थक संशय? संशय मानसिक तनावक मुख्य कारक थिक। हम अपने सोच कें समेटि लेलहुँ आ अपन बर्थ पर बैसि रहलहुँ।

सामनेक बामा कातक निचला बर्थ पर सय-सवासय किलो वजनक एकगोट भीसन्ड मोट यात्री बैसल छल। ओकर आकृति धार्मिक ग्रन्थ मे वर्णित राक्षस सदृशक छलै। ओ सनगोहि जकाँ सों सों कऽ रहल छल। ओहि गेंडा टाइप मनुक्खक बगल मे एकटा छौंड़ा नीचा दिस टाँग छिड़िया कऽ सेहो बैसल रहए। खिलखिल पातर छौंड़ाक गंजी मे भूकैत कुकूरक छाप रहै। छौंड़ा हमरे दिस ताकि रहल छल। ओकर आँखि बिज्जीक आँखि जकाँ गोल आ डिम्हा बैरक आँठी जकाँ चौदिशि नचैत। एहन विचित्र आँखिक बनावट पहिने कहिओ ने देखने रही। हम छौंड़ा दिस सँ अपन नजरि हटा लेलहुँ। मोन मे आतंक पैसि गेल रहए से निकलि गेल।

सामने दहिना कातक बर्थ पर धोती-कुर्ता पहिरने अधवयसू खाँटी मैथिल जगह पकड़ने रहथि। महाशय शीत, सरल, सज्जन स्वभावक लोक

छथि से हुनका देखिते अनुमान रहए। मैथिल बंधुक बगल मे शायद हुनकर पुत्र बैसल रहथि। पुत्रक वयस लगभग पच्चीस बर्ख, साफ-सुथरा, पेन्ट-शर्ट मे, मुदा हुनक अर्द्धमुद्रित आँखि सँ उदासी झहरैत।

एक कात ककरहु मूड़ी छोपैबला शैतान आ दोसर कात एहन सज्जन लोक जे मानि लिअ गौरक्षा समितिक अध्यक्ष होथि। बाहरे रेलक सफर! तरह-तरहक मुनक्खक साक्षात्कार। प्रायः सभटा यात्री डिब्बाक अहि खाना मे पहुँचि गेल रहथि। नहि यौ, उपरका दुनू दिसका बर्थ तऽ खालिए पड़ल छल। ट्रेनक गति तेज भऽ गेल रहै। बर्थक सीट मे थरथरी पैसि गेल छलै। करिया कोट पहिरने आ नाक परहक लटकल चश्मा कें आँगुर सँ ठेलैत टिकट चेकर पहुँच गेलाह। चेकरक पछोर धेने दू गोट अनठिया यात्री सेहो आबि गेलनि। चेकरजी बेराबेरी सभहक टिकट मे चेन्हा लगौलनि आ अपन हाथ महक लिस्ट मे पेन्सिल घसलनि। तकर बाद चेकर महोदय अपन पाछाँ मे आज्ञाकारी शिष्यक मुद्रा मे ठाढ़ दुनू यात्री दिस तकलनि, आँखिक डिम्हा नचा इशारा केलनि, दुनू यात्री सँ प्राप्त दक्षिणा कें पेंटक जेबी मे ठुसलनि आ अधीर भेल दुनू यात्री कें उपरका दुनू बर्थ पर जयबा लेल सहमति प्रदान केलनि। सभटा काज सहजता सँ सम्पन्न भऽ गेल। चेकरजी इमानदारक मुखौटा पहिर अगिला खोप दिस डेग उठौलनि। एकटा आश्चर्यवला बात भेल रहै जकरा हम अपन मोनक डायरी मे नोट केलहुँ। चेकरजी सभहक टिकट चेक केलथिन, दू गोट बिना टिकटक यात्री कें बर्थ सेहो एलॉट केलथिन। मुदा जाहि बर्थ पर मालती बैसलि छलि तकर ने टिकट चेक केलथिन आ ने ओहि बर्थ दिस तकलथिन। से किएक? ओझरायल बात भेलै ने? मुदा एकर फरिछौट हम ककरा सँ करितहुँ।

डिब्बाक ए.सी. अपन करामात देखौलक। एखन तक ओ लजायल रहए। मुदा एकाएक ओकरा मे जोश आबि गेलै। ए.सी. फूल स्पीड मे ब्लास्ट करऽ लागल। ठंडक प्रकोप एना ने पसरि गेलै जेना बॉगी मनुक्ख लेल नहि, आलू राखैक कोल्ड स्टोरेज होइक।

गेंडा गोहिक चमराक रंगबला कमीज पहिरने छल। ठंड भेल बसातक लहरिमे खुशी सँ टभकऽ लागल। ओ हाथ-पयर पसारि बर्थ पर लम्बा-लम्बी पसरि गेल। ओकर संगक छौंड़ा धनुषाकार भऽ सीटक कात मे पोन रोपने अपन बैरक आँठीबला आँखिक डिम्हा कें नचाबऽ लागल। मुदा दोसर

बर्थ परहक स्वभाव सँ सज्जन आ डरपोक मैथिल बंधु जाड़क कनकनी सँ अइंठऽ लगलाह। ओ गमछा निकाललनि, ओकरा तीन भत्ता मे चौपेतलनि आ ओकर मुरेठा बना माथ मे एना कें बान्हि लेलनि जाहि सँ हुनकर श्रवण-मार्ग झँपा गेलनि। मैथिल बंधुक पुत्रक आवभाव मे कोनो तरहक परिवर्तन नहि भेलनि। हुनक चेहरा पर पसरल उदासीक भाव आर उदास आ गहीर भऽ कऽ पसरि गेलनि।

एक मिनटक भीतरे कंबलक मोटा उठौने यात्रीक सेवक पहुँच गेल। यात्री सेवक के छल? यात्री सेवक छल मोहना। मोहनाक प्रवेश सदिखन अकस्माते होइत रहलैए आ ओकरा देखितहि हमर हृदय मे स्थापित कोमल यंत्र मे अति कोमल भाव अपनेआप झंकृत होइत रहलए। सभ यात्री कें कंबल बँटैत मोहना हमर बर्थ लग ठाढ़ भेल। एगो कंबलक बंडल हमर बर्थ पर रखलक आ बाकी बचल एकटा बंडल उपरका बर्थ पर रखैत फुसफुसायल—मालती, हइऐ कंबल ले। नीक जकाँ देह झाँपि ले। कोनो चिन्ता नहि करिहें। हम अधिक काल अही डिब्बा मे रहब।

मोहना मालतीक नाम लऽ कऽ सोर पाड़लकै। आस्ते आवाज मे ओकरा सभ बात कहलकै। सामने बैसल गेंडा आ ओकर सटहा छौंड़ा मालतीए दिस ताकि रहल छलै। दुनूक ताकैक अन्दाज मे जेना बाझ झपट्टा मारक लेल आतुर होअय ताहि तरहक डरावन भाव भरल रहै। हम सही-सही किछु बूझि नहि रहल छलियै। मुदा एक तरहक आतंक सँ मोन नाचैत जकाँ भऽ गेल रहए।

मोहनाक देल कंबलक ढेरी कें हम उनटाबऽ-पुनटाबऽ लगलहुँ। कंबलक अलावा खादीक सूत सँ बनल दूटा चद्दरि, अम्मट जकाँ चपकल एकटा तकिया आ दू बीत्ताक एकटा तौलिया। हम बर्थ सँ उतरि सभ वस्तु कें यथा स्थान सरियाबऽ लगलहुँ तखने मोहना टोकलक—दादा, अहाँ परिश्रम नहि करू। हम हाजिर छी। हम अहाँक सभटा काज कऽ दैत छी ने।

मोहना लम्बा-तगड़ा, खुबसूरत नवजवान बनि गेल रहए। मुदा ओकर बाजब ओहने मधुर रहै जेहन पहिल पहिल कचरा किनै काल ओकर बाजब सुनने रहियै। हम कने हटि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ। मोहना बर्थ पर बिछौन ओछा देलक आ कहलक—दादा आउ। आबि कऽ बैसि जाउ। देह पर कंबल लपेटि लिअ। यात्रीएक निर्देश पर ए.सी. कें फूल ब्लास्ट मे

एना चलाओल जाइत छैक जाहि सँ साधारण यात्री कें ठंढ़ बेबर्दास्त भऽ जाइत छै। मुदा करबै की?

हम बर्थ पर बैसि गेलहुँ। मोहना फेर टोकलक—दादा एखन हम जाहि काज पर नियुक्त छी तकरा पूरा कऽ चुकलहुँए। जँ अहाँ कें असोकर्ज नहि होअए तऽ बर्थक एक कोन पर हम बैसि कऽ सुस्ता ली?

मोन भेल मोहना कें कहियै जे तों सुस्ताइ लेल नहि अपन बहीन मालतीक लग मे रहै लेल बैसऽ चाहैत छें। मुदा मोनक बात मोने मे राखि कऽ कहलियै—मोहना, तों लग मे रहबें तऽ हमरा नीके लागत। आबै, आबि कऽ बैसि जो। ओहुना दिनक समय सुतब हमरा पसिन नहि अछि। तोरा संग गप्प-सप्प करब तऽ समय नीक जकाँ कटत।

मोहना बर्थ पर बैसि गेल। आब गप्प-सप्प करक लेल कोनो विषय चाही। इच्छा भेल जे मोहना कें ओकर बहीन दऽ पुछिऐ। एखन मालती एतऽ किएक अयलिए? मुदा से पूछै मे संकोच भेल। संकोच भेल आ कि पूछै मे एक तरहक आशंका अवरोध कऽ देलक, पता नहि। हम विषय कें बदलि कहलियै—कनिए काल पहिने टिकट चेकर आयल रहथि। ओ सभहक टिकट चेक केलनि। दू गोट यात्री जनिका बर्थ आरक्षित नहि रहनि तिनका सँ चिक्कन दक्षिणा ग्रहण कऽ उपरका दुनू बर्थ एलॉट कऽ देलनि। एँ रौ मोहना, आरक्षणक एतेक भीषण समस्या रहितहु किछु बर्थ खालिए रहि जाइत छैक? टिकट चेकर कें नीक आमदनी भेलनिहें।

मोहनाक संक्षिप्त जवाब छल—बर्थ आरक्षण लेल बहुत तरहक नियम छैक। सरकारी अमला लेल थोड़ेक बर्थ अलग राखल जाइत छैक। ओहन बर्थ अधिक काल बिना आरक्षणक रहि जाइत छैक। खाली बर्थ कें आरक्षित करब टिकट चेकरक अधिकार क्षेत्रमे अबैए। आब बँचल टिकट चेकरक आमदनीक बात। दादा, टिकट चेकरक आमदनी हुनक निजी नहि, सभहक होइत छै।

—तोहर कहबाक तात्पर्य नहि बुझलियै?

—बुझा कऽ कहैत छी, दादा। अहि ट्रेन मे सरकारी आ ठीकेदारीक जतेक कर्मचारी छथि जेना छह गोट टिकट चेकर, एकटा हुनकर हेड, ए. सी. चलबैवला इन्जीनियर, कंबल बँटैबला सेवक, पेन्टरी कारक हेड बाबर्ची, सफाइ काज करऽवला स्वीपर, सभकें मिला कऽ बनल अछि एकटा टीम। आमदनीक जरिया भेल बिना रिजर्वेशनक बाबू-बबुआन,

बिना टिकट आमयात्री, बिना बुकिंग कएल सामान इत्यादि। ओहि सँ भेल कुल आमदनी कें श्रेणीक स्तर पर हिस्सा मोताबिक बाँटल जाइत छैक। ड्राइभर आ गार्ड अहि टीम मे शामिल नहि छथि। कहियोकाल हथउठाइ किछु हुनका सभकेँ दऽ देल जाइत छनि।

हम शंका करैत पुछलियै—मोहना, मानि ले जँ चेकर महोदय भेल आमदनी कें नुका लेथि, तखन की हेतै?

—असंभव! चोरक डर नहि, डर छै साधुक। अहि धंधाक सभसँ सबल पक्ष छैक इमानदारी। हमरा उपर दरभंगाक स्टेशन मास्टरक असीम कृपा छनि। तें हमरा रेलवेक ठीकेदारी महालक काज जेना पेन्टरीक कार सँ यात्री तक चाह-नाश्ता पहुँचाबैक काज अथवा कंबल बाँटेबला सेवकक काज भेटि जाइए। यात्रीक यात्रा करक विवशता, आतुरता आ रेलवेक आरक्षित टिकट प्राप्ति करक कठिनता एतेक ने अधिक जे कहियोकाल कंबलक स्टोर मे हम यात्री कें सुता दैत छियनि आ तकरा एबज मे यात्री सँ हजार टाका प्राप्त कऽ लैत छी। ताहू आमदनी के हम इमानदारी सँ सामूहिक आमदनी मे राखि दैत छियैक। दादा, अहाँ बूझि लिअ जे आपसी मेलमिलाप एवं विश्वास सँ अहि तरहक काज सम्पन्न होइए।

मोहनाक स्पष्टवादिता मे ने भय रहै आ ने स्वार्थ। हमरा रुचि जागल। हम ओकरा चेतबैत कहलियै—तोहर सभहक दू नम्बरक कमैनीक कथा सुनि कें हमरा नव तरहक जानकारी भेटलए। तोरा तऽ बूझल भऽ गेलौए जे हम मैथिली भाषा मे कथा लिखैत छी। हम सदिखन नव-नव विषयक खोज मे रहैत छी। हम तोहर सभहक भ्रष्टाचार कें जँ अपन कथा मे चर्चा करियैक तऽ तोरा कोनो तरहक आपत्ति तऽ ने हेतौक?

मोहनाक ठोर पर हँसी एना पसरि गेलै जेना सरोवर मे कमलक फूल फुला गेल होइ। ओ हँसिते बाजल-आपत्ति अछि ने। हमरा सभहक काज कें अहाँ भ्रष्टाचारक नाम देलियै ताहि बातक आपत्ति अछि। अहि तरहक काज करऽ मे हमरा सभहक मूलमंत्र अछि यात्रीगण कें अतिरिक्त सेवा एवं सुविधा प्रदान करब। दादा, अहाँ अपन अगिला कथा मे प्रसंगवश एकर चर्चा करबै ताहि मे हमरा आपत्ति नहि हैत। अहि तरहक कमैनीक बात जगजाहिर अछि। रेलवे कर्मचारीक कमैनी आ थाना परहक घूस कें अंग्रेजक कठोर शासनो नहि रोकि सकलै तखन एखुनका ढहल-ढनमनाएल

शासन व्यवस्था कि रोकि पाओत! तखन बाँचल कानूनक भय। कानून साक्ष्य पर आधारित अछि। एकोटा यात्री साक्ष्य देबा लेल तैयारे नहि हेताह। अहाँ निधोख एकर चर्चा अपन कथा मे करियौ। अहि कथा मे अहाँ कें नोन-मिरचाइ मिलबैक आवश्यकता नहि हैत। ई कथा कतबो ने पुरान हेतइ तइयो सभदिन ओरिजनले रहतै।

–दादा, अहि तरहक काज किएक भऽ रहलैए तकरा दोसर तरहें तजबीज करियै। पराकाष्ठा पर पहुँचल आवश्यकता जेना मृत्युक निकट पहुँचल रोगी कें एम्स अस्पताल पहुँचब जरूरी छैक, छुट्टी समाप्त भेला कर्मचारी कें काज पर पहुँचक हड़बड़ी छैक, पिताक मृत्युक भेला पर पुत्र कें मुखाग्नि देब ओकर कर्त्तव्य छैक आ अही तरहक अनेक काज जे रेलक सफरे सँ पूर्ण हेतैक तकरा कोनो तरहे रोकल नहि जा सकैए। तखन कानूनक परिधि मे काज करब कोना संभव हेतैक? दादा, अहाँ कें मैथिली भाषाक सेवार्थ दिल्लीक यात्रा परम आवश्यक भऽ गेल छल। दू नंबरक कमैनीक दक्ष मोहना अहाँ लेल यात्राक व्यवस्था कऽ देलक। तखन की अहाँ अपन कथा मे एकरा भ्रष्टाचारक संज्ञा देबैक?

मोहनाक कथन स्पष्ट, निर्भीक एवं हमरा लेल नसीहत छल। मोहना शिकायत केलक, उचिते केलक। ओकर भाषा मे उदारता रहै तें हम अपन भेल अपमान कें घोंटि गेलहुँ आ चुपे रहलहुँ। मोहना बजिते रहल–दादा, हमर धर्म पिता श्री आर. के. चटर्जी गप्प-सप्प मे कइएक बेर बाजल रहथि जे अहि देशक लोक कें भ्रष्टाचार एवं कालाधन जीबैत रखने अछि। हमहूँ कहब जे अहि देशक नाम थिकै भारत, एकरा भारते रहऽ दिऔ। एकरा इंगलैंड, अमेरिका नहि बनबिऔ। जँ अहाँक कहल हमर सभहक कमैनी भ्रष्टाचार भेलै तऽ दादा अहि भ्रष्टाचार कें धन्यवाद दिऔ। कष्टे सँ सही, भ्रष्टाचारे बहुतो जरूरी काज कें निष्पादन कऽ रहलैए। बुद्धिमान कें अपन बुद्धिक घमंड तऽ होइते छैक। मुदा हमर मोन मे जनमल अहंकार मोहनाक यथार्थ एवं ठोकल तर्क सुनिकऽ पिघलि गेल, मेटा गेल। मोहना चुप्पी तोड़ैत पुछलक–दादा, अहाँ जाहि काजे दिल्ली आयल रही ओहि काज मे की प्रगति भेलए? जँ कहबा योग्य बात होइ तऽ कहल जाउ।

देवचंदक संग दिल्ली जयबा लेल टिकटक जोगार मे गेल रही मुदा बाझि गेलहुँ भूत पकड़ैक मंतर सिखै मे, तकर मलाल नहि भेल, किएक

तऽ श्मशान घाट मे मोहना फेर सँ भेंट भेल रहे आ मोहनाकें नजदीक सँ देखैक, ओकर पीड़ा सँ भरल जीवन संग्रामक कथा सुनबाक अवसर भेटल रहै। ताहू सँ अधिक एखन मोहनाक सान्निध्य मे हमरा एक तरहक सगुन भेटि रहल छल। केहन सगुन? एकरा शब्द मे व्यक्त करक सामर्थे हमरा नहि अछि। मात्र हम एतबे कहि सकैत छी जे मोहनाक गप्प-सप्प मे ओकर अल्प आयु रहलाक बादो परिपक्वता एवं असाधारण व्यक्तित्व हमरा चुम्बक जकाँ आकर्षित कऽ लेने छल। दिल्ली पहुँचि हम की सभ केलहुँ, तकर प्रतिफल की भेल तकर सविस्तार कथा हम ओकरा कहिलयै। तकरा संग मैथिली भाषाक सम्बन्ध मिथिला मे जनजागरण आनऽ मे, मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक विकास हेबा मे कतबा जरूरी छैक सेहो सभटा बात कहिलयै।

मोहना धैर्य सँ हमर बात सुनलक। तखन कहलक–दादा, हम मैथिल छी, मैथिली हमर मातृभाषा अछि, ई पूर्णतः हमरा लेल नव जानकारी अछि। हम अहि तरहक सोच सँ अनजान रहलहुँए। मैथिली भाषाक विकास हेतै तऽ मिथिलाक लोक मे जागरुकता एतै। केहन जागरुकता? ई बात हम बुझिए ने रहलियै। हमर जन्म छोट जाति मे भेल अछि आ तकर भोग हम भोगि रहल छी। मुदा अहाँ सनक कोनो व्यक्ति किछु कहि रहलाए तकरा पर ध्यान देब जरूरी बुझना जाइए। दादा, अहाँक कहल बात अवश्ये चिन्तनक विषय हेतै। विचार सही आ गलत भऽ सकैत अछि। चिन्तन समयक माँग करैत अछि। अहाँक बात हमर मगज कें आकृष्ट कऽ रहलए। मुदा एखन हमरा लग समयक अभाव अछि। मालती हमर छोट बहीन। दादा, अहाँ कें तऽ बुझले अछि जे हम मालतीए लेल जीबि रहलहुँए। एखन एहन विकट परिस्थिति उत्पन्न भऽ गेलैए जे हमरा जल्दी सँ जल्दी मालतीक विवाह करऽ पड़त। मालतीक विवाहक बाद हम निश्चिन्त भऽ कऽ अहाँ लग आयब। तखन अहाँ जेना आदेश देबै हम मैथिली भाषाक प्रचार लेल काज करबै।

मोहना अपन बहीन मालतीक चर्चा केलक। मालती कें की भेलैक? किएक मोहना ओकर विवाह जल्दी सँ जल्दी करबऽ चाहैत अछि? जनबाक लेल हम अधीर रही। सही अवसर देखि हम मोहना दिस तकलहुँ। मोहना वक्र नजरिए सामनेक बर्थ पर बैसल गेंडा कें देखि रहल छल। मोहनाक आँखि स्थिर आ सख्त भऽ गेल रहै।

जखन हम आ मोहना गप्प-सप्प मे तल्लीन रही गेंडा ससरि कऽ हमर बर्थक समीप आबि गेल रहए। ओ हमर सभहक गप्प सुनै लेल कान पथने छल। ओकर संगक छौंड़ा ठाढ़ भेल मालतीक बर्थ पर हाथ ठिकौने मालती कें निहारि रहल छल। गेंडाक जाति-धर्म एतय तक जे ओकर नाम की रहै से तक नहि बुझल रहए। मुदा गेंडाक आ ओकर संगक छौंड़ाक आचरण संदिग्ध रहैक तकर आभास हमरा अबस्से भऽ गेल छल। ट्रेनक यात्रामे ईश्वरक गढ़ल अजीब-अजीब तरहक लोकक दर्शन होइत छैक। हुअ दिऔ, हमरा ओकरा सँ मतलबे की? मुदा से नहि, मोहनाक तरेरल आँखि सँ अंगार बरसि रहल छलै, तकरा देखि हमरा गेंडाक प्रति घृणा मे वृद्धि भऽ रहल छल।

गेंडा हड़बड़ाइत सहटि के दूरक खिड़की लग पहुँच गेल आ अपन संगक छौंड़ा के गरजैत कहलक—''रे साला! वहाँ काहे को खड़ा है। वहाँ क्या तुम्हारे बाप का जनाजा रखा हुआ है। मेरे खाने का सामान मेरे सामने रखो।''

सीटक नीचा सँ छिट्टी निकालिकऽ छौंड़ा गेंडाक आँगा राखि देलकै। गंडा खायब शुरू केलक। चम्मर-चम्मर आवाजक संगे खायब एतेक ने घृणित रहै जे ओमहर सँ हम अपन मुँह घुमा लेलहुँ।

तखने उपरका बर्थ सँ वज्र खसलै। वज्र नहि उज्जर द्रव्य सँ भरल बोतल खसलै। झनाक आवाज करैत बोतलक शीशा चुनीचुनी भऽ चारुकात छिड़िया गेलै। बोतलक पेय पदार्थ डिब्बाक फर्स कें किचकाहनि कऽ देलकै। पेय पदार्थक तीव्र गंध सेहो पूरा डिब्बा मे पसरि गेलैक। गेंडा कें गंध एतेक ने नीक लगलै जे अपन ठोर कें ओ चाटऽ लागल। मुदा दोसर कात बैसल सज्जन मैथिल भाइ मुँह बिचका कें गमछा सँ अपन नाक झाँपि लेलनि। मोहना बाजल-पचास नंबरक ठर्रा थिकै। पानि मे मिलाओल साबुत स्प्रीट सँ निशा तेज होइत छै।

उपरका बर्थक दुनू यात्री हतास भेल नीचा झुकि कऽ अपन नोकसान कें तजबीज करऽ लगलाह। असावधानीक नतीजा सदिकाल खराबे होइत रहलैए। मोहना फुर्ती सँ उठल आ एककात कतहु चलि गेल। किछुए मिनटक भीतर ओ सफाइ कर्मचारी संगे आपस आयल। सफाइ कर्मचारीक एक हाथमे फिनायल मिलाओल पानि सँ भरल बाल्टी आ दोसर हाथ मे झाड़ू रहैक। कर्मचारी अपन काज मे दक्ष छल। ओ शीघ्रहि डिब्बाक

नीचला सतह पर छिड़िआयल शीशाक टुकड़ा कें ट्रे मे उठेलक आ सतह कें धो-पोंछि कऽ जगह कें परिस्कृत कऽ देलक। आब ठर्राक स्थान पर फिनायलक गंध डिब्बा मे पसरि गेल। सफाइ कर्मचारी अपन काज समाप्त कऽ उपरका बर्थ दिस तकलक। जकर बोतल खसल रहै ओ बख्सीस देलकै।

सफाइ कर्मचारी संगे मोहना सेहो गेल। मुदा जल्दीए आपस आयल। ओकरा हाथ मे मुर्गा छाप शराबक बोतल छलै। मोहना उपर बर्थबला यात्री कें बोतल पकड़ा देलक आ बोतलक मूल्य असुल कऽ अपन जेबी मे रखलक। तखन हमरा लग बैसैत कहलक—दादा, बोतलक सही मूल्यक अलावा जे अधिक मूल्य हम यात्री सँ असुल केलियैए सेहो टीमक आमदनीए मे जोड़ा देबैक।

हम पूछि देलियै—मोहना, यात्री कें निशा करब जरूरी किएक होइत छैक?

मोहना जवाब देलक—जरूरी किएक होइत छैक से हम कहैत छी, सुनू। धूर्त, चालाक, काइयाँ व्यापार करक सभ तरहक नाजायज हुनर मे माहिर मारवाड़ी होइए। रोजगार ताकऽ मे बेबस, लाचार आ जी हजूरी करऽ मे अभ्यस्त अपना दिस लोक तऽ अछिए। उपर बर्थ परहक दुनू काल्हि दरभंगा पहुँचत आ परसू फेर दिल्ली लेल ट्रेन पकड़त। एकरा सभहक संग सीटक नीचा घुसियाबऽ बला दू टा टीनक ट्रंक रहैत छैक। दिल्लीक चाँदनी चौक भेल घटिया सामानक थौक मार्केट। ओतए सँ ई दुनू कम्प्यूटर, कम्प्यूटर मरम्मतिक सामान, डी.ए.भी.क असलील कैसेट, घड़ी, बॉलपेन, बॉल-बेयरिंग आ अही तरहक विभिन्न किस्मक सामान कीनत, ट्रंक मे भरत, ट्रेन मे चढ़त आ मारवाड़ीक गद्दी मे पहुँचा देत। अहि घटिया सामान कें मारवाड़ी दरभंगा, मधुबनीक शहर-देहातक दोकान मे मुँहमाँगा दाम पर बेचत। पहिने व्यापारक नियम रहै ग्राहक कें सन्तुष्ट केलाक बादे मुनाफा कमेनाइ। एखनुका व्यापार नीति भऽ गेलैए ग्राहक कें फुसलायब, ठकब। दौड़-बरहा करऽवला अभागल कर्मचारी कें बान्हल मजदूरी आ भत्ता भेटैत छैक। मारवाड़ी कें रेलवे स्टाफ संगे समझौता रहैत छैक। ताही अनुसारे ई दुनू यात्री ने टिकट कटाओत आ ने माल कें बुक कराओत। जतय जगह भेटतैक एकर सामान सँ भरल ट्रंक कें सीट नीचा घूसिया देल जेतै आ दुनू पसिन्जर कें फस्ट किलास सँ

स्लीपर तक जतय बर्थ खाली रहतै पहिले सँ निर्धारित टाका पर एकरा दुनू कें दऽ देल जेतै। सभ काज लेल एक निश्चित रकम दुनू यात्री टिकट चेकर कें अदा कऽ दैत छैक।

मोहनाक देल सूचना मे हमर जिज्ञासा आरो बढ़ि गेल। हम पुछलियै—सभटा व्यापारक बात हम बुझि गेलियै। मुदा निशा करब जरूरी किएक छैक से नहि बुझलियै। की निशा करैक खर्च मारबाड़ीए दैत छैक?

मोहना बुझबैत कहलक—निशा करक खर्च मारवाड़ी नहि दैत छै। चाँदनी चौकक व्यापारी सामानक मूल्य मे सँ एक कायमी कमीशन एकरा सभ कें दैत छैक। ओही आमदनी मे सँ ई दुनू शराब किनैत अछि। पूर्जाक अनुसार सामान निक परेशानी आ लगातार ट्रेनक सफर कर्मचारी कें थका दैत छैक, एकर सभहक रग-रग कें तोड़ि दैत छैक। तें बिना निशा कयने अहि तरह लोक जीबिए ने सकैत अछि। आब ठर्रा मे मिलाओल स्प्रीटक प्रभाव तऽ होइत छैक। छातीक करेज जरि जाइत छैक आ रोगी भऽ कऽ कर्मचारी मरि जाइत छैक। मरऽ दियौ। मारवाड़ी तुरंते दोसर कर्मचारी नियुक्त कऽ लैए। ओकरा नफा चाही। ओकर व्यापार मे मानवी गुणक अभाव तऽ छैहे।

मोहनाक देल ब्योरा स्पष्ट छल। हमरा आर किछु जानबाक इच्छा समाप्त भऽ गेल। वाह रे मिथिला एवं मिथिलाक लोक। ने खेती आ ने व्यापार। रौदी आ दाही मे डुबल मिथिलाक कलपैत मिथिला। मात्र चाकरीक भरोस। चाकरी केहन? तकर वर्णन सातु मास्टर एवं मोहना सँ भेटि गेल छल। तखन हरौ मिथिलाक लोक भोग, अपन नसीबक लिखलाहा भोग। हम बर्थ पर पड़ि रहलहुँ। गाड़ी तेज गति मे चलिए रहल छल।

आठ

हौ बाबू! तों हमरा जन्म किएक देलऽ?

मैथिल भाइक पुत्र कुहरैत, गुम्हरैत आ आक्रोशित भेल अपन पिता सँ प्रश्न केलनि। पुत्र हिचुकि-हिचुकि कऽ कानऽ लगलाह। कम्पार्टमेंटक सभटा यात्री अकचकाइत ओहि आकुल पुत्रक चिकरब सुनि ब्याकुल भऽ गेला।

रात्रिक प्रथम पहर। रेलगाड़ी फुल-स्पीड मे अपन गंतव्य दिस जा रहल छल। सभटा यात्री खेबा-पिबाक जोगार मे व्यस्त। यात्री भोजन करत आ अपन-अपन बर्थ पर सूति रहत। मोहना हमरा लेल पेन्ट्रीकार सँ पूरी-तरकारीक स्पेशल डिश आनि देने छल। हम खायब समाप्त कऽ कागतक प्लेट केँ मचोड़ि ए.सी. डिब्बाक बाहर मे राखि आएल रही। उपरका बर्थक दुनू मुसाफिर ठर्राक खुमारी सँ निवृत्त भऽ खाली भेल पेट कें भरि रहल छल। गेंडा आ ओकर संगक छौंड़ा सेहो छिट्टी महक राखल वस्तु कें चभर-चभर गीरि रहल छल। अही कम्पार्टमेंटक दोसर खाना मे मैथिल भाइक भातिज सेहो यात्री छलथिन। दिनका समय मे ओ एक-दू बेर मैथिल भाइ लग आयलो रहथिन। एखन ओ खेबाक सामग्रीक तीन पाकेट लऽ कऽ आयल छलथिन आ बाजल रहथिन—काका, सभहक भोजन अनलहुँए। भोजन कऽ लिअ।

मैथिल भाइ सुरफुराइत अपन पुत्र कें कहलनि—जयनाथ, उठह। बर्थ पर अखबार ओछा दहक आ खेबा लेल बैसि जाह।

जयनाथ अर्थात मैथिल भाइक पुत्र जखन सँ कम्पार्टमेंट मे दाखिल भेल रहथि एकोटा शब्द बाजल नहि रहथि। ओ शून्य मे आँखि पथने उदास भेल बैसल रहथि। एखन पिताक आदेश सुनि जेना चेहा कऽ उठलाह आ अपन भीतर जमकल क्रोध, क्षोभ एवं विरक्तिक मिश्रण कें वमन करैत अपन पिताक समस्त प्रश्नक महाजाल पसारि देलनि—हौ बाबू! तों हमरा जन्म किएक देल'? झुट्ठा, फरेबी, बेइमान सँ भरल अछि संसार। तों किएक धरती पर आनि कऽ हमरा पटकि देल'?

जयनाथक प्रलाप हृदय बिदारक छल। कम्पार्टमेंटक सभटा यात्री मर्माहत भऽ गेल। सभ मुँह बौने जयनाथ कें देखऽ लागल। मुदा मोहना पर जयनाथक कुहरबाक कोनो टा प्रभाव नहि पड़लै। मालती खा-पी कऽ खाली भेल कागतक अइँठ प्लेट मोहनाक हाथ मे देने छलै। ठीक ताहीकाल जयनाथक मुख सँ कलपैत प्रश्न बाहर भेल रहै—हौ बाबू! तोँ हमरा जन्म किएक देलऽ?

ठोर पर मुस्की पसारि मोहना बाजल—अजीब प्रश्न! अजगुत प्रश्न! प्रश्न जिज्ञासाक पूर्ति लेल होइए। मुदा एहन प्रश्न जे सृष्टि निर्माताक कार्यकलाप पर प्रहार करैत होअय से प्रश्न भइये ने सकैए। से बात सत्य नहि अछि। अहि तरहक बेमिसाल प्रश्न पुत्र द्वारा पिता कें पहिनहुँ पूछल

गेलए। एखन ओ व्यक्ति चलचित्र जगतक महानायक छथि। अपन जीवनक आरम्भ मे जखन ओ जीविका लेल नौकरी ताकि रहल छलाह, बेहाल छलाह, एक शहर सँ दोसर शहर मे बोआइत छलाह आ सभ तरहक उद्योग केलाक बादो हुनका नौकरीक स्थान पर तिरस्कारे टा भेटैत छलनि तखन आकाशकाँकोर बनल खींज मे अपन पिता कें कहने रहथिन–''पापा! आपने मुझे जन्म क्यों दिया?''

पिता छलथिन देशक विख्यात साहित्यकार, कवि एवं विश्वविद्यालयक प्राध्यापक। ओ अपन पुत्रक प्रश्न सुनि कऽ कहने रहथिन–''तुम्हारे प्रश्न का जवाब ढूँढ़ने के लिए मुझे थोड़ा समय चाहिए। कल मैं तुम्हारे प्रश्न का जवाब दूँगा।''

मोहना हमरा दिस तकैत कहलक–आओर जनैत छियैक दादा, काल्हि भेने ओ महान युगद्रष्टा अपन पुत्र कें की जवाब देलथिन? हम अबैत छी तखन कहब।

एतबा बाजि कऽ मोहना हाथ महक अइँठ प्लेट कें ए.सी. बॉगी सँ बाहर निकलि गेल। पिता पुत्र कें की जवाब देलनि से जनबा लेल सभ यात्री संग हमरो स्वाँस कंठ मे अटकि गेल।

मोहना आपस आयल। सभहक दृष्टि मोहना मे टँगि गेलै। मोहना हमरा बर्थ पर बैसैत ऊँच आवाज मे बाजल–आब अहाँ सभ महानायकक पिताक जवाब सुनि लिअ। चौबीस घंटाक बाद पिता पुत्र लग पहुँचि कऽ कहने रहथिन–''पुत्र, मैं तुम्हारे प्रश्न का जवाब ढूँढ़ने में कामयाब नहीं हो सका। मैंने तुमको जन्म दिया, मेरे पिता ने मुझे जन्म दिया और मेरे दादा ने मेरे पिता को जन्म दिया। मैं दादा, पिता और अपनी तरफ से तुम्हारे समक्ष क्षमाप्रार्थी हूँ। मैंने तुम्हारे अनुमति के बिना तुम्हें जन्म दिया इसके लिए मैं अपराधी हूँ। लेकिन तुमसे मेरी एक विनती है। तुम अपने पुत्र को उसकी सहमति से ही जन्म देना।''

मोहनाक बाजब समाप्त भेल। प्रश्नक जवाब मे पिता पुत्र कें की कहलनि से स्वयं मे एकटा प्रश्न बनि गेल। मोहनाक प्राप्त जवाब सुनि कऽ यात्री समुदाय की बुझलनि से वैह जनताह, मुदा सभहक चेहरा पर संतोषक भाव पसरि गेलनि आ सभ अपन-अपन खेबा-पिबाक काज मे व्यस्त भऽ गेलाह।

मोहना हमरे लग बैसि रहल। हम मोहना दिस तकलहुँ। ओकर आँखि

मे चिन्ताक छाँह देखलियै। एकरा की भेलैए? हम मोहनाक चिन्ताक अवहेलना करैत अपन मोनक दाबल जिज्ञासा कें प्रगट केलहुँ–ट्रेनक प्रतीक्षा मे हम प्लेटफार्म पर बैसल-बैसल सातुक घोर पीबि रहल छलहुँ। ओतहि तोरा हम देखने छलियौ। तों अपन बहीन मालतीक संग आयल छलें। हम सातु मास्टर लग बैसल रही, मुदा तों हमरा नहि देखलें। तों अत्यधिक घबरायल छलें। तों सातु मास्टर संग गप्प-सप्प करैत रहलें। हम तोरा लग मे पहुँचि किछु पुछितियौ मुदा ताहीकाल प्लेटफार्म पर ट्रेनक आगमनक अनघोल भेलै। हम ट्रेन मे चढ़ैक हलचल मे मिज्झर भऽ गेलहुँ। तों सातु मास्टर संग की गप्प करैत छलहीन, कतऽ सँ तों अपन बहीन संग प्लेटफार्म पर एलहीन, जँ कहबा योग्य बात होइ तऽ हमरा कह।

हमरा मुँहे 'सातु मास्टर' नामक सम्बोधन सुनि अनचोके मे मोहनाक मुँह पर जेना थापड़ लागि गेल होइ तहिना ओकर मुखाकृति विकृत भऽ गेलै। मोहना हमर सत्कार करैत छल तें किछु अनर्गल नहि कहलक मुदा अप्रतिभ भेल किछु काल तक हमरा दिस तकैत रहल, तखन बाजल–दादा, हमर धर्मपिता आर. के. चटर्जी प्रत्येक दिन-रात्रिक प्रथम पहर मे चैतन्य महाप्रभुक फोटोक समक्ष भाव-विह्वल भऽ कें नचैत छलथिन, गबैत छलथिन, कीर्तन करैत छलथिन। कीर्तन समाप्त भेला पर धार्मिक विषय पर अपन विचार कहैत छलथिन। हुनकर कथन छलनि जे एकटा अदृश्य शक्ति छथि जनिका हम सभ ने देखैत छियनि, ने जनैत छियनि। उएह अदृश्य प्रभु सत्य छथि, बाकी जगतक सभटा दृश्य भ्रम थिकै, छलावा थिकै। ओ अपन कथन मे इहो कहैत छलथिन जे उएह अदृश्य शक्ति अर्थात् ब्रह्म कहियोकाल मनुक्खक भेष मे धरती पर विराजमान रहैत छथि जिनका चिन्हऽ लेल आँखि चाही, सौभाग्य चाही। दादा, अहाँ कें दोख देब उचित नहि। रेलवे प्लेटफार्म पर सातु बेचनिहार कें कियो सातुए मास्टर कहतै ने। मुदा अहाँक सातु मास्टर हमर भगवान छथि। ओहि सातु मास्टरक नाम छनि अभिमन्यु प्रसाद चौरसिया। अपने मिथिलाक लोक थिकाह। मुदा हुनकर निज जीवनक विषय मे वृहत जानकारी प्रायः ककरो ने छैक आ हमरो ने अछि। गर्म मौसम मे बर्फ मिलाओल सातुक घोर आ जाड़क महिना मे आद, इलायची मिलाओल गर्म चाह बेचैत प्लेटफार्म पर हुनका देखबनि। ओ अपना दिसुका हजारो गरीब, लाचार, बेवस दुखियाक पालनकर्ता थिकाह। अभिमन्यु प्रसाद चौरसिया गुण, सामर्थ एवं परोपकार

करक क्षमताक बखान करक योग्यता हमरा नहि अछि। हम एतबे कहि सकैत छी जे अहाँक सातु मास्टर हमर प्रणम्य छथि, आदर्श छथि।

मोहनाक कथन सुनि अचम्भित भेलहुँ। प्लेटफार्म पर सातु मास्टर, क्षमा करब, अभिमन्यु प्रसाद चौरसिया सान्निध्यक अवसर भेटल छल। अभिमन्युक अपन प्रांतक राजनीतिक दशा-दुर्दशाक विश्लेषण सुनबाक सुयोग से भेटल रहए। हुनकर तर्क अबस्से अकाट्य छलनि, समुचित छलनि, विवेकी पुरुषक अनुभूति छलनि। तकरबादो हमरा हुनका लेल बहुत अधिक आकर्षण नहि भेल छल। मुदा एखन मोहनाक हृदयतंतु सँ निकलल अभिमन्युक लेल उद्‌गार अत्यन्त कोमल एवं समर्थित छल। हमर जिज्ञासा बहुत अधिक भऽ गेल। अभिमन्यु प्रतिभाशाली छथि, मोहनाक देवता छथि तनिका दऽ आरो अधिक जनबाक उत्सुकता अपन चरम पर पहुँचि गेल रहए। हम पूछैत गेलियै आ मोहनाक बहीन मालती पर कोन तरहक विपत्ति आयल रहैक, कोना अभिमन्यु ओकर रक्षा केलनि, सभ बातक खुलासा मोहना केलक। हमर विचार मे धर्मक एक चरण पृथ्वी पर एखनहुँ बाँचल छैक जाहि कारणे सृष्टिक विनाश नहि भेलैए। एक अति साधारण मनुक्ख कतेकटा पैघ काज कऽ सकैए तकर जानकारी भेटल। एहन जानकारी जे सत्य छल, प्रचलित छल मुदा हमर कल्पना सँ दूर, बहुत दूर हटल छल।

ई बात सर्वविदित अछिए जे उद्योग मे, शिक्षा मे, स्वास्थ्य मे एतय तक जे खेल-कूद मे सेहो मिथिला दरिद्र अछि। दाही आ रौदी मे झमारल कृषि काज सेहो हकन कनैत अछि। तेँ मिथिलाक लोकक जीवैक एकमात्र मार्ग छै जे ओ जन्मभूमि त्यागि, अपन परिवार सँ विलग भऽ जीविका लेल अन्यत्र जा कऽ चाकरी करए। मिथिलाक कइएक हजार नहि, कइएक लाख लोक दिल्ली मे कार्यरत अछि आ ओकर उपार्जन सँ ओकर परिवारक भरण-पोषण होइत छैक। अहि तरहक काज मे अभिमन्युक सेवा करक कार्यशैली अद्‌भुत छनि।

दिल्लीक प्रत्येक मोहल्ला मे मंदिर छैक। मंदिर मे बहुतो देवताक विग्रह संगे महादेवक पूजा प्रधान छनि। मिथिलाक ब्राह्मण पूजा विधि मे पारंगत छथि। हुनकर सभहक पूजाक कार्यशैली, नियम-निष्ठा एवं संस्कृत मंत्रक उच्चारण जेना गंगोत्री सँ बहैत पवित्र गंगाजल सदृश होअय, दिल्ली वासी लेल पैघ आकर्षणक कारण बनैत अछि। खास कऽ ओतुका

सेठ-साहुकारक पत्नी एवं अन्य महिलावृंद तऽ मंदिरक परिसर मे पयर रखिते सम्मोहित भऽ जाइत छथि। मंदिरक पुजेगरी जनिका पंडितजी कहि कऽ सम्बोधित कएल जाइत छनि से विधि-विधान सँ पूजा करबैत छथि, प्रसाद बँटैत छथि, आशीर्वाद दैत छथि आ तकर एवज मे प्रचुर धन उपार्जन करैत छथि। पूजाक अलावा पंडित वर्ग महिला समुदायक अन्य तरहक बेगरताक पूर्ति सेहो करैत छथि। ''पंडितजी, हमें घर के काम-काज के लिए नौकर चाहिए; रसोइ बनानेवाला महराज चाहिए; घर के रखवाली के लिए चौकीदार चाहिए; अगर मिल सके तो एक अच्छा मोटर ड्राइभर भेज दीजिए; मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, उनके लिए दाइ का इन्तजाम कर दीजिए इत्यादि, इत्यादि।'' पंडितजी मे जजमानक अटल विश्वास आ ओहि विश्वासक जिम्मा अभिमन्यु कें। सभ तरहक अनवरत माँगक पूर्ति पंडित अभिमन्यु सँ करबैत छथि। मंदिरक तमाम पंडित अभिमन्युक सम्पर्क मे रहैत छथि आ हुनकर सभ तरहक माँगक पूर्ति अभिमन्युक द्वारा बनाओल खटाल सँ होइत अछि।

खटाल शब्दक व्यवहार अहाँ कें अनुचित लागत। अनुचित लगबेक चाही। खटाल तऽ गाय-महींसक रहक स्थान कें कहल जाइत छैक। मुदा कनेक ध्यान देबैक तऽ खटाल शब्दक प्रयोग अहाँ कें उचित लागत। बहुत पहिनहि यमुना नदीक ओहि पार अभिमन्यु जमीनक पैघ टुकड़ा खरीद कऽ ओहि मे कच्चा इंटाक घर बनबा लेने रहथि। अपन इलाकाक लोक जे दिल्ली पहुँचैत छल आ जीविका लेल अभिमन्युक सम्पर्क मे अबैत छल तकरा अभिमन्यु अपन बनाओल घर मे रखबा दैत छलाह। सभ कें आवास एवं भोजन निःशुल्क भेटऽ लगैत छलैक। तखन सभहक कायापलट कएल जाइत छलै। नव-नव आयल लोक दिल्ली सँ अपरिचित, अनभुआर एवं सभहक भाव-भंगिमा मे देहाती जीवनक परिदृश्य। भोजन, वस्त्र संगे स्वच्छ रहबाक हिदायत दिल्ली मे काज करक लेल आवश्यक जानकारी, इमानदारीक महत्व एवं ओकर पालन इत्यादि सभ तरहक तैयारी अभिमन्यु करबैत छलथिन। तें अभिमन्यु द्वारा निर्मित स्थान कें खटालक संज्ञा देल गेल छल।

एकर अलावा दिल्ली मे हजारो रेस्तारां, ढाबा, डाक्टरक क्लीनिक, बाजारक दोकान, घन बनबऽवला ठीकेदार संगे आरो तरहक संस्था आ सभ अभिमन्युक लिस्ट मे। सभहक मांग मजदूरक। जरूरत

मोताबिक टहलू, भनसिया, फल बेचैवला, चौकीदार, हजाम, ड्राइभर, राजमिस्तीरी, नल-कूप बनबैवला इत्यादि पूर्ति अभिमन्यु अपन खटाल सँ करबैत छलाह।

एकटा नियम रहै जे नौकरीक पहिल पगार अभिमन्युक खटाल मे जमा करऽ पड़तैक। नियुक्त भेल सभटा अनुग्रहित खुशी-खुशी अपन-अपन पहिल दरमाहा अभिमन्यु लग पहुँचाबैत छल। अहि तरहें जमा भेल राशि सँ नौकरी लेल आयल मनुक्ख कें मदति कएल जाइत छलै। रोग सँ ग्रसित भेला पर अस्पताल-दाइक खर्च, कोनो कारणे मारि-पीटि भेला पर कानूनी खर्च आ तकर अलावे आन तरहक बहुतो खर्च अभिमन्यु लग जमा राशि सँ होइत छलै। संगठन कायम राख' लेल अभिमन्यु छठि पावनिक वृहत् आयोजन करबैत छथि। पावनिक शुभ अवसर पर अभिमन्युक सम्पर्कक सभटा मिथिलावासी अपन-अपन काज सँ छुट्टी लऽ कऽ खटाल मे जमा होइत अछि। यमुना नदीक कछेर मे छठि-पावनिक उत्सव मनबैत अछि आ डाला उत्सर्गक बाद सभ ठकुआ-पूड़ी खाइत अछि।

मोहना हमर आँखि मे गहींर देखैत कहलक—दादा, हजारक-हजार मनुक्खक सेवा करऽ मे अभिमन्यु प्रसाद चौरसियाक बड़ीटा स्वार्थ छनि।

—स्वार्थ? मोहना की कहि रहल अछि?

—हँ यौ दादा, स्वार्थ। स्वार्थ अहिबातक जे निस्वार्थ भाव सँ कएल कर्मक पुण्यक ओ असगरे ग्राही छथि।

मोहना द्वारा उच्चरित 'स्वार्थ' शब्दक सही अर्थ बुझे मे आयल। मोन कें प्रसन्नता प्राप्त भेलै। मोहना अपन देवता स्वरूप अभिमन्युक पूर्ण परिचय देलक। एखनहुँ एहन आदर्श पुरुष अहि धरती पर छथि। मनहिमन हम प्लेटफार्मक परहक सातु मास्टर कें नमन कएल।

आब मोहना अपन तत्काल मे बितल घटना, जकर सम्बन्ध ओकर बहीन मालती सँ छलै, तकरा द' कहलक। मोहना कें गाहेबगाहे दिल्ली रूटक अलावा कंबल बाँटक काज मे मुम्बइ रूट मे जाय पड़ैत छलै। मुम्बइ रूटक सभटा काज साफ-सुथरा। ने ककरो सँ किछु लेना आ ने ककरो किछु देना। बर्थ मोताबिक पसिन्जर। कंबल-चद्दरि बाँटक काज पूरा कऽ मोहना सभटा समय अपन पढ़ाइ मे लगबैत छल।

मोहना मुम्बइ रूट मे गेल रहए। तकर माने भेल जे आपस दरभंगा पहुँचै मे ओकरा लगभग दस दिनक समय लगतैक। मोहना मुम्बइए मे

छल जखन ओकरा ओकर माय गुलबियाक मोबाइल सँ समाचार भेटलै। समाचार ई जे ओकर बाप चरणीदास अपन बेटी मालती कें पचीस हजार टाका मे बेचि देलकए। सूतली राति मे बसरुद्दीनक पठाओल गुंडा मालती कें लऽ गेलैए।

ताहिकाल मोहना पेन्ट्रीकार मे असगरे छल। हेड बाबर्ची सप्लाइ आनऽ शहरक भीतर गेल रहै। अपन जीवनक सभसँ प्रिय मालतीक अपहरणक समाचार सुनि मोहनाक माथ सून्न भऽ गेलै। ओकर शुद्धि-बुद्धि समाप्त भऽ गेलै। हेड बाबर्ची आपस आयल। मोहना अचेत भेल पड़ल छल। हेड बाबर्ची मोहनाक चेतना कें आपस अनलक आ ओकर सभ बात ओकरा सँ सुनलक। हेड बाबर्ची मोहनाक प्रिय-पात्र, मोहनाक परिवारक सभ बातक जानकार। मालतीक बिना मोहनाक जीवन शून्य, निरर्थक। विक्षिप्त भेल मोहना कें सहारा देलकै, ओकर सभटा काजक जिम्मा उठा लेलकै आ ओकरा दिल्लीक गाड़ी मे बैसा देलकै। मोहना दिल्ली पहुँचल। स्टेशने पर ओकरा अभिमन्यु भेटि गेलथिन। मोहना सभटा बात अभिमन्यु कें कहलकनि।

अभिमन्यु प्रसाद चौरसिया एकटा कठोर नियमक अधीन रहि कऽ सेवाक काज करैत छलाह। राजनीतिज्ञ एवं आतंकवादी सँ ओ कहियो पंगा नहि लेताह तकर संकल्प लेने रहथि। राजनीतिज्ञ एवं आतंकवादीक शक्ति अथाह होइत छैक। ओकरा सभ सँ मुठभेर करक अर्थ भेल अपन सेवाक काज मे नोकशान करब। राजनीतिज्ञ सँ कमोवेश निबटारा कयलो जा सकैए मुदा, आतंकवादी जकर जेहादी मंत्र छैक, 'मरो या मारो' एक दानवी प्रवृत्तिक मनुक्खक संगठन अछि। जेहादी संगठन सँ एखन धरतीक सभ सँ शक्तिशाली देश अमेरिका सेहो मुकाबला करऽ मे पिछरैत अछि। तखन अभिमन्यु कोन सामर्थे ओकरा सभ सँ भिड़न्त करताह। आतंकवादी सँ फराके रहऽ मे अभिमन्यु विश्वास रखैत छलाह।

मालतीक अपहरणक काज अबस्से आतंकवादी संगठनक कृत्य छल। मुदा, अभिमन्यु मोहनाक बहीनक दुर्दशाक समाचार सुनि कऽ पेशोपेश मे पड़ि गेलाह। अभिमन्यु मोहना कें अत्यधिक स्नेह करैत छलथिन। अभिमन्यु कें मोहनाक प्रति मात्सर्ज ततेक ने अधिक छलनि जे हुनक संकल्प डगमगा गेलनि। मालती कें आतंकवादीक चाँगुर सँ मुक्त करौनाइ कठिन काज, जोखिम सँ भरल काज। मुदा तें की? जे हेतै से देखल जेतै।

अभिमन्यु लीख सँ हटि कऽ मोहनाक मदति लेल तैयार भऽ गेलाह।

अभिमन्युक खटाल सँ बहरायल लोक दिल्लीक गिरह-गिरह मे छिड़िआयल छल। अभिमन्यु संवाद पठौलखिन। संवाद पाबि मखना नामक व्यक्ति दौड़ल आयल। दस बर्ख पूर्व मखना अभिमन्युक खटाल मे पहुँचल रहए। मखना कें ड्राइभरीक थोड़ेक लूरि रहैक। ओ अभिमन्यु लग ड्राइभर बनक इच्छा जाहिर केलक। अभिमन्युक प्रयासे मखना ड्राइभरी सिखैक स्कूल मे भर्ती भेल छल। मात्र तीन-चारि महिनाक ट्रेनिंग सँ मखना कुशल ड्राइवर बनि गेल रहए। दिल्लीक बदरपुर मोहल्लाक प्रसिद्ध हीराक जौहरी सूरजमल राघवमल नामक कम्पनी मे मखना ड्राइभरीक चाकरी शुरू केलक। मखनाक महत्वाकांक्षा आकाश मे ठेकल। तहिना ओकर तीक्ष्ण बुद्धि आ लगनशीलता। नसीब सेहो ओकर चेरी बनि मदति लेल तैयार। दू-तीन सालक अवधि मे मखना एकटा पैघ गैरेजक मालिक बनि गेल। गैरेजक जगह रहै दिल्ली आ हरियाणाक सीमा लग। मेरठ सँ आबऽवला हाइवे ओतहि आबिकऽ समाप्त होइत छलै। मोटरगाड़ीक खरीद-बिक्री मखनाक कारोबार रहै। ओकर आमदनी मे इजाफा होइत गेलै आ मखना अगल-बगलक जमीन कें किनैत गेल। आब मखनाक नाम भऽ गेलैए माखन सिंह 'अजगर' आ मखना द्वारा निर्मित बाजारक प्रसिद्ध नाम अजगर मार्केट। हिसाब कएल जाए तऽ अजगरक सभटा सम्पत्ति कइएक करोड़क भऽ गेलैए। एखन ओ 'रूस एटकीन' द्वारा बनाओल महग थ्री पीस शूट पहिरने छल। ओकर गरदनि मे इम्पोर्टेड टाई बान्हल रहै आ टाई मे हीरा जड़ित बाइस केरेटक सोनाक पीन खोंसल रहै। एतेक पैघ रुतबा रहितहु माखन सिंह अजगर अभिमन्युक समक्ष मात्र मखने बनल गरदनि झुकौने ठाढ़ छल। मखना कें अभिमन्युक प्रति आदर एवं भक्ति मे कनिकबो कमी नहि भेल रहैक।

अभिमन्यु मखना कें मोहनाक बहीन मालतीक अपहरणक ब्योरा कहि सुनौलनि। तकरा संगहि आदेश देलथिन—मखन, तोरा मालती कें बँचबैक छौ।

अभिमन्यु मालतीक उद्धार करऽ लेल मखनाक चुनाव किएक केलनि? बंगलादेश, नेपाल आ बिहार सँ छौंड़ीक अपहरण करब आ बेचब आतंकवादीक पुरान आ निधोक चलऽबला धंधा। एकर सभ तरहक खबरि अभिमन्यु कें छलनि। सभटा छौंड़ी कें अर्ध बेहोशी हालत मे बुरका

पहिरा सड़क मार्ग सँ मेरठ आनल जाइत छलैक तकरो दऽ अभिमन्यु कें बुझल छलनि। मेरठ मे आतंकवादीक जबर्दस्त अड्डा। मेरठ सँ छौंड़ी सभ कें दिल्ली आनल जाइत छल। माखन सिंह अजगरक मार्केट मेरठ सँ आबऽवला हाइवे मे सटल। हाइवेक अन्त मे हरियर रंग मे रंगल एकटा विशाल मस्जिद! मस्जिद मे तिलस्मि नक्शाक अनुरूप सुरंग, खोह आ खोह मे बनल आधुनिक युगक विलास सम्बन्धी सामग्री सँ परिपूर्ण एअरकन्डीशन कोठली। अही मस्जिद मे छौंड़ी सभ कें राखल जाइत छल।

अरब देशक हीरा किनऽवला सौदागर पहिने गुजरात प्रांतक सूरत शहर मे अबैत अछि। तरासल हीराक सौदा केलाक बाद सौदागर शेख बनि दिल्ली पहुँचैत अछि आ कोनो फाइव स्टार होटल मे ठहरैत अछि। अरब देशक तेलक कुआँक चलते शेख अकूत धनक मालिक। मुदा प्रकृति सँ, चालि-चलन सँ बेहूदा आ अइयाश। ओकरा सभहक तफरी करऽ लेल हरियरका मस्जिद मे सामग्री तैयार। शेख मस्जिद मे पहुँचि छौंड़ी सभहक मुआयना करैत अछि आ पसिन्न भेला पर मुँहमांगा दाम दऽ ओकरा संग निकाह करैत अछि। अपन देश पहुँचलाक बाद शेख किछु दिन तक छौंड़ीकें अपन हरम मे रखैत अछि। तकरबाद ओहि छौंड़ी कें या तऽ बेचि दैत अछि या मारि दैत अछि। अरब देश मे छौंड़ीक सबहक कोन दुर्दशा होइत छैक तकर तरह-तरहक खिस्सा सुनबै, खिस्सा एहन जे सुनिते रोइयाँ काँपि जायत।

मालती कें अबस्से ओहि हरियरका मस्जिद मे या तऽ आनल गेल हेतै अथवा शीघ्रे आनल जेतै। मस्जिदक सटले अजगरक अजगर मार्केट छैक। मखना धुरंधर अछि। ओ मालतीके बँचबक उपाय ताकि लेत तेहन अभिमन्युक विश्वास छलनि।

मखना चुपचाप अभिमन्युक सभटा बात सुनलक। कनेकाल तक अपन हीरा जड़ित टाई कें शिरोधार्य करैत मखना बाजल—गुरु, आतंकवादी खूंखार भेड़ियाक संतान थिक। एकर सबहक दुष्टताक सीमा बहुत दूर तक पसरल छैक। एकरा सभ सँ टक्कर लेब बड़ पैघ खतरनाक काज। मुदा अहाँक आदेशक पालन करब हमर कर्त्तव्य बनैत अछि। अहि काजक सफलता लेल इल्म संगे भाग्य सेहो चाही। अहाँक आशीर्वाद हमरा प्राप्त अछि। तें हम अपन क्षमता एवं पूर्ण शक्ति सँ प्रयास करबै। अहाँ कें वचन दैत छी जे कहुना ने कहुना मोहनजीक बहीन मालती कें मुक्त कराइए लेबै।

मोहना कहलक–दादा, मखना अपन देल वचन कें पूर्ति केलक। ओ अपना संग हमरा अजगर मार्केट मे अनलक। अजगर मार्केट मे बनल मखनाक विशाल गैरेज आ गैरेजक एक भाग मे बनल सभ तरहक सुविधा सँ सम्पन्न एक रूमक फ्लैट। ओही फ्लैट मे हमरा पहुँचा कऽ कहलक–एतय आतंकवादीक संग चीन देशक जासूसी अड्डा सेहो छैक। अपन देश मे प्रजातंत्री सरकार। सभ कें सहूलियत, ककरो रोकटोक नहि। कोनो घटना आ कि दुर्घटना भेलाक बादो शासनक कर्णधार कें कोनो चिन्ता नहि, परबाहि नहि। अहाँ कें सतर्क कएलहुँए। चारूकात आतंकवादी, चीनक जासूस आ तकर सबहक शोणित पिअवला राक्षस किस्मक गूर्गा घुमैत रहैत छैक। अहाँ अहि जगहक लेल नव लोक भेलहुँ। अहाँ कें जे देखत तऽ ओकर सबहक कान ठाढ़ भऽ जेतैक। हमरा सेहो जाल पसारे मे दिक्कत हैत। मालती कें हम कोना चिन्हबै, कोना ओकरा छुटकारा दिएबै, सभटा काज हमहीं करबै ने। अहाँ फ्लैट मे चुपचाप नुकायल रहू।

–दादा, तीन दिन-राति हम ओहि फ्लैट मे नुकायल रहलहुँ। मालतीक चिन्ता मे अहुछिया कटैत रहलहुँ, नोर बहबैत रहलहुँ। चारिम दिन लगभग आधा रातिक समय मखना मालतीक संग फ्लैट मे पहुँचल। मालतीक चेहरा एना सजाओल रहैक जेना ओ डोली चढ़त आ सासुर जायत। मालतीक सुन्दरता मे हजार गुणाक वृद्धि भऽ गेल रहैक। हम मालती कें देखैत भाव-विभोर भेल ठाढ़े रहि गेलहुँ। मुदा मखना व्यवहारीलोक। ओ अपन हाथक पोटरी मालतीक हाथ मे दैत कहलकै–जेना बुझेलहुँए तहिना बाथरूम मे जा कऽ मुँह महक लपेटल पाउडर-स्नो कें नीक जकाँ धो-पोछि लिअ। पोटरी महक वस्त्र पहिरि कऽ जल्दी सँ बाहर आबि जाउ।

–दादा, मालती बाथरूम मे प्रवेश केलक। मखना हमरा दिस घुमैत कहलक–आतंकवादी द्वारा अपहरण कएल छौंड़ी कें शेखक आँगा आनऽ सँ पहिने सजाओल जाइत छैक। सजबैक जगह अछि ब्लूस्टार पार्लर। ब्लूस्टार पार्लर हमरे मार्केट मे हमरे किरायादार अछि। एकर मालिक अछि मिस्टर थोंग उना। पार्लरक काजक जिम्मा मिसेज सैम कें। मिस्टर थोंग आउर मिसेज सैम यद्यपि अछि वियतनाम देशक मुदा ओ दुनू चीनी जासूसीक कर्त्ता-धर्त्ता अछि। थोंग आ सैम सँ हमर नजदीकक सम्बन्ध अछि। हमर ओकरे दुनू सँ मदतिक मांग केलियै। ओकरे दुनूक मदतिए

मालती कें मुक्ति भेटलैए। आइ मालती कें सजबै लेल ब्लूस्टार पार्लर मे आनल गेल छलै। पहिने सँ तैयारी भऽ चुकल रहै। थोंग आ सैम पार्लरक गुप्त रस्ते मालती कें आनि कऽ हमरा सुपूर्द कऽ देलकए।

—दादा, मालती बाथरूम सँ बाहर आयलि। ओकर श्रृंगार धोअल-पोछल रहै। मालती हरियाणा प्रांतक गरीब छौंड़ीक वस्त्र पहिरने छलि। बिना कनिकबो बिलम्ब कयने मखना हमरा दुनू भाय-बहीन के अभिमन्युक खटाल मे पहुँचा देलक। आइ जखन दरभंगा जाएबला ट्रेन पकड़ै लेल हम आ मालती नई दिल्ली स्टेशन पर आयल रही तखन अहाँ हमरा दुनू कें देखने हैब। मुदा, हम अहाँ कें नहि देखि पौलहुँ। देखितहुँ कोना? हम तऽ विपत्ति मे ओझरायल रही ने?

हम मोहनाक वृतान्त सुनऽ मे निमग्न रही। कोनो स्टेशन पर ट्रेन रुकलै। मोहना कें रेलवेक काजक व्यस्तता। ओ उठि कऽ गेल। कम्पार्टमेंट मे निस्तब्धता पसरल रहै। हम कंबल मे सुटकि बर्थ पर चुपचाप पड़ि रहलहुँ। जाहि काजे दिल्लीक यात्रा केने रही से नीक जकाँ बिसरा गेल रहए। मात्र मोहना आ मोहनाक जीवन मे घटल घटनाक तीव्र प्रवाह मोन कें उद्वेलित करैत रहल। सही मे मनुक्खक वश मे किछु नहि छैक। ओ समयक धारा मे एक तृण बनल बहैक लेल विवश अछि, अभिशप्त अछि।

नओ

हम सुतल नहि रही, मात्र कंबल सँ मुँह झपने सोच मे निमग्न रही। सोचक विषय छल मोहनाक बहीन मालतीक अपहरण। मिथिला एवं मिथिलाक निकटवर्ती इलाका मे आतंकवादीक आतंक, छौंड़ीक खरीद-बिक्री ओ ओकर सभहक भयंकर दुर्दशा। सुनैत रहियै, आइ ओहि कृत्य कें प्रत्यक्ष देखलहुँ। मोन क्लेशित छल, हृदय पीड़ा सँ व्यथित छल। की मौजूदा प्रजातंत्री सरकारक गन्हाइत कानूनी व्यवस्था अहि तरहक अन्याय कें रोकि पौतैक? एकर की जवाब हेतै? किछुओ जवाब नहि हेतै। चुपचाप देखैत रहू, सहैत रहू आ भगवानक भजन गबैत रहू।

आहट सुनलियै। कंबल सँ मुँह उघारि कऽ देखलहुँ। सामने बर्थ परहक मैथिल भाइ सकुचायल ठाढ़ रहथि। कम्पार्टमेंटक बाकी यात्री

अपन-अपन बर्थ पर निन्न छल। ट्रेनक गति मे जेना राकस लूत्ती लगा देने होइ, ओ पटरी पर दौड़ नइ रहल छल, अन्हड़क पात जकाँ उधिया रहल छल। उठि कऽ बैसि गेलहुँ। हमर बर्थ पर पोन रोपैत मैथिल भाइ औपचारिकताक निर्वहन केलनि—निन्न मे व्यवधानक लेल क्षमाप्रार्थी छी।

—अहाँकेँ क्षमा प्रार्थी होयबाक आवश्यकता नहि। हम सुतल नहि जगले रही। अहाँ संग गप्प-सप्प करब तऽ नीक लागत।

मैथिल भाइ अपन साँची धोती सँ बहरायल टाँग कें समेटि पलथी मारि लेलनि आ अपन संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत केलनि। मैथिल भाइक नाम बिलट पोद्दार, पिता स्वर्गीय लखन पोद्दार। निर्मली सँ महादेवमठक बीच कोशीक अभिशाप मे ऊबडूब करैत बहुतो गाम। गामक बीच मे कतउ-कतउ पानि मे मूड़ी उठौने पुरना जमानक डीह, गैर मजौरुआ आम जमीन। बहुत पहिने जखन जनसंख्या कम्मे रहै, छपरा दिस सँ लखन पोद्दार आबि कऽ निर्मलीक सटले डीह पर पयर रोपलनि, नोन-तेलक दोकान खोललनि। लखन दोकानक शुभलाभक डरीर, दिन-राति जरैत डिबियाक इजोत आ सभहक बेगरताक पूर्ति करक तत्परता अपन करामात देखौलक। किछुए बर्ख मे दोकानक कमौनी ततेक ने भऽ गेलै जे लखन सेठ नहि, महासेठ बनि गेलाह। हुनकर लगानी-भिरानी मे इमानदारी आ लोकक अटूट विश्वास फेंटल छल। लखन इलाकाक सभ सँ धनिक आ प्रसिद्ध लोक बनि गेलाह। लखन कें चारिटा पुत्ररत्न। सीताराम पोद्दार, राधाकृष्ण पोद्दार आ सूर्यदेव पोद्दार पितेक बनाओल लीख पर चलि कऽ व्यवसायी बनलाह। मुदा चारिम आ सभ सँ छोट पुत्र बिलट पोद्दार अपन जातिक गुण-धर्म त्यागि दोकानक विपरीत पाठशाला जाए लगलाह। स्कूलक पाठ्यक्रम मे बहुतो विषय रहै मुदा बिलट कें मैथिली प्रिय विषय बनि गेलनि। बिलटक परिवारक भाषा मे भोजपुरी भाषाक खटास आ ओहिमे नुकायल लजायल, कुहरैत मैथिली भाषाक शब्द। मुदा बिलट कें शुद्ध मैथिली भाषाक मधुरता, कोमलता आ सुगंध मे गाछ-वृक्ष सँ झहरैत संगीतक आभास हुअ लगलनि आ मैथिलीए मे वार्तालाप करक शपथ लेलनि। योग्यता एवं विनम्रताक कारणे बिलट पोद्दार हाइ-स्कूल मे मैथिली भाषाक शिक्षक बनला। पहिने शिक्षकक दरमाहा मे ग्रहण लागल रहै। मुदा एकबेर शिक्षके प्रांतक मुख्यमंत्री बनलाह। हुनके कृपा सँ शिक्षकक दरमाहा पहिने ठेहुन तक, फेर गरदनि तक आ अन्तमे तऽ मूड़ी

परहक पाग कें झाँपि देलक। तकरा संगे पेंशनक सेहो जोगार भऽ गेलै। सुखक कुंजी थिक रुपैया। बिलट कें खर्च सँ अधिक आमदनी। हुनकर सुखक जिनगी बितऽ लगलनि।

बिलट पोद्दारक एकमात्र संतान हुनकर पुत्र जयनाथ पोद्दार। बिलट मैथिली भाषाक शिक्षक रहथि, तितर-बटेर नहि मारैत रहथि अथवा दैवक प्रकोप रहनि, हुनकर दुलरुआ बेटा जयनाथ स्कूल सँ छीह काटऽ लगलाह। ठेल-ठालि कऽ कहुना ओ मैट्रिक पास केलनि। तकरबाद बाँकी समय जयनाथक मटरगस्ती मे बित' लगलनि।

चुनावक डिगडिगिया पिटेलै। गामघरक तमाम निठल्ला, अनेरुआ छौंड़ा लेल स्वर्णिम अवसर आबि गेलै। चुनाव मे जयनाथ सेहो कार्यकर्त्ता बनि गेलाह। जयनाथ छलाह प्रसिद्ध पोद्दार परिवारक राजकुमार। सांसदक प्रत्याशी कें कौआक नजरि। जयनाथक अधिक मानदान हुअ लगाल। प्रत्याशी अपन मोटरगाड़ी मे जयनाथ कें संग लऽ कऽ चुनाव-प्रचार करऽ लगलाह। ओही चुनावक हुलिमालि मे सांसद प्रत्याशी जयनाथ कें आश्वासन दऽ देलथिन जे जँ ओ चुनाव मे सफल हेताह तऽ हुनका अपन पी.ए. बना लेथिन। पी.ए. भेल सरकारी ओहदा आ ओकर आवास हेतै दिल्ली शहर मे। आश्वासन पाबि जयनाथक कल्पना आकाश मे ठेकि गेलनि। ओ जी-जान सँ प्रचारक काज मे संलग्न भऽ गेला। भगवतीक असीम कृपा, सांसद प्रत्याशी चुनाव मे विजयी भेलाह। किछु समय बितलै तखन जयनाथ सांसदक देल आश्वासन कें मोन पाड़ैत अपन पिता कें दिल्ली संग जयबा लेल आग्रह करऽ लगलाह। बिलट कइएक बेर अपन पुत्रकें बुझबैक प्रयत्न केलनि जे चुनाव समयक आश्वासन बुढ़ियाक फूसि, आश्वासन के प्रतीत करब भेल मूर्खता। मुदा जयनाथक जिद्द बिलट कें पछाड़ि देलक। दुनू बाप-बेटा दिल्ली पहुँचलाह। पुछारि करैत सांसादक आरक्षित फ्लैट मे पयर रखलनि। आहिरे बा! सांसदक आरक्षित फ्लैट मे सांसद नदारत। सांसद अपन निजक मकान मे कतौ आनठाम रहैत छलाह। ओतहि बाप-बेटा कें एकरो जानकारी भेटलनि जे सम्प्रति सांसदक फ्लैट मे रहनिहार चौदह युवक सांसदक देल आश्वासनक मोताबिक हुनकर पी. ए. बनऽ लेल पछिला दस महिना सँ प्रतीक्षारत छथि। जयनाथक माथ पर वज्र खसलनि। हुनकर कल्पनाक पाँखि टूटि गेलनि। ओ बौक बनि गेलाह। आगामी दस दिन तक बाप-बेटा सांसदक दर्शन करऽ लेल दिल्ली मे

औनाइत-बौआति रहलाह मुदा नसीब संग नहि देलकनि। हारि-थाकि कऽ बाप-बेटा तत्काल मे बर्थ आरक्षित करबौलनि आ आपस दरभंगा जयबा लेल ट्रेन मे बैसलाह। आत्मग्लानि मे डूबल, उदास आ विरक्तिक अवस्था मे जयनाथ अपन पिता सँ प्रश्न केने छलथिन–हौ बाबू! तों हमरा जन्म किएक देलऽ?

एतबा जानकारी प्रस्तुत केलाक बाद बिलट कहलनि– श्रीमान्, हमर पुत्र द्वारा पूछल गेल अनर्गल प्रश्न आ यात्री-सेवक द्वारा देल गेल ओकर ठोकल जवाब बुझि लिअ हमरा लेल बुद्धिवर्धक औषधि सदृश छल। मुदा ओहि प्रश्न एवं जवाबवला प्रसंग कें स्थगित कऽ हम एखन आन तरहक विषयक अहाँ संग चर्चा करक उद्देश्य सँ एलहुँए। अहाँक मोहन जीक संग भेल सभटा वार्तालाप कें हम ध्यान सँ सुनलहुँए। मैथिली भाषा मे एकटा उपन्यासक रचना केलाक बाद अहाँकें बोध भेल जे मैथिली मे लिखल गेल कथा, कविताक ने पाठक छै आ ने छै ग्राहक। ई भेल अहाँक व्यथाक कारण। अही व्यथाक निवारण लेल अहाँ दिल्लीक यात्रा केलहुँए। श्रीमान्, अहाँ तऽ एकटा उपन्यास लिखि मैथिली जगत मे पयर रखलहुँए। मुदा हम तऽ अहि भाषा-संसार मे कंठ तक डूबल छी। बनियाँ जाति मे जन्म आ मैथिली भाषाक शिक्षक, अपच जकाँ बुझि पड़त ने। मैथिल विद्वानक बीच हम दुनू पयर पर ठाढ़ छी इएह भेल हमरा लेल बहुत पैघ गौरवक बात। स्कूल-कॉलेज मे अध्ययनक काल सँ शिक्षक बनलाक बाद अध्यापन काल तक मैथिली भाषीक उपहासक कारणे हम दुख सहैत रहलहुँए। दोख ककरा देल जाए? संगहि की दोख तकबाक प्रयोजन छै? हमर विचार मे दोख ताकब काज कें बिसरि एखन मैथिली भाषा जहिना छैक तहिना एकरा रहऽ दिऔ। अहूँ कें हम निवेदन करब जे अपन सोच मे परिवर्तन अनियौ।

बिलट की कहऽ चाहैत छलाह से हमरा बुझऽ मे आबिये ने रहल छल। हम चुप भेल बैसल रहलहुँ। बिलट कहिते रहलाह–अहाँ लेखक आ हम पाठक। लेखक मैथिली भाषा मे पाठकक रुचि कोना जगाबथि से समस्या नहि एक खास तरहक दृष्टिक माँग करैए। मध्ययुगीन समयक अनेक कथा यथा सिंघासन बत्तीसी, बैताल पचीसी, तोता-मैनाक खिस्सा आदि प्रसिद्ध खिस्सा एखनो पाठकक लेल आकर्षण रखैत अछि। किएक? प्रश्नक उत्तर मे हम एखन मध्ययुगीनक एकटा खिस्साक वाचन करब।

अहाँ शान्तिपूर्वक एकरा सुनियौ। विक्रमादित्य गाछ पर सँ मुर्दा कें उतारि कन्हा पर टँगलनि आ बिदा भेलाह। कन्हा परहक मुर्दा बेताल छल, बाजल—हयौ विक्रमादित्य! राति अन्हार, पथ दुर्गम आ मंजिल दूर अछि। रस्ताक थकान कम करऽ लेल हम एकटा खिस्सा सुनबैत छी तकरा सुनू। प्राचीन समय मे एक राज्य मे राजाक पुत्र एवं मंत्रीक पुत्र समवयस्क आ दूनू मे प्रगाढ़ मित्रता रहनि। एक समय मंत्रीपुत्र राज्यक सरहद लग सेनापतिक संग युद्ध मे भाग लेबऽ गेल रहथि। ताही बीच राजाक पुत्र अर्थात् राजकुमारक विवाहक आयोजन भेलै। मंत्री पुत्र कें संवाद पहुँचलनि आ ओहो विवाहक कार्यक्रम मे सम्मिलित भेलाह। विवाहक काज सम्पन्न भेल। विवाहक काज समाप्त भेलाक बाद राजकुमार अपन नववधूक संग आपस अपन राजधानी लेल बिदा भेलाह। राजकुमारक संग हुनक अनन्य मित्र मंत्रीपुत्र सेहो छलथिन। आपसी यात्रा मे जखन संध्या भेलै तऽ राजकुमारक बरियातक काफिला विश्राम करऽ लेल एक स्थान पर अपन खेमा खसौलक। संयोग सँ ओहीठाम मंत्रीपुत्र नववधू कें देखि लेलखिन। ओ परम सुन्दरी कन्या उएह छलीह जकरा सँ मंत्रीपुत्र प्रेम करैत रहथि। मुदा ओहि परम सुन्दरीक विवाह तऽ राजकुमार सँ भऽ गेल छलनि। हे ईश्वर! आब की हेतै? मंत्रीपुत्र अत्यधिक चिन्ता मे पड़ि गेलाह। जँ हुनकर प्रेमकथा हुनकर मित्र राजकुमारक जानकारी मे आबि जेतैक तऽ अनर्थ भऽ कऽ रहतैक। मंत्रीपुत्र एकर प्रतिकार लेल योजना कें मनहिमन विचारलनि। ओ राजकुमार सँ टहलऽ जेबाक अनुमति लऽ कऽ एककात बिदा भेलाह। कनिए हटल भगवतीक मंदिर रहै। मंदिर मे पहुँचि भगवतीक मूर्त्तिक समक्ष मंत्रीपुत्र तलवार सँ अपन मस्तक काटि लेलनि आ मरि गेलाह। बहुत समय बीति गेलै, मंत्रीपुत्र आपस नहि एलथिन। राजकुमार कें अपन मित्र लेल चिन्ता भेलनि। राजकुमार मंत्रीपुत्र कें तकैत-तकैत ओही भगवतीक मंदिर मे पहुँचलाह। अपन मित्रकें मरल देखि राजकुमार एतेक ने शोकाकुल भेला जे ओहो तलवार सँ अपन मस्तक काटि प्राण त्यागि देलनि। थोड़े आरो समय बितलै नववधू घनघोर चिन्ता मे पड़ि गेलीह। ओ अपन पति एवं पतिमित्र कें तकैत-तकैत ओहि मंदिर मे पहुँचली। अपन पति एवं मंत्रीपुत्र कें मरल पड़ल देखि ओ विचलित भऽ कऽ विचारलनि जे आब ओ जीवि कऽ की करतीह। नववधू तलवार सँ अपन मूड़ी काटक लेल उद्यत भऽ गेलीह। ताहीकाल भगवती प्रगट

भेलथिन आ नववधू कें अपन मूड़ी काटऽ सँ मना करैत कहलथिन जे ओ दुनू मित्रक मस्तक कें दुनूक धड़ सँ जोड़ि देथि तऽ दुनूक प्राण आपस आबि जेतनि। भगवतीक आदेशानुसार नववधू दुनू मित्रक मूड़ी कें धड़ सँ जोड़ि देलथिन। मुदा नववधू मूड़ी कें धड़ सँ जोड़ै काल भयंकर गलती कऽ देलथिन। ओ राजकुमारक मूड़ी कें मंत्रीपुत्रक धड़ आ मंत्रीपुत्रक मूड़ी कें राजकुमारक धड़ मे जोड़ि देलथिन। दुनू मित्र जीवित भऽ गेलाह। आब बैताल प्रश्न उपस्थित केलक–हयौ विक्रमादित्य! अहाँ राजा छी, बुद्धिमान छी। नववधूक स्वामी के हेतै तकर निर्णय करू।

एतबा बाजि कऽ बिलट चुप भऽ गेलाह। हमरो बकौर लागि गेल। राजकुमारक मूड़ी संग मंत्रीपुत्रक देह आ मंत्रीपुत्रक मूड़ी संग राजकुमारक देह आ दुनू जीवित। तखन नववधूक स्वामी के हेतै? विक्रमादित्य बैताल कें की जवाब देलथिन? हमर दुविधा कें अन्त करैत बिलट कहलनि–विक्रमादित्यक की निर्णय भेलनि। तकरा जानब एखन जरूरी नहि अछि। जरूरी अछि अहाँक व्यथाक अंत करब, अहाँक पाठकक तलास दिस अहाँक ध्यान आकृष्ट करब। अहि तरहक अनेकों कथा प्रचलित अछि जतय पछिला चौदह-पन्द्रह सय बर्ख सँ लाखो पाठक मांथ पटकैत छथि, कथा कें बारम्बार पढ़ैत छथि, विक्रमादित्य बैताल कें की जवाब देलथिन तकरा मथै छथि। अहि तरहक कथाक कथाकार की कहियो पाठक-ग्राहकक चिन्ता केलनि? कथाकार कथा लिखलनि आ समयक चक्र मे अन्तर्ध्यान भऽ गेलाह। मुदा हुनकर कथा कें एखनहुँ पाठक पंक्तिबद्ध भऽ पढ़ैत छथि आ कथाक सौरभक रसपान करैत छथि। आब बताउ, की अहाँक पाठकक अभावक चिन्ता उचित अछि?

हम सावधान भऽ गेलहुँ। आब बिलट पोद्दार सरल, सज्जनक पाट मे नहि रहथि, हुनकर मुखाकृति गंभीर एवं शब्द कठोर भऽ गेल छलनि। ओ कौड़ीकें दूर मे फेकि रहल छलाह। हम साकांक्ष भऽ कऽ हुनकर कथन कें सुनैत रहलहुँ। बिलट कहलनि–हमरा बाजब कें अहाँ अन्यथा अर्थ नहि निकालब। अहाँ उपन्यासकारक पाट मे छी, हम अहाँक आदर करैत छी। हम अपन विचार कें अहाँ लग प्रगट करक इच्छा रखैत छी। एकटा मंदिर मे पाषाणक पाया मे एकटा मूर्त्ति बनल छैक। मूर्त्ति मे कइएकटा गाय चरि रहल छै आ चरबाहा एकठाम बैसल बाँसुरी बजा रहलए। मंदिर मे आबऽबला हजारो लोक ओहि मूर्त्ति कें देखैत अछि आ ओकर प्रशंसा

करैत मन्दिर मे प्रवेश करैत अछि। मुदा एहनो लोक छथि जे मूर्त्ति कें देखिते भाव-विभोर भऽ जाइत छथि। हृदयक मूक अभिव्यक्तिक नाम थिक भाव। एहन लोकक भावनाक प्रवाह दूर तक पहुँचि जाइत छनि। ओ चरबाहाक बाँसुरी सँ सतत् प्रसारित होबऽबला संगीत सुनऽ मे निमग्न भऽ जाइत छथि। संगीत मोनक भावकें जागृत करैए। सुनल संगीतक अपन आकर्षण होइत छै। मुदा चरबाहाक बाँसुरी सँ निकलल बिन सुनल संगीत आ ओकर धुनि किछु विशिष्ट लोक कें भावसागर मे आप्लावित कऽ दैत छैक। एहने लोक जखन अपन सुन्दर भाव कें शब्द दैत छथिन तऽ हुनका कवि, कथाकार कहल जाइत छनि। कविता, कथाक सम्बन्ध कला सँ छैक। कलाक प्रगटीकरण आत्माक स्पर्श सँ होइत छैक। कबीर, मीरा, तुलसी आ कि अपन सभहक विद्यापति अपन-अपन आत्मभाव कें भाषा देलनि। की ओ सभ अपन-अपन रचना करऽकाल पाठकक चिंता केलनि।

हम चुपचाप बिलट कें देखि रहल छलहुँ। बिलटक मुखमंडल पर एक तरहक आभा पसरि गेल रहनि। हमर मोन कें तृप्ति भेटि रहल छलै। बिलट कहिते रहलाह—एक व्यक्ति मंदिर बनेबाक इच्छा केलनि। मंदिरक स्वरूप केहन होइ तकरा लेल ओ एकटा सूफी संत लग जा कऽ विचार पुछलनि। संत ओहि व्यक्तिकें कहलनि—धनक अनुसार मंदिर बनबा लिअ। मुदा मंदिरक गर्भगृह मे विग्रहक स्थान पर एकटा दर्पण राखि देबैक। दर्पण मे अहाँ अपन छविक प्रतिबिम्ब देखबै। ईश्वर तऽ प्रत्येक जीवक शरीरे मे रहैत छथि। भऽ सकैए अहाँक सौभाग्य जागि जाए। अहाँक अपन छवि मे भगवानक दर्शन भऽ जाय।

—श्रीमान्, मनुक्खक समग्र जीवन एकटा अयना थिक। अयना मे अपन छवि कें देखैत-देखैत मनुक्ख अपन आयु कें शेष कऽ लैए। मुदा किछु एहनो भाग्यशाली लोक छथि जे अयना मे अपन छविक अतिरिक्त सृष्टिकर्त्ताक अद्‌भुत सृजन देखैत छथि, विभिन्न तरहक चमत्कार कें देखैत छथि आ कखनहुकाल भगवान सँ साक्षात्कारो कऽ लैत छथि। ओहने किछु व्यक्ति कवि, कथाकार बनि जखन रचना करैत छथि तऽ हुनकर रचना साहित्य जगत मे अमूल्य धरोहर बनि जाइए। तें समस्त कवि, कथाकार हमर प्रणम्य छथि। हम अहूँ कें प्रणाम करैत छी।

बिलट अपन बर्थ पर पहुँचि कंबल सँ मुँह झाँपि सुति रहलाह। हुनकर विलाप मे हमर औझराहटि आरो पसरि गेल। पाठकक अभाव मे

कोनो भाषाक उन्नति कोना हेतइ? बिलट दृष्टांत देलनि, तर्क देलनि, अपन आराध्य मैथिली भाषाक प्रति उद्‌गार प्रगट केलनि। मुदा आजुक युग मे जखन समय तेज गति सँ दौड़ रहलैए, मनुक्खक विचार, आकांक्षा मे परिवर्त्तन भऽ गेलैए, सभ सँ पवित्र मानव जीवनक स्नेह सेहो मूल्य निर्गत कऽ कीनल जा रहलैए तकरा की मध्यकालीन युगक कथा आ कि भक्तिकालक भजनक दृष्टांत कें तर्कसंगत मानल जेतै?

बिलट पोद्दारक देल वृत्तान्त किछु समय तक हमर सोचक यंत्र मे घंटी बजबैत रहल, फेर शान्त भऽ गेल। खटपटक आवाज सुनलियै। हम औंघायल रही। क्षमा करब, निन्न पड़ि गेल रही। हाथ घड़ी मे समय देखल। तीन बाजि रहल छलै। बर्थक आगाँ मोहना ठाढ़ छल। हमरा जागल देखि ओ हमरे बर्थ पर बैसि गेल। हमहूँ उठि कऽ बैसि गेलहुँ। मोहनाक आँखिमे लाली पसरि गेल रहै। पलक बीच दुनू डिन्हो लहरि उठि रहल छलै। चिंतापुर भेल मोहना कहलक–कनिकबे पहिने अभिमन्यु मोबाइल सँ सूचना पठौलनिए। सूचना अछि जे आतंकवादी ब्लूस्टार पार्लर पर आक्रमण केलकैए। पार्लरक मालिक थोंग आ सैम, चीनक प्रशिक्षित जासूस, कमजोर नहि। मुकाबला मे कइएकटा लाश खसत तकर सम्भावना। अजगर मार्केटक मालिक माखन सिंह अजगर मांजल खेलाड़ी यद्यपि आतंकवादीक संशय सँ बाँचल छथि, मुदा सभ तरहें सावधान छथि। कखनहुँ किछु भऽ सकैए। दरभंगा दिस जायबला सभटा ट्रेन आतंकवादीक कमान मे अछि। अहू ट्रेन मे आतंकवादी सवार अछि तेहन सूचना अभिमन्यु देलनिए। ओ हमरा सभ तरहेँ सतर्क रहऽ कहलनिए।

हम मोहना कें आश्‍वस्त करैत कहलियै–तोहर तऽ बड़ी टा दल-बल अहि ट्रेन मे छौहे ने? तखन भय कथी लेल?

जवाब मे मोहना बुझा कऽ कहलक–दादा, पहिने हमर बात कें सुनि लिअ। लखनउ स्टेशन पर ए.सी. बॉगी सँ किछु यात्रीकें उतरक रहनि आ किछु यात्रीकें ट्रेन में चढ़क छलनि। हुनके सभहक कंबल बाँटऽबला काज मे हम व्यस्त रही। लखनउ स्टेशनक आगाँ अहि ट्रेन मे रेलवे कर्मचारी लेल किछुओ काज नहि रहि जाइत छैक। सभ खा-पी कऽ आराम करऽ लेल चलि जाइत अछि। पेन्ट्रीकार सेहो बंद भऽ जाइत छैक। हम जखन कंबल राखऽ लेल स्टोर मे गेल रही ठीक तखने अभिमन्युक सूचना भेटल रहए। हम दौड़ल अहि कम्पार्टमेंट मे एलहुँ। पहिने सँ जकर शंका छल से

सही भऽ गेल। अहाँक सामने बर्थ परहक राक्षस आ ओकर संगक छौंड़ा निपत्ता अछि।

हम सामने तकलहुँ। गेंडा आ ओकर छौंड़ा गायब छल। बिचला आ निचला बर्थ खाली छल। मोहना कें कहलियै–भऽ सकैए दुनू लखनउ स्टेशन पर उतरि गेल होअय।

–कथमपि नहि। दुनूक टिकट दरभंगा तक आरक्षित छलै। दुनू अही ट्रेन मे कतउ नुकायल अछि। एकर सभहक टीमक आरो लोक लखनउ स्टेशन पर अहि ट्रेन मे चढ़ल होअय तकर सम्भावना तऽ छैहे।

मोहना बजिते रहए तखने ओकर मदति करऽ लेल चेकर बाबू आबि गेल। चेकर बाबू निन्न मे मातल पूरा मुँह बाबि कऽ हाफी कऽ रहल छलाह। हुनकर स्वाँस सँ निकलबला शराबक गंध हमर नाक तक पहुँच रहल छल। चेकरबाबू कें अबितहि मोहना कहलक–हम मालती कें लऽ कऽ कोनो सुरक्षित जगह मे जा रहल छी। दादा, अहाँ चिंता नहि करू, सुति रहू। बाँकी सभटा समाचार हम दरभंगा पहुँचि कऽ देब।

मोहनाक दुनियाँ कें मुट्ठी मे करक कौशल आ हमर थौआ भेल वयस मे निन्नक अनिवार्यता, हम सूति रहलहुँ।

एकाएक निन्न टुटल। बहुत पहिने ट्रेन दरभंगा पहुँचि गेल रहए। कम्पार्टमेंट मे एकोटा यात्री नहि, सुन्न छल। कंबल-चद्दरि कें बर्थ पर छोड़ि, सुटकेश कें हाथ मे नेने हाँइ-हाँइ हम ट्रेन सँ नीचा उतरलहुँ। प्लेटफॉर्म सँ बाहर जेबाक फाटक लग तैनात रेल कर्मचारी कें अपन टिकट सुपुर्द करैत हम स्टेशन सँ बाहर एलहुँ। ठीक सामने पाथरक मूर्त्ति बनल देवचंद ठाढ़ छलाह। दूरगामी स्थान सँ आपस अपन जन्मभूमि पर पयर रखलाक बाद मोन कें जे अपार हर्ष होइत छैक तकरा व्यक्त करैत हम हुनका पुछलियनि–आह, देवचंद बाबू! कहू एतुका खबरि?

देवचंद बुत बनल ठाढ़े रहलाह। हम हुनकर आँखि दिस तकलहुँ। हुनकर नोर सँ भीजल आँखि सँ पीड़ा झहरि रहल छलनि। की भेलनि देवचंद कें? एकबैग देवचंद हमरा भरिपाँज मे पकड़ि लेलनि आ ठोहि पाड़िकऽ कानऽ लगलाह। लगपासक सभटा लोक जमा भऽ गेल। देवचंद कनिते रहलाह। थोड़े कालक बाद जखन हुनक दुख नोर बनि नहि गेलनि, हृदय मे जमकल पीड़ा कम भेलनि, ओ हमर हाथ पकड़ि एककात मे लऽ जा कऽ कहलनि–गुलबिया कें मुसीबत मे मदति करक वचन हम देने

छियैक। मुदा कहिओ हमर डेरा पर नहि आओत तकर एकरारनामा ओ केने छलि। तकरबादो काल्हि ओ हमर डेरा पर पहुँचि गेलि। संयोग सँ पत्नी डेरा नहि छलीह। गुलबिया सभटा बात कहलक। ओकर घरवला चरणीयाँ कें अधिक निशाक सेवनक चलते छातीक कलेजी जड़ि गेलै आ ओ दर्द मे अहुरिया कटैत डाक्टर लग पहुँचल। डाक्टर देखलकै, जाँच केलकै आ दवाइक पूर्जा लिखि देलकै। चरणीयाँक रोगक उपचार बड़ महग ओकर बुत्ता सँ अधिक। ओकर यार बसरुद्दीन विचार देलकै। चरणीयाँ अपन बेटी मालती कें पच्चीस हजार रुपैया मे बेचि देलक। सुतली राति मे बसरुद्दीनक गुंडा मालती कें बलजोरी उठा कऽ लऽ गेलै। गुलबिया अपन बेटा मोहना कें खबरि पठेलक। मोहना मुम्बइ मे छल। ओ दिल्ली पहुँचि पता नहि कोन तरहक जुगूत भिरौलक, मालती कें आतंकवादीक चंगुल सँ मुक्त करा लेलक। एखन जे दिल्ली सँ ट्रेन एलैए अही सँ मोहना आ मालती दरभंगा आबऽ लेल बिदा भेल छल। गुलबिया हमरा कहलक जे स्टेशन जा कऽ हम मोहना आ मालती कें अपन घर जेबा सँ मना कऽ दियै। ओ दुनू कतौ आनठाम नुका कऽ रहए। किएक तऽ दुनू कें अपन घर पहुँचिते बसरुद्दीन फेर आफद पसारि देतै। ताही मोताबिक मोहना कें चेतबै लेल हम एखन स्टेशन पर आयल रही।

एतबा बाजि कऽ देवचंद फेर सँ फफकि-फफकि कऽ कानऽ लगलाह। हमर मोन सशंकित भऽ गेल। माथ मे घुरमा उठि गेल। चिचिआइत देवचंद कें हम पुछलियनि—ट्रेन तऽ आबि गेलैए। की भेलैए मोहना आ मालती कें?

टुटल-भांगल स्वर मे देवचंद जवाब देलनि—मालतीक अतापता नहि छै आ मोहनाक मृत शरीर प्लेटफार्म पर पड़ल छैक।

माथ सुन्न भऽ गेल। कान मे सनसनाहटि भरि गेल। पेट मे बाम कात दर्द होबऽ लागल। बुझि पड़ल जे शरीर सँ प्राण निकलि रहलए। हम धम सँ नीचा बैसि गेलहुँ। मुदा तत्काले जेना कतहु सँ थोड़ेक सक आपस आयल। हम दौड़ैत प्लेटफार्म पर पहुँचलहुँ। एकठाम लोकक भीड़ देखलियै। दौड़ल ओतए पहुँचलहुँ। मोहना मरल पड़ल छल। स्टेशन मास्टर श्रीयुत् गांगुली मोहनाक सिरमा मे बैसल हिचुकि रहल छलाह। जिनगीक मर्मस्पर्शी सफर! ई केहन सफर? मोहना तऽ जिनगी जिबै सँ पहिनहि बिदा भऽ गेल। ई किएक भेलै हौ भगवान?

जिनगीक अयना मे हम अपन मुखौटा देखऽ लगलहुँ। मैथिली भाषाक कथा-कविताक पाठक ताकऽ लेल बिदा भेल रही। एखन मोहनाक मृत शरीर लग ठाढ़ रही। शून्य सँ चलि कऽ अन्तिम शून्य लग पहुँचि गेल रही।

एकाएक आकाश तरतरेलै। बिजलौका छिटकलै आ तेज हवाक संग बर्खा शुरू भऽ गेलै। सभटा लोक पड़ा गेल। हम, देवचंद आ गांगुली ओतए रहि गेलहुँ। बर्खाक टपटप बून्न मोहनाक चेहरा कें धो रहल छलै। अन्तिम भेट मे मोहना कहने छल–''दादा, अहाँ चिंता नहि करू, सूति रहू। बाँकी सभटा समाचार हम दरभंगा पहुँचि कऽ देब।'' मोहनाक मुँह उघार रहै, आँखि खुजल रहै। हमरा लागल जेना मोहनाक ठोर मे कंपन भऽ रहलैए। एहन सन बुझायल जेना मोहना किछु कहि रहलए–दादा, हम अहाँक दुष्ट संसार सँ मजबूर भऽ कऽ दूर, बहुत दूर जा रहल छी। आब हमरा सँ अहाँ कें कहियो भेंट नहि हैत।

हम अपलक मोहना कें देखैत रहि गेलहुँ। बाहर सँ मद्धिम स्वर मे एगो गीतक पाँति भासल अबैत छलै–''जिन्दगी का सफर, है ये कैसा सफर? कोइ समझा नहीं, कोइ जाना नहीं।''